लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–12

अफ्रीका की लोक कथाऐं

अलेसान्ड्रो सैनी

1998

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

जून 2019

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series–12
Book Title: Africa Ki Lok Kathayen (African Folktales)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales /index-folktales.htm

Map of Africa
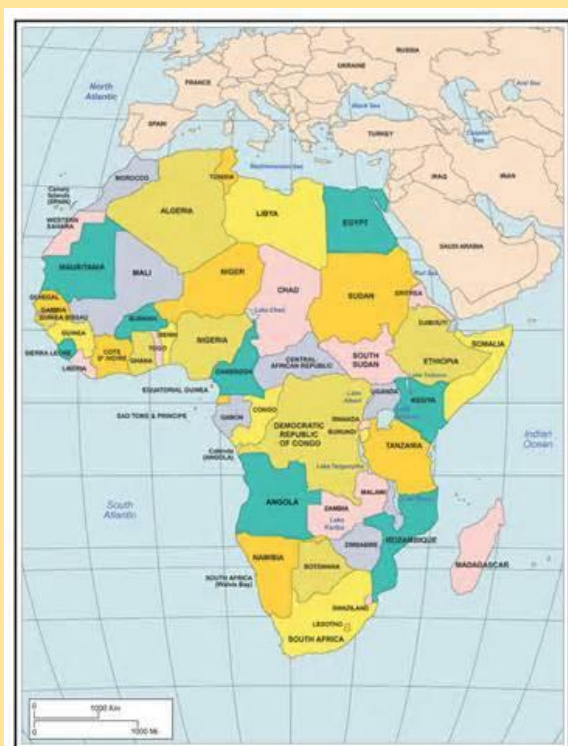
विंडसर¸ कैनेडा

जून 2019

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5
अफ्रीका की लोक कथाऐं 7
1 सबसे बड़ा योद्धा 9
2 सूरज और चॉद की बेटी 18
3 ग्यारह नम्बर का बच्चा 36
4 बिना दॉत की सुन्दर लड़की 54
5 एक अच्छा काम दूसरे अच्छे काम... 63
6 कुत्ता बिल्ला कबूतर और जादू की अॅगूठी 72
7 मारने वाली डंडी 91
8 नदी की आत्मा 101
9 सोने का बच्चा और चॉदी का बच्चा 114
10 कर्जा कैसे उतारा जाये 121
11 तारे कैसे बने? 129
12 बड़े खरगोश की गन्दी चालें 142
13 सौ जानवर 166
14 तीन अजीब गॉव 180
15 चील और बच्चा 190
16 ऐनगोम्वा और उसकी टोकरी 195
17 कछुए के खोल पर दरारें कैसे 205
18 कृतज्ञ सॉप 210
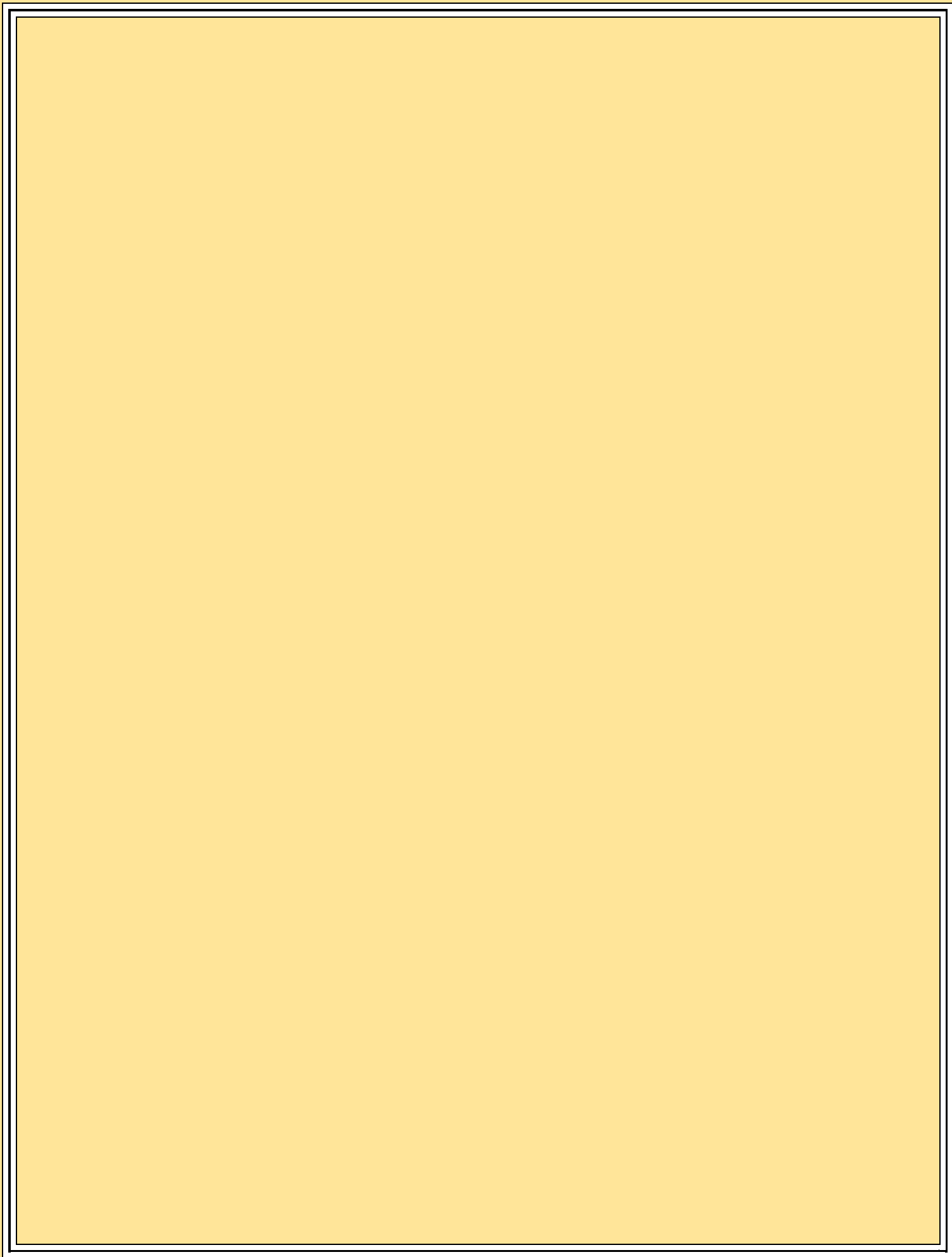
सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र करके 2000 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रारपरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
जनवरी **2019**

अफ्रीका की लोक कथाऐं

एशिया के बाद अफ्रीका ही संसार में दूसरे नम्बर का महाद्वीप है जनसंख्या में भी और क्षेत्रफल में भी। नाइजीरिया अफ्रीका के पश्चिमी तट पर दक्षिण की ओर स्थित है। यह अफ्रीका का सबसे ज़्यादा जनसंख्या वाला देश है। इसकी जनसंख्या इस समय लगभग 200 मिलियन है। इसकी जनता भी बहुत भिन्न प्रकार की है।

अफ्रीका में केवल 2–4 देशों का ही साहित्य प्रकाशित रूप में मिलता है जैसे नाइजीरिया, घाना, मिश्र, दक्षिण अफ्रीका, तनज़ानिया आदि इसलिये जहॉ भी हमें अफ्रीका की लोक कथाओं की पुस्तकें दिखायी देती हैं हम उनका हिन्दी अनुवाद कर लेते हैं। इससे पहले हमने अफ्रीका के तनज़ानिया देश के ज़ंज़ीबार द्वीप की लोक कथाओं की एक पुस्तक प्रकाशित की थी।[2] अफ्रीका की लोक कथाओं की एक पुस्तक हमने और प्रकाशित की थी जो दक्षिण अफ्रीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति नेलसन मन्डेला की सम्पादित की हुई थी।[3] उसके बाद हमने तीसरी पुस्तक प्रकाशित की थी नाइजीरिया की योरुबा लोक कथाओं की फूजा अबायेमी की लिखी हुई "चौदह सौ कौड़ियॉ... ।"[4]

आशा है ये तीनों पुस्तकें आप सबको बहुत पसन्द आयी होगी। तो लीजिये अब प्रस्तुत है आपके हाथों में अफ्रीका की लोक कथाओं की चौथी पुस्तक "अफ्रीका की लोक कथाऐं"[5]। आशा है कि यह पुस्तक भी आपको उतनी ही पसन्द आयेगी जितनी इससे पहले वाली तीन पुस्तकें आयी थीं।

आशा है कि ये लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें आपको हिन्दी में पढ़ कर बहुत अच्छा लगेगा। तो लीजिये पढ़िये अफ्रीका की ये लोक कथाऐं अब हिन्दी में।

---

[2] Bateman, George W. "Folktales of Zanzibar". Chicago: AC McClurg. 1901. 10 tales.

[3] Mandela, Nelson. "Nelson Mandela's African Favorite Folktales". WW Norton Company. 2002. 32 tales.

[4] Fuja, Abayomi. "Fourteen Hundred Cowries: traditional stories of the Yoruba". Ibadan: OUP. 1962. 31 tales.
Fuja, Abayomi. "Fourteen Hundred Cowries and Other African Tales." NY: Lothrop, Lee and Shepard. 1971. 1st American edition.

[5] Ceni, Alessandro. "African Folktales". Barnes & Nobles. 1998. 128 p. 18 tales.
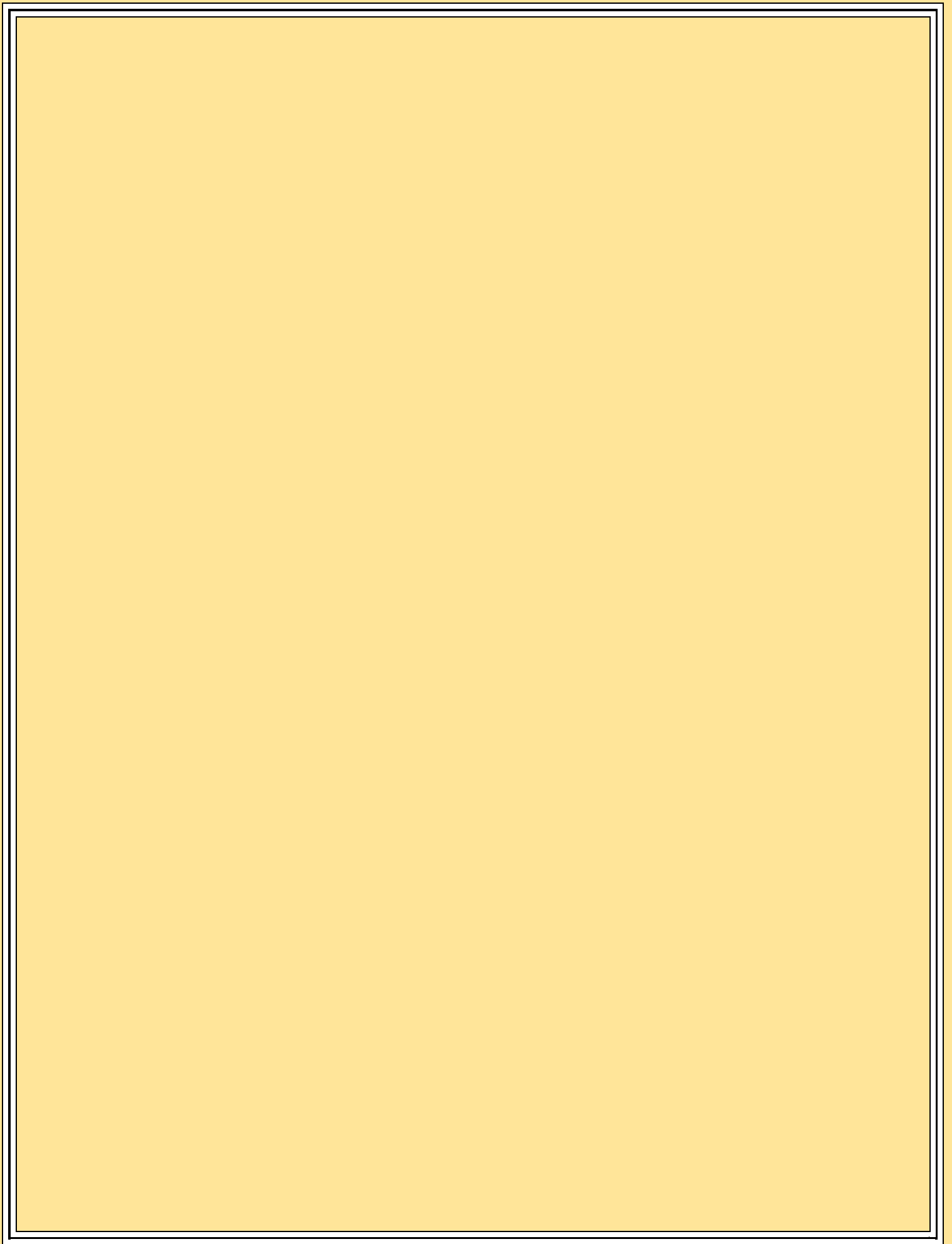
1 सबसे बड़ा योद्धा[6]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के केन्या देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इत्तफाक से यह कथा खरगोश की अक्लमन्दी की नहीं बल्कि उसके डरपोक होने की है।

एक बार एक कैटरपिलर[7] एक बड़े खरगोश[8] का घर देखने के लिये उसके घर में घुस गया। यह देख कर कि वहाँ कोई भी नहीं है वह उसके घर में अन्दर की तरफ चलता चला गया और एक सबसे अँधेरी और सुरक्षित जगह में जा कर बैठ गया।

कुछ देर बाद ही बड़ा खरगोश अपने घर वापस आया तो उसने देखा कि उसके घर के दरवाजे पर छोटे छोटे पैरों के निशान बने हैं तो उसने सोचा कि ये इतने छोटे छोटे पैरों के निशान किसके हो सकते हैं।

काफी देर सोचने पर भी वह कुछ नहीं सोच सका कि वे इतने छोटे छोटे पैरों के निशान किसके हो सकते हैं तो वह ज़ोर से बोला — "मेरे घर में कौन है?"

[6] The Greatest Warrior of All (Tale No 1) – a folktale from Masai Tribe, Kenya, Eastern Africa.
[7] Caterpillar is the common name for the larvae of the butterflies or moths.
[8] Translated for the word "Hare". Hare is a little bit bigger than the rabbit – see its picture above.

कैटरपिलर भी जो अपनी बहुत शेखी बघारता था ज़ोर से बोला — "मैं हूँ सबसे बड़ा लड़ने वाला। मैं तो राइनोसिरोस[9] को भी कुचल सकता हूँ। और हाथी तक का मॉस निकाल सकता हूँ। मैं वाकई बहुत ही भयानक हूँ।"

यह सुन कर बड़ा खरगोश तो डर के मारे कॉप गया और वहॉ से भाग गया। उसने सोचा — "इस पवित्र जंगल की कसम मैं इसके लिये क्या करूँ जो अपने आपको यह कहता है कि वह सबसे बड़ा लड़ने वाला है।

जब वह भाग रहा था तो रास्ते में उसको एक गीदड़ मिला। उसने गीदड़ से पूछा — "गीदड़ भाई, क्या तुम मेरी सहायता करोगे?"

गीदड़ बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं, अगर कर सका तो।"

"तो चलो मेरे घर चलो और वहॉ चल कर उससे मिलो और बात करो जो मेरे घर में बैठा है।"

गीदड़ राजी हो गया और बड़े खरगोश के साथ उसके घर चल दिया। जब वे दोनों बड़े खरगोश के घर के दरवाजे पर पहुँचे तो गीदड़ अपनी सबसे ऊँची आवाज में बोला — "वह कौन है जो मेरे दोस्त बड़े खरगोश के घर में छिपा बैठा है?"

[9] Rhinoceros – see its picture above

कैटरपिलर यह सुन कर बिल्कुल भी नहीं डरा बल्कि निडर हो कर बोला — "मैं छिपा हुआ नहीं हूँ। मैं तो सबसे बड़ा लड़ने वाला हूँ। मैं तो राइनोसिरोस को भी कुचल सकता हूँ। और हाथी तक का माँस निकाल सकता हूँ। मैं वाकई बहुत ही भयानक हूँ।"

यह सुन कर गीदड़ का साहस टूट गया और वह बड़े खरगोश से माफी माँगते हुए यह कह कर वहाँ से चला गया कि अफसोस मैं तो उस बड़े लड़ने वाले के सामने बहुत छोटा हूँ और उसके सामने कुछ नहीं कर सकता।

बड़ा खरगोश भी नाउम्मीद हो कर आगे बढ़ा। अब वह चीते[10] की खोज में था। चीता उसके एक पेड़ के नीचे बैठा मिल गया'

उसने जा कर उससे भी अपनी परेशानी कही कि क्या वह उसके साथ उसके घर चल कर इस बात का पता लगा सकता है कि उसके घर में कौन छिपा बैठा है?

चीता भी तुरन्त ही तैयार हो गया और जब वह उस बड़े खरगोश के घर के दरवाजे पर आया तो वह भी ज़ोर से बोला — "वह कौन है जो मेरे दोस्त बड़े खरगोश के घर में छिपा बैठा है?"

और एक बार फिर कैटरपिलर निडर हो कर बोला — "मैं छिपा हुआ नहीं हूँ। मैं तो सबसे बड़ा लड़ने वाला हूँ। मैं तो

[10] Translated for the word "Leopard" – see its picture above.

राइनोसिरोस को भी कुचल सकता हूँ। और हाथी तक का माँस निकाल सकता हूँ। मैं वाकई बहुत ही भयानक हूँ।"

यह सुन कर चीता कुछ परेशान हो गया। उसने बड़े खरगोश की तरफ देखा और बोला — "मेरे प्यारे बड़े खरगोश। अगर यह जानवर यह सब कुछ कर सकता है तो मुझे नहीं पता कि इतना बड़ा चीता होते हुए भी मैं ऐसे जानवर से अपनी जान कैसे बचा सकता हूँ।

मुझे बड़ा दुख है कि मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सका। अच्छा तो यह है कि मैं ही यहाँ से चला जाऊँ।" और वह चला गया।

बड़ा खरगोश सोचता रहा सोचता रहा कि वह अब क्या करे फिर आखीर में उसने यह निश्चय किया कि जिन जिन जानवरों के नाम उस सबसे बड़े लड़ने वाले जानवर ने लिये थे उन्हीं जानवरों के पास चला जाये।

सो वह पहले राइनोसिरोस के पास गया और उसको जा कर सारी कहानी बतायी। बह बड़ा जानवर जिसको अपनी ताकत और अपने सींग पर बड़ा नाज़ था बड़े खरगोश के पीछे पीछे उसके घर चल दिया।

वहाँ जा कर वह भी अपनी भयानक आवाज में चिल्लाया — "वह कौन है जो मेरे दोस्त बड़े खरगोश के घर में छिपा बैठा है?"

अबकी बार कैटरपिलर ने ऐसी आवाज में उसको जवाब दिया जो उस बड़े से छेद में बहुत ज़ोर से गूॅज गयी। इस ज़ोर की गूॅज से ऐसा लगा जैसे कि वह आवाज किसी बड़े साइज़ के आदमी[11] की आवाज हो।

वह बोला — "मैं छिपा हुआ नहीं हूॅ। अगर तुम्हारी हिम्मत हो तो आओ पर ओ राइनोसिरोस, तुम यह मत भूलना कि मैं सबसे बड़ा लड़ने वाला हूॅ। मैं तो राइनोसिरोस को भी कुचल सकता हूॅ।"

राइनोसिरोस की तो यह सुन कर बोलती बन्द हो गयी। उसने सोचा कि अब तो सब कुछ खत्म हो गया।

सो वह बड़े खरगोश से बोला — "उसने कहा है कि वह राइनोसिरोस को मिट्टी में मसल देगा। हुंह। हालॉकि मुझे लगता है कि वह शेखी बघार रहा है, पर फिर भी... अच्छा है कि हम इसे यहीं छोड़ दें। प्यारे बड़े खरगोश, अब तुम अपना ख्याल रखना मैं चलता हूॅ।" कह कर वह वहॉ से चला गया।

बड़ा खरगोश फिर अकेला रह गया। अब वह हाथी को देखने चला।

जल्दी ही उसे हाथी भी मिल गया तो वह उससे बोला — "ओ जंगल के राजा, शेर के नम्बर दो हाथी, मेरी सहायता करो। मेरे घर में एक बहुत ही भयानक लड़ने वाला बैठा है जिसने राइनोसिरोस को

[11] Translated for the word "Giant".

बहुत बुरा भला कहा है और वह तो आपका भी मॉस निकालने की बात करता है।"

हाथी ने अपनी बड़ी सूँड़ से अपना सिर खुजलाया, अपने बड़े बड़े कान इधर उधर हिलाये और अपना शरीर हिलाया और फिर अपना गला साफ करके बड़े खरगोश से बोला — "प्यारे बड़े खरगोश, मैं तुम्हारे इस बड़े लड़ने वाले से जरूर बात करता पर इस समय मेरा नहाने का समय हो गया है और मैं उस समय को अपने हाथ से जाने नहीं देना चाहता।

इसके अलावा तुम मुझे कल भी नहीं ढूँढना क्योंकि मैं कल ज़रा बाहर जा हा हूँ। आ कर मैं तुमसे फिर जल्दी ही मिलता हूँ।" कह कर वह मुड़ा और कूद कर घने जंगल में अपने रास्ते चला गया।

अब बड़ा खरगोश बिल्कुल ही नाउम्मीद हो चुका था। अब वह क्या करे। वह वहीं घास पर बैठ गया और सुबकने लगा।

कुछ देर बाद वहाँ से एक मेंढक गुजरा तो बड़े खरगोश को सुबकते देख कर वहाँ रुक गया और उससे पूछा — "बड़े खरगोश भाई, तुम इतना क्यों सुबक रहे हो? तुम्हें क्या हो गया है? क्या बात है कुछ बोलो तो।"

बड़ा खरगोश सुबकते हुए बोला — "काश तुम जान सकते मेंढक भाई। मेरे घर में एक सबसे बड़ा लड़ने वाला आ कर बैठ गया है। वह बहुत ही भयानक लड़ने वाला है।

ज़रा सोचो कि उसने गीदड़ चीता राइनोसिरोस और हाथी जैसे बड़े बड़े जानवरों को भी बिना मेरे घर में से बाहर निकले भगा दिया है। मैं अब इस हालत में हूँ।”

मेंढक बोला — “यह तो बड़ी अजीब सी बात है। वह तो लड़ने वाला है। वह राइनोसिरोस को भी कुचल सकता है और हाथी का भी मॉस निकाल सकता है तो वह तो कोई मजाक नहीं कर रहा। इसको तो मैं जरूर देखूँगा कि वह ऐसा गन्दा जानवर कौन सा है।”

कह कर वह तुरन्त ही बड़े बड़े कदम उठाता हुआ बड़े खरगोश के घर की तरफ चल दिया। जब वह मेंढक बड़े खरगोश के घर के पास पहुँचा तो वह उसके घर के दरवाजे में खड़ा हो कर चिल्लाया — “वह कौन है जो मेरे दोस्त बड़े खरगोश के घर में छिपा बैठा है?”

गीदड़, चीता और राइनोसिरोस को भगाते भगाते अब कैटरपिलर का सिर कुछ सूज गया था फिर भी वह अपनी ज़ोर की आवाज में निडर हो कर बोला — “मैं छिपा हुआ नहीं हूँ। मैं सबसे बड़ा लड़ने वाला हूँ।

मैंने घास के मैदान ओर जंगल के सारे जानवरों को भगा दिया है। मैंने तो राइनोसिरोस को भी कुचल दिया और हाथी का भी मॉस निकाल लिया।”

मेंढक ने जिसको हर एक जानता है कि जितना ही वह बदसूरत होता है उतना ही वह बहादुर और अक्लमन्द भी है कैटरपिलर के इन शब्दों पर ध्यान नहीं दिया और एक ही कूद में बड़े खरगोश के घर में घुस गया।

वह उस ॲधेरे में यह कहते हुए आगे बढ़ता गया "कहाॅ हो तुम ओ सबसे बड़े लड़ने वाले। मुझे आज बहुत खुशी है कि आज मैं अपने जोड़ीदार से मिलने आ रहा हूॅ।"

और फिर कैटरपिलर ने पास आते देखा मेंढक को, उसके बड़े से हरे सिर को, उसकी पीली ऑखों को। इस सबको देख कर तो कैटरपिलर डर गया।

बड़े खरगोश के घर में पीछे के एक कोने में को छिपते हुए वह कमजोर सी आवाज में बोला — "मैं तो बेचारा छोटा सा कैटरपिलर हूॅ।"

यह सुन कर मेंढक मुस्कुरा दिया। उसने कैटरपिलर को उठाया और बाहर ले गया। बड़ा खरगोश तो उस छोटे से कीड़े को देख कर बहुत ही शरमिन्दा हुआ। पर वह जल्दी ही यह सोच कर खुश भी हो गया कि जिन जानवरों के पास वह सहायता के लिये गया था उन्होंने उसके साथ किस तरह का बरताव किया था – वे बड़े थे, ताकतवर थे, पर सब डरे हुए थे।

बड़ा खरगोश बोला — "ओ मेरे दोस्त मेंढक तुमको बहुत बहुत धन्यवाद। तुमको जिसको हर जानवर बदसूरत और छोटा और यह

कह कर चिढ़ाता है कि तुम अपनी रक्षा अपने आप नहीं कर सकते वही आज सबसे बहादुर और चतुर जानवर निकला। मैं तुम्हारी यह बात आज सब जानवरों में फैला दूँगा।"

जब बड़ा खरगोश यह सब कह रहा था तो मैदानों और जंगल के सारे जानवर बड़े खरगोश के घर के पास आ गये और आ कर बहुत हँसे जब उनको पता चला कि बड़े खरगोश के घर में क्या हुआ था।

2 सूरज और चॉद की बेटी[12]

यह बहुत दिनों की बात है कि अफ्रीका के अंगोला देश में एक बहुत ही सुन्दर और बहादुर नौजवान रहता था जिसका नाम था किया–तुम्बा ऐनडाला[13]। वह एक सरदार का बेटा था और उस सरदार का नाम था किमानौऐज़े[14]।

गॉव की सारी लड़कियॉ उस नौजवान से शादी करना चाहती थीं। उसका पिता किमानौऐज़े भी चाहता था कि उसके बेटे की शादी हो जाये सो वह बार बार किया से इस बारे में बात करता।

"मेरे बेटे, अब समय आ गया है कि तुम शादी कर लो और अपना परिवार बनाओ। गॉव में बहुत सारी लड़कियॉ हैं। तुम उनको देखो और जो तुमको सबसे अच्छी लगे उससे शादी कर लो।"

पर हर बार किया कोई न कोई बहाना बना कर पिता की बात को टाल जाता या फिर अनसुना कर देता। आखिर एक दिन अपने पिता के लगातार कहने पर वह बोला — "पिता जी, मुझे इस धरती की किसी लड़की से शादी नहीं करनी।"

---

[12] The Daughter of the Sun and the Moon (Tale No 2) – a folktale from Mbundu Tribe, Angola, Central Africa.

[13] Kia-Tumba Ndala – name of the young man

[14] Kimanaueze – name of the Chief.

किमानौऐंज़े को लगा कि शायद उसकी समझ में नहीं आया कि उसके बेटे ने क्या कहा सो उसने उससे फिर कहा — "तुमने क्या कहा? तुम किससे शादी करना चाहते हो?"

किया कुछ नाराजी से बोला — "मैंने कहा न कि मुझे इस धरती की किसी लड़की से शादी नहीं करनी।"

यह सुन कर उसका पिता तो आश्चर्य में पड़ गया और उससे पूछा — "तब तुम किससे शादी करना चाहते हो बेटा?"

"मुझे अगर शादी करनी ही पड़ी तो मैं भगवान सूरज और रानी चॉद की बेटी से ही शादी करूँगा।"

पिता बोला — "मेरे बेटे ज़रा ठीक से सोचो। हम लोग सूरज और चॉद की बेटी का हाथ मॉगने के लिये स्वर्ग कैसे जा सकते हैं?"

"देखेंगे पिता जी। पर यह बात पक्की है कि मैं किसी और से शादी नहीं करूँगा।"

सारे गॉव ने जब यह सुना तो उन सबको यही लगा कि किसी ने उसके ऊपर जादू कर दिया है। इस जादू से उसकी अक्ल काम नहीं कर रही। यहॉ तक कि उसके पिता ने भी उससे शादी के बारे में बात करना बन्द कर दिया।

पर किया–तुम्बा ने पक्का इरादा कर रखा था कि वह अगर शादी करेगा तो केवल भगवान सूरज और रानी चॉद की बेटी से ही करेगा और किसी से नहीं।

सो उसने भगवान सूरज को एक चिट्ठी लिखी जिसमें उसने उसकी बेटी का हाथ माँगा।

हाथ में वह चिट्ठी लिये हुए वह एक हिरन[15] के पास गया ताकि वह उसकी चिट्ठी सूरज के पास स्वर्ग ले जा सके पर हिरन ने अपना सिर ना में हिलाया और कहा — "मुझे अफसोस है कि मैं इतनी दूर नहीं जा सकता।"

किया फिर एक दूसरे हिरन[16] के पास गया पर उसने भी उसको मना कर दिया — "अफसोस मैं इतनी दूर ऊपर स्वर्ग में नहीं जा सकती।"

उसके बाद किया–तुम्बा एक बाज़[17] के पास गया तो अपने पर चौड़े चौड़े फैला कर उसने कहा — "मैं उतनी दूर तक उड़ तो सकता हूँ पर मैं भगवान सूरज तक नहीं जा सकता।"

अन्त में वह एक गिद्ध के पास पहुँचा पर गिद्ध ने भी ऐसा ही कुछ कहा — "मैं आधी दूर तक तो जा सकता हूँ पर पूरी तरह से वहाँ जाना यानी स्वर्ग में अन्दर जाना, नहीं नहीं मैं वहाँ तक नहीं जा सकता।"

---

[15] Translated for the word "Deer"

[16] Translated for the word "Antelope" – see its picture above.

[17] Translated for the word "Hawk" – see its picture above

इतने सारे जानवरों से ना सुनने के बाद किया काफी नाउम्मीद हो गया। उसको लगा कि यह शादी तो मुमकिन ही नहीं है सो उसने वह चिट्ठी एक बक्से में बन्द कर दी और उसके बारे न सोचने की कोशिश की।

उधर भगवान सूरज और रानी चॉद की दासियॉ धरती पर किया–तुम्बा के गॉव के पास वाले कुॅए से पानी भरने के लिये आया करती थीं और उस मेंढक ने जो उस कुॅए के पास ही रहता था उनको ऐसा करते कई बार देख लिया था।

उस मेंढक को किया की इच्छा का पता था। इसके अलावा वह किया को यह भी दिखाना चाहता था कि वह उसके लिये कितने काम का जानवर था सो उसे दिमाग में एक तरकीब आयी।

एक दिन वह किया के पास गया और बोला — “मुझे मालूम है कि तुमने अपनी शादी के लिये एक चिट्ठी लिखी है।”

किया बोला — “हॉ लिखी है। पर वह तो ऐसी ही है जैसे मैंने उसको लिखा ही न हो। मुझे कोई ऐसा नहीं मिला जो उसको ऊपर स्वर्ग में ले जा सके।”

मेंढक बोला — “तुम उस चिट्ठी को मुझे दे दो मैं देखता हूॅ।”

किया कुछ शक के साथ बोला — “बेवकूफ मत बनो। क्योंकि जब उसको बड़े बड़े परों वाली चिड़ियें नहीं ले जा सकीं तो तुम उसे कैसे ले कर जाओगे?”

मेंढक बोला — “मेरा विश्वास करो मुझे मालूम है कि मैं क्या कह रहा हूँ।”

किया–तुम्बा ने कुछ देर सोचा पर फिर यह सोच कर कि इसमें उसका कोई नुकसान नहीं है उसने वह चिट्ठी ला कर मेंढक को दे दी और कहा — “याद रखना कि अगर तुम अपने इस काम में कामयाब नहीं हुए तो तुमको इसके लिये पछताना पड़ेगा।”

मेंढक ने इसकी कुछ ज्यादा चिन्ता नहीं की और वह उस कुँए की तरफ चला गया जहाँ भगवान सूरज और रानी चाँद की दासियाँ पानी भरने आया करती थीं। उसने वह चिट्ठी अपने मुँह में रखी और उसको मुँह में रख कर वह कुँए के पानी में कूद गया और जा कर वहाँ बिल्कुल चुपचाप बैठ गया।

कुछ देर बाद ही वहाँ भगवान सूरज और रानी चाँद की दासियाँ पानी भरने के लिये आयीं। वहाँ आ कर उन्होंने पानी भरने के लिये अपने अपने घड़े पानी में डुबोये और पानी भर कर उनको ऊपर खींच लिया।

पलक झपकते ही वे पानी ले कर स्वर्ग की तरफ उड़ चलीं। मेंढक भी चुपचाप एक घड़े में छिप कर बैठ गया और उनके पानी के साथ साथ उनके घड़े में बैठ कर स्वर्ग चला गया।

जब वे दासियाँ भगवान सूरज के घर पहुँच गयीं तो उन्होंने पानी के घड़े उनकी जगह पर रख दिये और वहाँ से चली गयीं।

एक बार जब मेंढक सूरज के घर में पहुँच गया तो वह पानी के घड़े से बाहर कूद गया।

उसके बाद वह कमरे के बीच में रखी एक ऊँची सी मेज पर कूद गया। वहाँ उसने किया की चिट्ठी निकाल कर मेज पर रखी और तुरन्त ही एक अँधेरे कोने में जा कर छिप कर बैठ गया।

कुछ देर बाद भगवान सूरज वहाँ पानी पीने आये तो उन्होंने मेज पर रखी एक चिट्ठी देखी तो उन्होंने अपनी दासियों को बुलाया और वह चिट्ठी दिखाते हुए उनसे पूछा — "और यह? यह कहाँ से आयी?"

वे डर कर बोलीं — "मालिक हमें नहीं पता। हमें सचमुच ही नहीं पता।"

भगवान सूरज ने कागज काटने वाला एक चाकू उठाया और उस चिट्ठी को खोल कर पढ़ा — "मैं किया–तुम्बा ऐनडाला, किमानौऐज़े का बेटा, धरती का एक आदमी, भगवान सूरज और रानी चाँद की बेटी से शादी करना चाहता हूँ।"

भगवान सूरज मुस्कुराये और सोचा — "ज़रा इन धरती के लोगों के स्वर्ग में आने के विचार तो देखो। यह किया तो बहुत ही बहादुर है। पर यह सन्देश लाया कौन होगा।"

भगवान सूरज ने कुछ कहा नहीं और वह चिट्ठी अपनी जेब में रख कर कमरे से बाहर चले गये।

इस बीच उनकी दासियाँ और पानी लाने के लिये कुँए पर वापस जाने वाली थीं कि कमरे में छिपा हुआ मेंढक उनके एक घड़े में छिप कर बैठ गया और इस तरह फिर धरती पर वापस पहुँच गया। तुरन्त ही वह किया के गाँव की तरफ चल दिया।

वह किया के घर पहुँचा और जा कर उसका दरवाजा खटखटाया। किया ने दरवाजा खोला। मेंढक को सामने खड़ा देख कर उसने उससे पूछा — "प्रिय मेंढक, क्या तुम मुझसे यह कहने आये हो कि तुमने मेरी चिट्ठी भगवान सूरज तक पहुँचा दी है या फिर मेरी मार खाने के लिये आये हो?"

मेंढक बोला — "मैंने तुम्हारी चिट्ठी भगवान सूरज तक पहुँचा दी है इसलिये तुम अपने मुझे मारने की तकलीफ को बचा कर रख सकते हो।"

किया ने पूछा — "अगर ऐसा है तो फिर तुम्हारे पास उसका कोई जवाब क्यों नहीं है?"

मेंढक बोला — "यह तो मुझे नहीं पता पर मुझे यह पता है कि तुम्हारी चिट्ठी सही आदमी के हाथ में पहुँच गयी है और उसने उसको पढ़ भी लिया है। अगर तुम चाहते हो कि तुमको उसका जवाब मिले तो तुम एक चिट्ठी और लिख सकते हो जिसमें तुम भगवान सूरज को जवाब देने के लिये कहो। तुम्हारे लिये मैं उसको भी स्वर्ग ले जाने के तैयार हूँ।"

किया–तुम्बा एक पल के लिये तो हिचकिचाया क्योंकि उसको डर था कि यह मेंढक शायद उसका मजाक बना रहा था पर फिर उसको भगवान सूरज और रानी चाँद की बेटी का ख्याल आया और उसने एक और कोशिश करने का निश्चय कर लिया।

वह बैठा और उसने एक और चिट्ठी लिखी — "मैं किया–तुम्बा ऐनडाला, किमानौऐज़े का बेटा, धरती का एक आदमी, ने आपको पहले ही आपकी बेटी का हाथ माँगने के लिये लिखा था।

चिट्ठी आपको भिजवा दी गयी थी पर मुझे अभी तक उसका कोई जवाब नहीं मिला है। इसलिये मैं यह जानने के लिये कि मेरा यह प्रस्ताव आपको मंजूर है कि नहीं मैं एक और चिट्ठी भेज रहा हूँ।"

चिट्ठी लिख कर उसने अपने दस्तखत किये, उसको मोड़ा और बन्द करके मेंढक को दे दिया। मेंढक फिर से उस कुँए की तरफ चल दिया।

जब मेंढक कुँए पर पहुँचा तो पहले की तरह से उसने किया की चिट्ठी अपने मुँह में रखी और कुँए में कूद गया। वहाँ वह भगवान सूरज की दासियों के आने का इन्तजार करने लगा। कुछ देर बाद जब वे वहाँ पानी भरने आयीं तो वह मेंढक उनके घड़े में बैठ कर फिर से स्वर्ग चला गया।

वहाँ पहुँच कर उसने फिर से मेज पर चिट्ठी रखी और अपने उसी अँधेरे कोने में छिप कर बैठ गया। कुछ देर बाद भगवान सूरज

वहाँ आये तो उन्होंने मेज पर फिर एक चिट्ठी रखी देखी। उन्होंने उसको भी उठाया, खोला और पढ़ा।

उनका आश्चर्य बढ़ गया कि वह चिट्ठी धरती पर से कौन ला रहा था सो उन्होंने अपनी दाासियों को फिर से बुलाया और उनसे उस चिट्ठी के बारे में पूछा।

उन्होंने कहा — "तुम लोग पानी लाने के लिये हमेशा ही धरती पर जाती रही हो। क्या तुमने किसी को देखा जो ये चिट्ठियाँ वहाँ से यहाँ लाता है?"

यह सुन कर वे दासियाँ तो भगवान सूरज से भी ज़्यादा आश्चर्य में पड़ गयीं। वे एक साथ बोलीं — "नहीं तो। हमें तो इस बात का बिल्कुल ही पता नहीं है।"

यह सुन कर भगवान सूरज ने अपना सिर खुजलाया पर उनकी समझ में यह नहीं आया कि वे चिट्ठियाँ उनके पास तक पहुँच कैसे रही थीं। फिर भी उन्होंने एक कागज लिया और उस पर लिखा —

"तुम मुझे चिट्ठियाँ भेजते रहे हो। कैसे, यह मैं नहीं जानता। उन चिट्ठियों में तुमने मुझे लिखा था कि तुम मेरी बेटी से शादी करना चाहते हो। मैं तुमको उससे शादी करने की इजाजत दे सकता हूँ पर इस शर्त पर कि तुम खुद यहाँ उसके लिये पहली भेंट ले कर आओ ताकि मैं यह देख सकूँ कि तुम किस तरह के आदमी हो।"

फिर उन्होंने उस चिट्ठी पर दस्तखत किये, उसको मोड़ा और बन्द कर उसको वहीं मेज पर रख दिया। मेज पर चिट्ठी रख कर वह वहाँ से चले गये।

जैसे ही भगवान सूरज वहाँ से गये तो मेंढक अपनी जगह से निकला, मेज पर कूदा, चिट्ठी उठा कर अपने मुँह में रखी और एक घड़े में जा कर बैठ गया। जब भगवान सूरज की दासियाँ फिर से पानी भरने के लिये धरती पर गयीं तो वह भी उनके साथ साथ धरती पर चला गया।

जब तक वे दासियाँ वहाँ से स्वर्ग गयीं तब तक वह वहीं छिप कर इन्तजार करता रहा। जैसे ही वे स्वर्ग चली गयीं वह तुरन्त गाँव में किया के घर भागा गया।

किया ने दरवाजा खोला तो उसने भगवान सूरज की चिट्ठी उसको थमा दी। किया को तो अपनी अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ कि वह भगवान सूरज के हाथ की लिखी चिट्ठी पढ़ रहा था।

किया खुश हो कर बोला — "इसका मतलब है कि तुम सच बोल रहे थे दोस्त मेंढक। मैं उसके लिये अभी जा कर पहली भेंट तैयार करता हूँ ताकि तुम उसे भगवान सूरज के पास ले जा सको।"

उसने एक चमड़े का थैला लिया और उसमें **40** सिक्के रखे और फिर एक और चिट्ठी लिखी —

“आदरणीय भगवान सूरज जी और रानी चाँद जी। यह आपको मेरी पहली भेंट है। मुझे अफसोस है कि मैं आपके पास खुद नहीं आ सकता। मुझे धरती पर ही ठहरना है क्योंकि मुझे अभी शादी की तैयारियाँ करनी हैं।”

और मेंढक किया की चिट्ठी और पहली भेंट ले कर पहले की तरह से फिर से स्वर्ग पहुँच गया। उसने वह चिट्ठी और पैसों का थैला मेज पर रखा ओर जैसे गया था वैसे ही वापस आ गया।

इस तरह मेंढक कुछ समय तक किया और भगवान सूरज के सन्देश लाता ले जाता रहा। किया की भेंटें ले जाता रहा। इस तरह दिन दिन करके एक महीना निकल गया फिर दूसरा महीना भी निकल गया और फिर आया वह दिन जिस दिन किया की शादी भगवान सूरज और रानी चाँद की बेटी से होनी थी।

पर किया–तुम्बा अपना मन पक्का नहीं कर पा रहा था क्योंकि उसको बहुत चिन्ता लगी थी। बारह दिन तक वह पलक तक नहीं झपका सका था। आखिर उसने मेंढक को बुलाया और उससे अपनी चिन्ता बतायी।

वह बोला — “दोस्त, मैं खुद तो अपनी पत्नी को लेने के लिये स्वर्ग जा नहीं सकता और न मैं किसी और को जानता हूँ जो उसको यहाँ धरती पर ला सके। मैं क्या करूँ?”

मेंढक तुरन्त ही बोला — "पर मैं तो हूँ। मैं वहाँ जाऊँगा और फिर पता लगाता हूँ कि उसको यहाँ कैसे लाया जा सकता है। तुम चिन्ता न करो।"

किया–तुम्बा को मेंढक के तसल्ली देने पर भी तसल्ली नहीं हुई। वह बोला — "पर तुम तो बहुत छोटे से हो तुम ऐसा कैसे कर सकते हो।"

पर मेंढक ने उसे विश्वास दिलाया — "उसकी तुम बिल्कुल चिन्ता न करो। तुम देखना कि मैं उसको यहाँ लाने का कोई न कोई रास्ता निकाल ही लूँगा!" कह कर मेंढक फिर से उसी कुँए पर चला गया।

पहले की तरह से वह वहाँ से वह भगवान सूरज की दासियों की पानी के घड़े में बैठ कर स्वर्ग चला गया और जा कर अपने उसी कोने में बैठ गया जहाँ वह बैठा करता था और भगवान सूरज का इन्तजार करने लगा।

जब भगवान सूरज के सोने का समय आया तो सब जगह अँधेरा और शान्त हो गया। मेंढक अपनी जगह से निकला और भगवान सूरज की सुन्दर बेटी को ढूँढने चल दिया। उसने इधर देखा उधर देखा तो वह उसको गहरी नींद में सोती हुई मिल गयी।

वह चुपचाप उसके तकिये तक पहुँच गया। फिर उसने एक सुई धागा निकाला और उसकी पलकें सिलने लगा।

अब वह तो एक जादू की सुई धागा थे और दिखायी भी नहीं दे रहे थे। भगवान सूरज की बेटी को उसकी पलकों की सिलाई से कोई तकलीफ भी नहीं हुई। जब उसने उसकी पलकें सिल दीं तो अब उनको कोई खोल नहीं सकता था।

जब वह लड़की अगले दिन सुबह उठी तो वह अपनी ऑखें ही नहीं खोल पायी। वह तो बहुत डर गयी और चिल्ला चिल्ला कर रोने लगी और सहायता के लिये पुकारने लगी।

रानी चॉद उसके कमरे में दौड़ी दौड़ी आयी और उससे पूछा — "बेटी क्या बात है?"

बेटी बोली — "मॉ मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरी ऑखों पर बहुत सारा बोझ रखा है। मैं तो अपनी ऑख ही नहीं खोल पा रही हूॅ। मुझे डर है कि मैं तो अन्धी हो गयी हूॅ।"

यह सब सुन कर भगवान सूरज भी वहॉ दौड़े दौड़े आ गये। उन्होंने भी देखा कि उनकी बेटी की ऑखें तो बन्द हैं। वह बोले — "वैसे तो सब कुछ ठीक लग रहा है पर ऐसा लगता है कि किसी अनदेखी ताकत ने उनको नीचे कर रखा है। वह कौन सी ताकत हो सकती है? शायद कोई जादू। क्योंकि कल तक तो यह ठीक थी।"

रानी चॉद ने चॉदी के ऑसू बहाते हुए भगवान सूरज से पूछा —"तो अब हम क्या करें?"

भगवान सूरज बोले — "मैं अपने दो दूत अपने अक्लमन्द ओझा ऐनगोम्बो[18] के पास भेजता हूँ। वह हमको बतायेगा कि हमें क्या करना है।" कह कर उन्होंने अपने दो नौकरों को बुलाया और उनको ऐनगोम्बो के पास धरती पर भेजा।

मेंढक वहीं बैठा यह सब सुन रहा था। वह तुरन्त ही एक घड़े में कूद गया और अपने पुराने तरीके से धरती पर पहुँच गया। वह उन दूतों के पहुँचने से पहले ही उस ओझा ऐनगोम्बो के घर पहुँच गया। दूतों ने रास्ते में शहतूत की झाड़ियाँ देखीं तो वे कुछ देर तक वहीं रुक गये।

उधर वह ओझा अपने किसी काम से घर से बाहर गया हुआ था तो इस मौके का फायदा उठाते हुए मेंढक उसके घर में घुस गया और अन्दर से घर का दरवाजा बन्द कर लिया।

ओझा के घर में उसका मुखौटा दीवार पर टॅगा हुआ था जिसको वह अपनी रस्में करते समय पहना करता था सो वह मुखौटा उसने पहन लिया।

कुछ ही देर में भगवान सूरज के दोनों दूत वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने ओझा के घर का दरवाजा खटखटाया तो मुखौटा पहने मेंढक ने अन्दर से पूछा — "कौन है?" उसकी आवाज सारी झोंपड़ी में गूँज गयी।

[18] Translated for the word "Witch Doctor". Ngombo is his name. Witch doctors are those people who control some kind of witch to tell the future and to do some very difficult job, like Ojhaa in India

दोनों दूतों ने कहा कि "हम भगवान सूरज के दूत हैं। क्या हम अन्दर आ सकते हैं?"

पर मेंढक बोला — "नहीं नहीं। यह नामुमकिन है। मैं एक बहुत जरूरी काम में लगा हूँ। तुम लोग मुझे वहीं बाहर से ही बता दो कि भगवान सूरज को मुझसे क्या काम है।"

दूतों ने अन्दर आने की ज़िद नहीं की और उन्होंने उसको वहीं से बताया कि उनके मालिक की बेटी को क्या हुआ है। मेंढक ने शान्ति से उनकी बात सुनी जैसे कि वह उनकी बातें बड़े ध्यान और रुचि से सुन रहा था।

फिर वह कुछ देर चुप रहा जैसे वह कुछ सोच रहा हो और फिर उसी आवाज में बोला — "इसमें कोई शक नहीं है कि लड़की बीमार है क्योंकि उसका होने वाला पति स्वर्ग जा कर उसको धरती पर नहीं ला सकता। यह तो एक ऐसा जादू है जिसको सभी जानते हैं। यह बहुत पुराना है और बहुत ताकतवर है।

यह कहता है कि "भगवान सूरज और रानी चाँद की बेटी तुम जल्दी से मेरे पास आ जाओ नहीं तो तुम हमेशा के लिये रात के अँधेरे में डूब जाओगी।

और तुम दोनों जल्दी से यहाँ से भाग जाओ और अपने मालिक से कहो कि वह अपनी बेटी को जल्दी से जल्दी धरती पर भेजने का इन्तजाम करें वरना मौत से बचने का और कोई रास्ता नहीं है।"

यह सुन कर भगवान सूरज के नौकर तो तुरन्त ही भगवान सूरज के पास चले गये और उनको जा कर जो कुछ भी ऐनगोम्बो ने कहा था वैसा का वैसा ही बता दिया। इधर उन दूतों के जाने के बाद मेंढक किया–तुम्बा के घर दौड़ा गया।

“किया–तुम्बा, किया–तुम्बा। अब तुम जल्दी से तैयार हो जाओ तुम्हारी होने वाली दुलहिन बस यहाँ कभी भी आने वाली होगी।”

दुखी किया–तुम्बा घर से बाहर निकल कर आया और मेंढक से पूछा — “यह कैसे मुमकिन है दोस्त? क्या तुम मेरा बेवकूफ बना रहे हो? मेंढक तुम चले जाओ यहाँ से। मुझसे झूठ नहीं बोलो।”

मेंढक बोला — “पर तुम मेरे कहने का विश्वास तो करो। देख लेना शाम होने से पहले पहले तुम्हारी होने वाली दुलहिन यहाँ मौजूद होगी।” और किया–तुम्बा को जवाब देने का समय दिये बिना ही वह फिर से उसी कुँए पर चला गया और उसके पानी में कूद कर वहाँ इन्तजार करने लगा।

असल में तो मेंढक ने यह पहले ही देख लिया था कि जैसे ही भगवान सूरज के दूतों ने जा कर भगवान सूरज को उसका सन्देश दिया भगवान सूरज ने अपनी बेटी को धरती पर भेजने का इन्तजाम करना शुरू कर दिया।

उन्होंने तुरन्त ही मकड़े को हुकुम दिया कि वह स्वर्ग से ले कर धरती तक एक बहुत ही लम्बा और मजबूत जाला तैयार करे जिस

पर से उसकी अन्धी बेटी उतर कर नीचे धरती पर जा सके। मकड़े ने वैसा ही किया।

और लो। जब शाम होने लगी तो मकड़े का जाला ऊपर से नीचे लटकाया गया और भगवान सूरज की सुन्दर बेटी अपनी दासियों के साथ नीचे धरती पर उतरी।

उसकी दासियों ने उसको कुँए के पास बिठा दिया। उसके बाल सॅवारे। उसको तसल्ली दी और उसको वहाँ शान्ति से इन्तजार करने के लिये कहा। उसके बाद वे स्वर्ग वापस चली गयीं।

जैसे ही भगवान सूरज की बेटी वहाँ अकेली रह गयी मेंढक पानी में से बाहर निकला और उसके पास आ कर बोला — "तुम डरो नहीं। मैं तुमको तुम्हारे होने वाले दुलहे के पास ले चलूँगा।"

उसने अपना छोटा सा जादू का चाकू निकाला और उससे उसकी ऑखों का वह धागा काटना शुरू किया जिससे उसने उसकी पलकों को पहले सिला था ओर जिसे केवल वही देख सकता था। जब वह दोनों ऑखों के धागे काट चुका तो उसको दिखायी देखने लगा। दोनों किया के गॉव की तरफ चले।

वे किया–तुम्बा की झोंपड़ी के दरवाजे के सामने आये और मेंढक ने उसका दरवाजा खटखटाया। किया–तुम्बा बाहर आया तो मेंढक बोला — "यह लो अपनी दुलहिन।"

किया–तुम्बा तो उस लड़की सुन्दरता देख कर दंग रह गया। उसके मुँह से तो कोई शब्द ही नहीं निकला। मेंढक को धन्यवाद की

जरूरत नहीं थी सो वह सबकी नजर बचा कर वहाँ से गायब हो गया।

इस तरह से धरती के एक बेटे ने भगवान सूरज और रानी चाँद की बेटी से शादी की और फिर वे दोनों ज़िन्दगी भर खुशी खुशी साथ साथ रहे।

3 ग्यारह नम्बर का बच्चा[19]

यह बहुत पुरानी बात है कि अफ्रीका के घाना देश में एक सौतेली माँ के 11 बच्चे थे। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि बच्चों को तो हमेशा ही भूख लगी रहती है तो ज़रा सोचो जहाँ 11 बच्चे हों तो वहाँ उनका और उनके माता पिता का क्या हाल होता होगा।

जब तक उस स्त्री का शिकारी पति ज़िन्दा था तब तक तो उन सबको सुबह और शाम का खाना मिलता रहा पर एक दिन उसका पति मर गया।

वह स्त्री उन बच्चों को बिल्कुल भी प्यार नहीं करती थी क्योंकि वे उसके अपने बच्चे नहीं थे पर फिर भी वे सब बच्चे भूखे न रहें यह सब अब केवल उसी को देखना पड़ता था।

कुछ दिन तक तो उसने उन बच्चों को कमसे कम एक बार तो ठीक से खाना देने की अपनी पूरी कोशिश की पर कुछ समय बाद ही वह यह नहीं कर सकी। उसने सोचा कि वह इस सबको खत्म कर दे।

वह अपने घर के पीछे के खेत में गयी और वहाँ लगे एक ब्रैडफ्रूट[20] के पेड़ से बोली — "ओ पेड़, मेरे ऊपर एक दया करो मैं तुम्हें सूखे के

[19] Number Eleven Child (Tale No 3) – a folktale from Ashani Tribe, Ghana, West Africa.
[20] Breadfruit is a species of flowering tree. Its fruit when cooked smells like bread that is how its name is derived – see its picture above.

मौसम में भी पानी दूँगी। मैं अभी अभी अपने 11 बेटों को काशीफल[21] तोड़ने के लिये यहाँ भेजूँगी तो तुम अपने सबसे बड़े फल उनके ऊपर गिरा कर उन्हें मार देना।"

ब्रैडफ्रूट के पेड़ ने जवाब दिया — "ठीक है। क्योंकि तुमने मुझे पानी देने का वायदा किया है इसलिये मैं तुम्हारा यह काम जरूर करूँगा।"

सौतेली माँ वापस घर गयी, बच्चों को बुलाया और उनसे कहा — "घर के पीछे जाओ और ब्रैडफ्रूट के पेड़ के नीचे से पके हुए कुछ काशीफल चुन लाओ ताकि मैं उनको तुम्हारे लिये शाम के खाने के लिये बना सकूँ।"

बच्चे खुशी खुशी ब्रैडफ्रूट के पेड़ के नीचे पके काशीफल इकट्ठे करने जाने लगे। पर उनमें जो उसका नम्बर 11 वाला लड़का था, यानी सबसे छोटा वाला लड़का, उसने वह सब सुन लिया था जो उनकी सौतेली माँ ने उस पेड़ से कहा था।

उसने अपने सब भाइयों को रोका और उनसे कहा — "क्या तुम्हें मालूम है कि हमारी माँ ने हम सबको इस पेड़ के नीचे से काशीफल इकट्ठा करने के लिये क्यों भेजा है?"

---

[21] Translated for the word "Pumpkin" – see its picture above.

उसके सब भाई एक साथ बोले — "ताकि वह हमारे शाम के खाने के लिये उनको बना सके और हम उनको खा सकें।"

नम्बर 11 बोला — "नहीं बिल्कुल नहीं। उसने इस पेड़ को यह कहा है कि वह अपने सबसे बड़े फल हमारे सिर के ऊपर गिरा कर हमें मार दे और वह हमसे बच जाये। पर हम लोग इस पेड़ को बेवकूफ बनायेंगे। तुम सब लोग खूब बड़े बड़े पत्थर ले लो और इस पेड़ पर फेंको।"

उन्होंने ऐसा ही किया। पर ब्रैडफ्रूट के पेड़ ने यह सोचते हुए कि अब लड़के उसके नीचे आ गये हैं उसने अपने 11 सबसे बड़े फल गिरा दिये।

नम्बर 11 बोला — "देखा मैंने तुमसे क्या कहा था। अगर हम लोग इस पेड़ के नीचे होते तो हम लोग अभी तक मर गये होते।"

फिर उन्होंने उस पेड़ के नीचे से पके काशीफल इकट्ठे किये और वे गिरे हुए 11 ब्रैडफ्रूट भी उठाये और उनको घर ले गये जैसे कुछ हुआ ही न हो।

उनकी माँ तो उनको वे काशीफल और ब्रैडफ्रूट लाता देख कर आश्चर्यचकित रह गयी पर वह कुछ कह नहीं सकी बल्कि उसको वे काशीफल भी पकाने पड़े जो वे तोड़ कर लाये थे और वे फल भी काट कर उन्हें खिलाने पड़े जो फल के पेड़ ने उनको मारने के लिये गिराये थे।

मॉ ने फिर कुछ दिन इन्तजार किया। उसके बाद उसने सीधे आसमान की आत्मा[22] से बात करने का विचार किया।

वह आसमान की आत्मा के पास गयी और उससे बोली — "ओ आसमान की आत्मा, मेहरबानी करके मेरी सहायता करो। मेरे सौतेले बच्चे मुझे बहुत तंग कर रहे हैं।

वे कुछ करते तो हैं नहीं बस खाते ही खाते हैं और फिर भी उनका पेट नहीं भरता। मैं तुमसे पार्थना करती हूॅ कि तुम उनको पकड़ लो और उनको गायब कर दो। मैं तुमको बहुत कुछ चढ़ाऊॅगी।"

आसमान की आत्मा यह सुन कर पहले तो कुछ हिचकिचाया पर फिर बाद में राजी हो गया। उसने अपने दो नौकरों को बुलाया और उनको **11** गड्ढे खोदने के लिये कहा।

गड्ढे खुद जाने पर उसने उसमें टूटी हुई कॉच की बोतलों के टुकड़े डलवा दिये। और खुद उसने उसमें बहुत सारे सॉप डाल दिये। उस गड्ढे को फिर पत्तों और डंडियों से ढक दिया। उसके बाद उसने अपने दो नौकरों को बुलाकर बच्चों को अपने पास लाने के लिये भेज दिया।

बच्चों को कुछ शक नहीं हुआ और वे उन दोनों नौकरों के साथ चले गये। पर जब वे गड्ढे के पास पहुॅचे तो नम्बर **11** ने

---

[22] The Spirit of the Sky

देखा कि आगे की मिट्टी तो कई जगह से खुदी हुई है और वहॉ पर पेड़ की ताजा कटी हुई शाखें पड़ी हुई हैं।

उसको कुछ शक हुआ तो उसने अपने भाइयों से कहा कि वे सड़क की तरफ से नहीं बल्कि जंगल की तरफ से चलेंगे।

यह सुन कर उसके भाइयों को बड़ा आश्चर्य हुआ उन्होंने पूछा — "मगर क्यों? हम जंगल की तरफ से क्यों जायें जबकि हम सड़क से जा सकते हैं।"

नम्बर 11 बोला — "तुममें से एक कुछ दूर जहॉ वे डंडियॉ पड़ी हैं वहॉ कोई डंडी फेंको तब तुम्हें पता चलेगा।"

सो नम्बर 10 उस गड्ढे की तरफ बढ़ा और उसने एक भारी सी डंडी उन डंडियों की तरफ फेंकी। तुरन्त ही उसकी डंडी गड्ढे में अन्दर चली गयी। तब वे सब उस जाल के पास पहुँचे और वहॉ उन्होंने गड्ढे में पड़े टूटी कॉच की बोतलों के टुकड़े और सॉप देखे।

नम्बर 11 बोला — "तुम सबने देखा कि अगर हम लोग उधर से जाते तो हमारे साथ क्या होता?"

सो उन्होंने जंगल का रास्ता लिया और आसमान की आत्मा के पास चल दिये। आसमान की आत्मा के पास पहुँचने में उनको आधा दिन लग गया। आसमान की आत्मा भी उनको सुरक्षित देख कर दंग रह गया पर ऐसा हुआ कैसे।

उसने तो असल में **11** गड्ढे खुदवाये थे और उनमें हर एक में एक एक चीता[23] भी छिपा दिया था। फिर उनको पत्तों और डंडियों से ढक कर उन पर एक एक आरामदेह स्टूल भी रखवा दिया था।

अगर बच्चे वहाँ तक आते तो वह उनको उनकी यात्रा की थकान मिटाने के लिये उन स्टूलों पर बैठने के लिये कहता और बस फिर वे उसके जाल में फँस जाते।

जैसे ही आसमान की आत्मा मे उनको देखा तो वह उनसे बोला — "ओह छोटे छोटे बच्चों। तुम लोग तो यहाँ तक आते आते थक गये होगे। देखो वहाँ "तुम्हारे लिये" वे आरामदेह छोटे छोटे स्टूल पड़े हुए हैं उन पर बैठो और थोड़ा आराम कर लो।"

नम्बर **11** को आसमान की आत्मा का "तुम्हारे लिये" कहना कुछ अच्छा नहीं लगा सो वह बोला — "जनाब, आपने हमारे लिये बहुत तकलीफ उठायी है। हम लोग तो गरीब बच्चे हैं और ये जो स्टूल आपने हमारे लिये बनवाये हैं ये तो राजाओं के बैठने के लिये हैं। हम यहाँ इस पेड़ के नीचे बैठते हैं।"

यह सुन कर आसमान की आत्मा की तो समझ में ही नहीं आया कि अब वह उनसे क्या कहे सो उसको उन बच्चों को रात को वहाँ शरण देनी ही पड़ी।

---

[23] Translated for the word "Leopard". Leopard is a tiger-like animal – see its picture above.

अगली सुबह तो आसमान की आत्मा ने सौतेली माँ के इन बच्चों को उसके रास्ते से हटाने की सोच ही रखा था सो उसने उनको मौत के पास भेज दिया।

अगली सुबह उसने उनको बुलाया और उनसे कहा — "बच्चों, मैंने तुमको इसलिये बुलाया है क्योंकि मुझे मालूम था कि केवल तुम ही मेरी सहायता कर सकते हो। तुम ज़रा मेरा एक काम कर दो।

देखो इस सड़क के आखीर में एक सूखी नदी है। वहाँ एक बुढ़िया रहती है। कुछ दिन पहले उसने मुझसे कुछ कर्जा लिया था। वह तुम्हें उससे ले कर आना है।

तुम लोग उस बुढ़िया के पास जाओ और उससे मेरा एक सोने का पाइप, एक सोने की दाँत कुरेदने वाली, एक सोने का सुँघनी वाला डिब्बा, एक सोने की घंटी और एक सोने का मक्खी मारने वाला ले आओ।

मुझे पूरा भरोसा है कि तुम ये सब चीज़ें उससे ले आओगे। पर हाँ, तुम उसको यह मत बताना कि मैंने तुमको वहाँ भेजा है।"

नम्बर **11** बोला — "ओ आसमान की आत्मा, आप तो बहुत ही ताकतवर देवता हैं। आपकी तो सबको इज़्ज़त करनी चाहिये और आपसे सबको डरना भी चाहिये। आपके लिये यह छोटा सा काम तो हम लोग बड़ी खुशी से करेंगे।"

कह कर वे **11** भाई लाइन बना कर उस बुढ़िया के घर की तरफ चल दिये पर जैसे ही उन्होंने उस बुढ़िया की झोंपड़ी देखी तो नम्बर **11** ने उन सबको पहले की तरह से रोक लिया।

उसने चारों तरफ देखा ओर बोला — "भाइयो, यह तो किसी मामूली बुढ़िया का मकान नहीं है। यहॉ तो मौत रहती है। पूरी धरती पर मौत ही एक ऐसा जीव है जो एक ऐसी नदी के किनारे रह सकता है जो हमेशा सूखी रहती हो क्योंकि उसको कुछ पीने की जरूरत ही नहीं होती।"

यह सुन कर तो सब बच्चे डर गये और कहने लगे तब तो हमको यहॉ से तुरन्त ही वापस चले जाना चाहिये।

पर नम्बर **11** फिर बोला — "नहीं नहीं, इतना ज़्यादा डरने की जरूरत नहीं है। हम वहॉ चलते हैं फिर तुम मेरे ऊपर छोड़ दो मैं देखता हूॅ कि हम कैसे अपनी बदकिस्मती को अच्छी किस्मत में बदल सकते है।

सो वे सब आगे बढ़े और वहॉ पहुॅच कर उन्होंने उस झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया। अन्दर से मौत बोली — "यहॉ तो कभी कोई आता नहीं। मेरे पास आने की तो कभी किसी की हिम्मत ही नहीं होती तो फिर तुम लोग मेरे पास क्यों आये हो?"

ग्यारहों बच्चे एक साथ बोले — "हम लोग जंगल में घूम रहे थे कि हम रास्ता भूल गये।"

मौत बोली — "अरे क्या सचमुच, तो आओ अन्दर आ जाओ।" सब बच्चे मौत की झोंपड़ी में चले गये।

मौत के अपने भी 10 बेटे थे। जब रात हो गयी तो मौत ने आये हुए 10 लड़कों को अपने 10 बेटों के साथ 10 पलंगों पर एक एक के साथ एक एक को सुला दिया – एक मौत का अपना बेटा और एक आया हुआ लड़का। नम्बर 11 को उसने अपने साथ लिया और सोने चली गयी।

जब काफी रात बीत गयी तो मौत ने नम्बर 11 को छू कर देखा कि वह गहरी नींद सो गया या नहीं ताकि वह उसको खा सके। पर नम्बर 11 तो सोया ही नहीं था। वह तो जागा हुआ था सो वह तुरन्त बोला — "दादी मॉ, मैं अभी सोया नहीं हूँ।"

इस पर मौत ने पूछा — "तो फिर तुम कब साओगे?"

नम्बर 11 बोला — "शायद मैं तब सो पाऊँ जब मैं आपका थोड़ा सा सोने का पाइप पी लूँ।"

सो मौत अपने बिस्तर में से उठी और अपने बक्से में इधर उधर हाथ मार कर एक सोने का पाइप निकाल कर ला कर उसे दे दिया।

कुछ देर और बीत गयी तो मौत ने फिर नम्बर 11 को छू कर देखा कि वह अभी सोया है कि नहीं। पर उसके छूते ही नम्बर 11 फिर बोला — "दादी मॉ, मैं अभी सोया नहीं हूँ।"

इस पर मौत ने पूछा — "तो फिर तुम कब सोओगे?"

नम्बर 11 बोला — "शायद मैं तब सो पाऊँ जब मैं आपका सोने का सुँघनी का बक्सा ले लूँ।"

मौत बेचारी फिर उठी और अपने बक्से में से उसको अपना सोने का सुँघनी का बक्सा ला कर दे दिया।

कुछ और समय निकल गया तो मौत ने फिर नम्बर 11 को छू कर देखा कि वह अभी सोया है कि नहीं। पर उसके छूते ही नम्बर 11 फिर बोला — "दादी माँ, मैं अभी सोया नहीं हूँ।"

इस पर मौत ने पूछा — "तो फिर तुम कब सोओगे?"

नम्बर 11 बोला — "शायद मैं तब सो पाऊँ जब मैं आपकी सोने की दाँत कुरेदने वाली से अपना दाँत कुरेद लूँ।"

मौत एक बार फिर उठी और अपने बक्से में से उसको अपनी सोने की दाँत कुरेदने वाली ला कर दे दी।

कुछ और समय निकल गया तो मौत ने फिर नम्बर 11 को छू कर देखा कि वह अभी सोया है कि नहीं। पर उसके छूते ही नम्बर 11 फिर बोला — "दादी माँ, मैं अभी सोया नहीं हूँ।"

इस पर मौत ने कुछ गुस्सा सा होते हुए पूछा — "तो फिर तुम कब सोओगे?"

नम्बर 11 बोला — "शायद मैं तब सो पाऊँ जब आप मुझे सोने की घंटी ला दें।"

सो मौत एक बार फिर उठी और अपने बक्से में से उसको अपनी सोने की घंटी ला कर दे दी।

कुछ समय और बीत गया तो मौत ने फिर नम्बर **11** को छू कर देखा कि वह अभी सोया है कि नहीं। पर उसके छूते ही नम्बर **11** फिर बोला — "दादी माँ, मैं अभी सोया नहीं हूं पर मैं इसके बारे में कुछ नहीं कर सकता।"

अब मौत का धीरज छूटने लगा। वह बोली — "ऐसे कैसे चलेगा। कितनी रात हो गयी और तुमको अभी तक नींद ही नहीं आयी। बेटा अपना मन बनाओ और सोने की कोशिश करो।"

नम्बर **11** बोला — "अगर आप सामने उस झील के पास जायें जहाँ बहुत पुराने लोग रहते हैं और वहाँ से एक छलनी में मुझे पानी ला कर दें ताकि मैं अपनी प्यास बुझा सकूं तब शायद मैं सो पाऊँ।"

सभी लोग जानते थे कि मौत कोई बहुत अक्लमन्द स्त्री नहीं थी। मौत ने तुरन्त ही एक छलनी उठायी और उसमें पानी लाने के लिये दूर उस झील की तरफ चल दी जिसको नम्बर **11** ने बताया था। उसने उस छलनी में कई बार पानी भरने की कोशिश की पर उसमें तो पानी एक बूंद भी नहीं रुक रहा था।

इतनी देर में नम्बर **11** अपने भाइयों के सोने की जगह गया और हर एक को उठा कर बोला — "जल्दी जागो और यहाँ से भाग चलो।"

वे सब जल्दी ही उठ गये और वहॉ से भाग लिये। नम्बर **11** बाहर खेत में गया वहॉ से एक केले के पेड़ के **10** सुन्दर सी टहनियॉ काटीं और उनको मौत के दसों बच्चों के पास रख दिया। फिर उसने वे टहनियॉ उन कम्बलों से ढक दीं जो उन बच्चों ने ओढ़ रखे थे। यह सब करके वह मौत का इन्तजार करने लगा।

इधर मौत अपनी छलनी में पानी भरने की बराबर कोशिश कर रही थी पर कुछ हो ही नहीं पा रहा था। एक घंटा हो गया था। तभी उसका दोस्त "दफ़न"[24] उधर आ निकला। वह आदमियों के गॉव में से किसी का अन्तिम संस्कार करके लौट रहा था।

दफ़न ने मौत को देखा तो उससे पूछा — "दोस्त, तुम यहॉ क्या कर रही हो?"

मौत बोली — "मैं एक छलनी में पानी भरने की कोशिश कर रही हूॅ।"

दफ़न बोला — "तुमने क्या कहा? तुम क्या करने की कोशिश कर रही हो?"

मौत बोली — "ओह यह एक लम्बी कहानी है। सुनो सारी रात एक छोटा सा लड़का मुझे तंग करता रहा है। उसने मुझसे कई सोने

---

[24] Translated for the word "Funeral". Funeral is the last rites of a living being after his death.

की चीज़ें ले ली हैं और अब वह चाहता है कि मैं उसके लिये छलनी में पानी भर कर लाऊँ।"

दफ़न बोला — "क्या तुम पागल हो गयी हो? छलनी में तो छेद होते हैं तुम उसमें पानी कैसे भर सकती हो? बेवकूफ, पहले तुम मिट्टी से उसके छेद बन्द करो तभी तुम उसमें पानी भर सकती हो।"

मौत को यह सुन कर अपनी बेवकूफी पर बहुत शरम आयी। फिर उसने वैसा ही किया जैसा कि दफ़न ने उससे करने के लिये कहा था। उसके बाद ही वह कहीं उस चलनी में पानी भर सकी। पानी भर कर वह घर वापस गयी।

जब नम्बर 11 ने उसको देखा तो बोला — "दादी माँ, पानी के लिये धन्यवाद पर अब तो मुझे भूख भी लग आयी है। सुबह भी होने वाली है सो अब तो आपको नाश्ता भी बनाना है।"

मौत इस बात का जवाब देने के लिये बहुत थकी हुई थी सो उसने आग जलायी और उसके ऊपर एक बहुत बड़ा बरतन रख दिया। फिर वह उस कमरे में गयी जहाँ उसके बच्चे सो रहे थे या फिर उस नम्बर 11 के भाई सो रहे थे।

वहाँ अँधेरा था सो उसने छू कर बच्चों को देखा और जो भी उसको मुलायम लगा उसने यह सोच कर उसका गला घोट दिया कि वह नम्बर 11 का भाई था। उसने सोचा कि अब कम से कम ये बच्चे तो नहीं बचे रहेंगे।

पर उसको यह पता ही नहीं चला कि उसने अपने ही बच्चों के गले घोट दिये थे। फिर वह अपने रसोईघर में कुछ खाने के लिये बनाने के लिये चली गयी।

आखिर पौ फट गयी और सुबह हो गयी। मौत बहुत थक गयी थी सो वह आग के पास ही बैठ गयी। पर नम्बर **11** तो उसको आराम करते नहीं देख सकता था सो वह उससे बोला — "दादी माँ एक बड़ी सी बदसूरत मक्खी आपकी पीठ पर बैठ गयी है।"

मौत बोली — "उधर से एक शाख उठा लो और उसे मार दो।"

"दादी माँ, क्या आप मजाक कर रही हैं। क्या कहा आपने एक शाख? आपके जैसे आदमी के पास तो कोई सोने का मक्खी मारने वाला होना चाहिये।"

मौत यह सुन कर बहुत खुश हुई और बोली — "हाँ है तो। तुम हमारे सोने के कमरे में जाओ, वहाँ एक बक्सा रखा है तुमको वह उसी में मिल जायेगा।"

नम्बर **11** उसके सोने के कमरे में गया। उसके बक्से में से सोने का मक्खी मारने वाला निकाला और ला कर उससे जानबूझ कर मक्खी मारने की बजाय उसको उड़ा दिया।

फिर गुस्सा करने का बहाना करते हुए बोला — "ओह नहीं। वह बड़ी बदसूरत मक्खी जो दादी माँ की पीठ पर बैठी थी यहाँ से

बच कर निकल गयी। यह कैसे हुआ। अब जब तक मैं उसको पकड़ नहीं लूँगा मुझे शान्ति नहीं मिलेगी।"

ऐसा कह कर उसने उस मक्खी के पीछे भागने का बहाना करते हुए वे सब सोने की चीज़ें उठायीं जो उसने रात भर में जमा की थीं, उनको अपने थैले में रखा और मक्खी के पीछे भागने का बहाना करते हुए वहाँ से भाग गया।

जब वह वहाँ से काफी दूर चला गया तब वह एक जगह रुक गया और चिल्लाया — "ओ दादी माँ मौत। मुझे मालूम है कि आप कौन हैं। आप तो बिल्कुल ही बेवकूफ हैं।

मैने न केवल आपसे आपका सोना ही नहीं लूटा बल्कि अपने भाइयों को भी बचा लिया। इसके अलावा मैंने तो आपके बच्चों को आप ही के हाथों से मरवा दिया है। और अब तो मैं भी आपके हाथ से बच आया हूँ।"

मौत ने जब यह सुना तो वह चिल्लायी — "ओ धोखेबाज, मैं तेरा धरती के उस छोर तक पीछा नही छोड़ूँगी।"

और नम्बर **11** वहाँ से फिर भाग लिया। मौत उसके पीछे पीछे भागी। नम्बर **11** वहाँ तक भागता चला गया जहाँ उसके **10** भाई उसका एक बहुत बड़े से पेड़ के नीचे इन्तजार कर रहे थे।

वह चिल्लाया — "जल्दी करो, जल्दी जल्दी तुम सब इस पेड़ पर चढ़ जाओ। मौत हमारे पीछे है और वह हमसे खुश नहीं है।"

सो वे सब पेड़ पर चढ़ गये। जैसे ही वे पेड़ पर चढ़े कि मौत वहॉ आ पहुॅची। वह भागते भागते बहुत हॉफ रही थी सो वह उस पेड़ के नीचे आ कर रुक गयी।

वहॉ आ कर उसने अपने दॉये देखा बॉये देखा, सामने देखा पीछे देखा पर उसको वे बच्चे कहीं दिखायी नहीं दिये। पर जब ऊपर देखा तो उसको वे बच्चे वहॉ दिखायी दे गये।

उनको देखते ही वह फिर चिल्लायी — "अरे गधो तुम लोग यहॉ छिपे बैठे हो। अब तम्हें कोई नहीं बचा सकता।"

कह कर उसने फिर से कहना शुरू किया — "क्येरे हेने क्येरे हेने।" तुरन्त ही एक बच्चा ठंडा हो कर नीचे गिर पड़ा। वह फिर बोली — "क्येरे हेने क्येरे हेने।" और फिर दूसरा बच्चा ठंडा हो कर नीचे गिर पड़ा। इस तरह से 10 बच्चे हो कर ठंडे नीचे गिर पड़े बस नम्बर 11 बच्चा पेड़ पर रह गया।

मौत ने फिर कहा — "क्येरे हेने क्येरे हेने।"

पर तब तक नम्बर 11 पेड़ के दूसरी तरफ नीचे उतर चुका था। किसी को पेड़ नीचे न गिरते देख कर मौत यह देखने के लिये पेड़ के ऊपर चढ़ी कि आखिरी बच्चा वहॉ से नीचे क्यों नहीं गिरा।

जब मौत ऊपर चढ़ रही थी तो नम्बर 11 बोल पड़ा — "ओ मौत तुझे क्येरे हेने क्येरे हेने।"

जैसे ही नम्बर 11 ने यह कहा तो मौत भी वहॉ से ठंडी हो कर नीचे गिर पड़ी। उससे तो मौत भी मर गयी थी।

इसी समय चिल्लाहटों की आवाज सुन कर आसमान की आत्मा वहॉ आ गया। उसने देखा कि 10 बच्चे मरे पड़े थे और नम्बर 11 ज़ोर ज़ोर से रो रहा था।

यह देख कर आसमान की आत्मा को बहुत बुरा लगा। उसको पछतावा हुआ कि उसने उस सौतेली मॉ की बात क्यों सुनी और उन बच्चों को वहॉ क्यों भेजा।

आसमान की आत्मा ने नम्बर 11 से कहा — "रो नहीं बेटा। लो यह रस लो और अपने भाइयों पर छिड़क दो। वे सब अभी ज़िन्दा हो जायेंगे।

नम्बर 11 ने वह रस आसमान की आत्मा से ले कर अपने सभी भाइयों पर छिड़क दिया। रस छिड़कते ही वे सब ज़िन्दा हो गये। ऑख खोलते ही उन्होंने पूछा कि उनको क्या हुआ था और वे वहॉ थे ही क्यों।

नम्बर 11 वह बचा हुआ रस आसमान की आत्मा को वापस देना चाहता था पर जैसे ही वह उसको आसमान की आत्मा को दे रहा था कि उसको ठोकर लगी और वह रस छलक कर मौत के ऊपर जा पड़ा। इससे मौत भी ज़िन्दा हो गयी।

मौत खुश हो कर बोली — "इस बार हममें से कौन बेवकूफ है?"

पर आसमान की आत्मा ने उसको इशारे से रोक कर कहा — "रुको, अब ये बच्चे मेरी सुरक्षा में हैं। ये अब बड़े हो कर शिकारी,

लड़ने वाले और किसान बनेंगे। जब इनका समय आयेगा अब तब तुम वापस आना तब तुमको ये जरूर मिल जायेंगे।"

और फिर ऐसा ही हुआ। नम्बर **11** और उसके दसों भाई एक बार फिर आजाद हो गये थे। मौत अपना जाल बिछाने के लिये वहॉ से फिर कहीं और चली गयी।
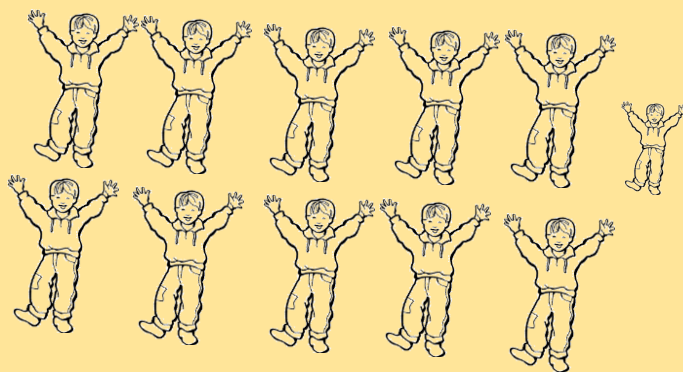
4 बिना दॉत की सुन्दर लड़की[25]

बहुत पहले की बात है कि अफ्रीका के दक्षिण अफ्रीका देश में एक बूढ़ा रहता था जिसके तीन बेटे थे। उसके तीनों बेटों की अभी शादी नहीं हुई थी।

उसका सबसे छोटा बेटा तो अभी लड़कपन से कुछ ही बड़ा था जबकि उसके दोनों बड़े बेटे शादी के लायक थे और उनकी शादी अब तक हो जानी चाहिये थी। पर यह देख कर कि वे लोग इस बात पर कोई ध्यान ही नहीं दे रहे थे एक दिन पिता ने सोचा कि वह खुद ही इस बारे में कुछ करेगा।

एक दिन सुबह सुबह वह गॉव में घूमने निकल गया कि शायद वह अपने सबसे बड़े बेटे के लिये कोई अच्छी लड़की ढूँढने में कामयाब हो जाये।

उसने जा कर गॉव के सरदार से बात की तो उसने उसको एक बहुत सुन्दर सी लड़की दिखायी जो शादी के लायक थी।

वह बूढ़ा उस लड़की को देख कर घर वापस चला गया। अपने सबसे बड़े लड़के को बुला कर उसने उससे कहा — "मैंने तुम्हारे लिये एक लड़की देख ली है। कल तुम उसके पिता से मिलना और उसके लिये तीन गाय और दो बैल की भेंट ले जाना।"

---

[25] The Toothless Pretty Maid (Tale No 3) – a folktale from Bavenda (or Venda) Tribe, South Africa, Africa.

बेटे को कोई ऐतराज नहीं था सो अगले दिन सुबह ही उसने अपने ससुर के लिये जानवर लिये और अपनी होने वाली पत्नी के गाँव की तरफ रवाना हो गया।

जब वह वहाँ पहुँचा तो उसके ससुराल वालों ने उसका ज़ोर शोर से स्वागत किया। उसके ससुर ने अपनी बेटी से कहा — "बेटी देखो यह तुम्हारा दुलहा है तुम इनके साथ इनके घर चली जाओ।"

लड़की बहुत खुश थी सो वह उस नौजवान के साथ चल दी। कुछ दूर जाने के बाद उसने अपनी मीठी आवाज में गाना शुरू कर दिया —

देखो देखो मेरे सुन्दर नौजवान मैं एक बहुत सुन्दर लड़की हूँ
पर मेरे एक भी दाँत नहीं है।

यह सुन कर उसको कुछ शक हो गया सो वह उससे बोला — "ज़रा रुको तो, ज़रा अपना मुँह तो खोलो। मैं देखूँ कि तुम जो कुछ कह रही हो वह सच भी है या नहीं।"

लड़की रुकी और उसने अपना मुँह खोला तो उसने उसके मुँह के अन्दर देखा तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसके मुँह में तो वाकई दाँत ही नहीं थे वहाँ तो बस केवल दो काली लाइनें थीं।

"हे भगवान, इस गड़बड़ के बारे में तो किसी ने मुझे बताया ही नहीं। यह शादी नहीं हो सकती। मैं तुमको तुम्हारे पिता के पास छोड़ कर आता हूँ।"

कह कर वह नौजवान उसको साथ ले कर उसके पिता के घर वापस गया और उससे कहा कि वह बिना दाँत की पत्नी नहीं लेना चाहता था इसलिये उसके जानवर वापस कर दिये जायें और बस।

शाम को जब वह घर वापस आया तो उसके पिता ने उससे पूछा — "बेटे, तुम्हारी पत्नी कहाँ है? और ये जानवर अभी भी तुम्हारे पास क्यों हैं?"

बेटा बोला — "पिता जी, मैं अपनी पत्नी को ले कर घर आ रहा था पर रास्ते में मुझे पता चला कि उसके तो दाँत ही नहीं थे। मैं एक बिना दाँत वाली लड़की से शादी नहीं कर सकता था सो मैं उसको उसके घर छोड़ आया और अपने जानवर वापस ले आया।"

यह सुन कर उसका पिता बहुत दुखी हो गया पर तभी उसका दूसरा बेटा वहाँ आ गया और बोला — "मुझे डर है कि मेरे भाई ने कुछ ज़रा ज्यादा ही बोल दिया लगता है। पिता जी आप मुझे इजाज़त दें तो मैं देख कर आऊँ कि जैसा कि यह कह रहा है उस सुन्दर लड़की के वाकई दाँत हैं या नहीं।"

यह सुन कर पिता खुश हो गया और उसने उसको वहाँ जा कर उस लड़की को देखने की इजाज़त दे दी। अगली सुबह उसका

दूसरा लड़का तीन गाय और दो बैल ले कर उस लड़की के गाँव चल दिया।

जब वह उस लड़की के गाँव पहुँचा तो उसका भी बहुत ज़ोर शोर से स्वागत हुआ। लड़के ने लड़की के पिता को अपने आने की वजह बतायी तो उसने अपनी बेटी को बुलाया और कहा – "बेटी देखो यह तुम्हारा दुलहा है तुम इनके साथ इनके घर चली जाओ।"

लड़की कुछ नहीं बोली और उस नौजवान के साथ चल दी। पर ज़रा देखो तो, कुछ देर बाद ही उसने बड़ी मीठी आवाज में गाना शुरू कर दिया –

देखो देखो मेरे सुन्दर नौजवान मैं एक बहुत सुन्दर लड़की हूँ
पर मेरे एक भी दाँत नहीं है।

वह नौजवान भी यह सुन कर तुरन्त ही रुक गया और उससे उसका मुँह खोलने के लिये कहा क्योंकि वह यह देखना चाहता था कि वह जो गा कर कह रही थी वह सचमुच में सच था या नहीं।

लड़की से उसको ज़्यादा ज़िद करने की जरूरत नहीं पड़ी उसने तुरन्त ही अपना मुँह खोल दिया। लड़के ने देखा किउस लड़की के मुँह में तो वाकई कोई दाँत नहीं था केवल दो काली लाइनें थीं।

वह लड़का भी उसको उसके पिता के घर वापस ले गया, उसको वहाँ छोड़ कर वहाँ से अपने जानवर उठाये और अपने घर वापस चल दिया।

जब वह घर वापस आया तो उसके पिता ने उसकी पत्नी के बारे में पूछा तो वह बोला — "मेरा भाई ठीक कहता था पिता जी। मैंने भी देखा उसके तो दाँत ही नहीं थे। मैं भी एक बिन दाँत वाली लड़की से शादी नहीं करता सो मेंने उसको उसके पिता को लौटा दिया और अपने जानवर ले कर घर वापस आ गया।"

पिता उसकी यह बात सुन कर बहुत ही नाउम्मीद हुआ। वह यह सोच कर बहुत ही दुखी हो रहा था कि जो लड़की उसने देखी थी उसके तो दाँत ही नहीं थे। अब वह क्या करे।

पर उन दोनों लड़कों के बाद उसका तीसरा और सबसे छोटा बेटा आया और उसने भी उससे वहाँ जाने की इजाज़त माँगी। पिता ने उसको भी इजाज़त दे दी तो उसके सबसे बड़े बेटे को बहुत बुरा लगा।

उसने अपने सबसे छोटे भाई से कहा — "तुमने हमें समझा क्या है? क्या हम लोग बिल्कुल ही बेवकूफ हैं? अगर उसके दाँत होते तो क्या हम उससे शादी नहीं कर लेते?"

सबसे छोटा भाई बोला — "नहीं भाई, यह बात नहीं है। असल में तुम लोगों ने उसके बारे में बता देने के बाद मेरे मन में यह इच्छा जगा दी है कि मैं भी यह देखूँ कि बिना दाँत वाली लड़की लगती कैसी है। बस इसी लिये।"

सो अगले दिन उसने भी तीन गायें लीं दो बैल लिये और उस लड़की के गाँव की तरफ चल दिया। वहाँ पहुँच कर लड़की के

पिता ने उसका भी अच्छी तरह से स्वागत किया और उससे कहा — "तुम तो शादी के लिये अभी बहुत छोटे लगते हो। पर तुम्हारे दोनों भाइयों को मेरी बेटी को वापस लाता देख कर मैं तुम्हारे जानवर स्वीकार करता हूँ। तुम मेरी बेटी को ले जा सकते हो।"

उसने अपनी बेटी को बुलाया और उसको इस नौजवान के साथ जाने के लिये कहा। लड़की ने न तो हॉ ही की न ही ना की और उस लड़के के साथ चल दी।

जब वे दोनों उसी जगह पहुँचे जहॉ उस लड़की ने पहली दो बार अपना गाना गाया था तो उसने वहॉ पहुँच कर फिर से वही गाना गाना शुरू कर दिया —

देखो देखो मेरे सुन्दर नौजवान मैं एक बहुत सुन्दर लड़की हूँ
पर मेरे एक भी दॉत नहीं है।

उस नौजवान ने उससे घबराते हुए कहा — "ज़रा अपना मुँह तो खोलो।"

लड़की ने अपना मुँह खोल दिया और लड़के ने उसके मुँह में दॉत की बजाय दो काली लाइनें देखीं। वह तो उनको देख कर ही दंग रह गया पर उसने ऐसा नाटक किया जैसे कि कुछ हुआ ही न हो और बोला — "क्या फर्क पड़ता है, चलो चलते हैं।"

चलते चलते वे एक नदी के किनारे आये तो उस लड़की ने एक नजर उस नौजवान पर डाली और फिर से वही गाना गाना शुरू कर दिया —

देखो देखो मेरे सुन्दर नौजवान मैं एक बहुत सुन्दर लड़की हूँ
पर मेरे एक भी दाँत नहीं है।

नौजवान ने उसके गाने की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और उस नदी को जहाँ से वह सबसे ज्यादा उथली थी वहाँ से पार करने लगा। जब वे नदी के बीच में पहुँचे तो उसने लड़की को कस कर पकड़ लिया और उसको फिर से मुँह अपना खोलने के लिये कहा।

लड़की ने फिर से अपना मुँह खोल दिया तो उसने नदी में से थोड़ी सी बालू उठायी और उसको उसके दाँत की जगह रगड़ रगड़ कर मल दिया।

आश्चर्य। उसके मुँह में जो दो काली लाइनें थीं वे तो गायब हो गयीं और उनकी जगह उसके बहुत सुन्दर दाँत दिखायी देखने लगे। यह देख कर वह नौजवान तो बहुत खुश हो गया और दोनों खुशी खुशी घर वापस आ गये।

जब उस लड़के के दोनों बड़े भाइयों ने अपने सबसे छोटे भाई को उस लड़की के साथ आते देखा तो वे भागे हुए अपने पिता के पास गये और बोले — "पिता जी, जल्दी आइये, देखिये ज़रा अपने

सबसे छोटे बेटे को। वह तो जानवर दे कर उस बिना दॉत वाली लड़की को अपने साथ घर ले आया है।"

इस बीच जब वह गॉव में आ रहा था तो उसने उस लड़की को अपनी एक बहिन को सौंप दिया ताकि वह उसको उसकी मॉ से मिला सके।

हालॉकि गॉव की सब लड़कियों ने इस अजीब लड़की के बारे में सुन रखा था फिर भी वे उसके चारों तरफ कुछ न कुछ इधर उधर की कहानियॉ कहने के लिये इकट्ठी हो गयीं ताकि वे उसे हॅसा सकें और वे यह देख सकें कि जो लोग उसके बारे में कह रहे थे वह सब सच था कि नहीं।

पहले तो वह लड़की कुछ देर शरमायी रही पर फिर उसने भी उनकी बातों पर हॅसना शुरू कर दिया। लड़कियों ने देखा कि उसके दॉत तो बहुत सुन्दर थे।

उधर वह सबसे छोटा बेटा अपने पिता के पास गया और उसको बताया कि उसने उस लड़की को अपनी पत्नी बनाने का निश्चय कर लिया है और वह उससे जल्दी ही शादी भी कर लेगा।

यह सुन कर उसका पिता अपनी परेशानी नहीं छिपा सका और बोला — "ठीक है मेरे बेटे, पर तुमने उन जानवरों के बदले में एक बिना दॉत वाली लड़की ले ली है और तुम जानते हो कि हम लोग कोई बहुत अमीर आदमी नहीं हैं।"

यह सुन कर वह लड़का बहुत ज़ोर से हॅस दिया। फिर उसने अपने पिता को बताया कि उसने उसके सुन्दर दॉत वापस लाने के लिये क्या किया।

यह सुन कर उसका पिता खुद उस लड़की के पास आया और उससे कहा — "बेटी, तुम बुरा मत मानना और मेरी प्रार्थना सुन लेना जो भी मैं कहूॅ। ज़रा मुझे अपना मुॅह खोल कर तो दिखाओ तो मैं तुमको यह सुन्दर चॉदी का हार दूॅगा।"

लड़की यह सुन कर मुस्कुरा दी तो पिता ने अपनी ऑखों से देखा कि उसके तो दॉत भी थे और वे तो बहुत सुन्दर भी थे।

उसने अपने दूसरे बेटों को बुलाया और उनसे कहा — "देखो तो ओ बेवकूफों, इस लड़की के तो दॉत हैं। बस तुम उनको देख नहीं सके। तुम्हारा छोटा भाई ही उसको अपनी पत्नी बनाने का अधिकारी है। और याद रखना कि वह तुम लोगों से केवल उम्र में ही छोटा है।"

5 एक अच्छा काम दूसरे अच्छे काम...[26]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के घाना देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

कुछ ऐसा कहा जाता है कि बहुत दिनों पहले एक मादा गरुड़[27] रहती थी। और दूसरे गरुड़ों की तरह से वह गरुड़ भी धरती के ऊपर लटकते नीले आसमान में इधर उधर घूमना बहुत पसन्द करती थी।

एक दिन उस गरुड़ ने एक बुढ़िया को एक तंग गली में लॅगड़ाते हुए चलते देखा तो उसकी उत्सुकता बढ़ गयी। वह नीचे की तरफ उड़ी और उसने देखा कि उस बुढ़िया की तो दोनों टॉगों पर घाव हो रहे हैं। इसी लिये वह लॅगड़ा कर भी चल रही थी।

गरुड़ उससे बोली — "ओह बेचारी तुम, तुम्हारे पैरों की तो हालत बहुत ही खराब है तुम अपने पैरों पर खड़ी ही कैसे हो?"

वह बुढ़िया बोली — "मैं तो जबरदस्ती खड़ी हूॅ। मुझे बस थोड़ी ही दूर गॉव के बाजार तक जाना था। मुझे थोड़ा दूध और अनाज खरीदना है।"

---

[26] One Good Turn Deserves Another (Tale No 5) – a folktale from Ashanti Tribe, Ghana, Africa.

[27] Translated for the word "Eagle" – see its picture above.

गरुड़ को यह सुन कर उस पर दया आ गयी। पर यह जानते हुए कि आदमी कितने बेवफा होते हैं उसकी समझ में यह नहीं आया कि वह क्या करे।

फिर भी वह बोली — "अगर तुम आदमी लोग ऐसे नहीं होते जैसे कि तुम लोग हो तो मैं तुम्हारी सहायता जरूर कर देती। पर अगर में तुम्हारी एक बार सहायता कर दूँगी तो मुझे यकीन है कि कल तुम मुझे उतना ही नुकसान पहुँचाओगी।"

बुढ़िया बोली — " नहीं नहीं, कम से कम मैं तो नहीं। मैं ऐसा कभी नहीं करूँगी।"

गरुड़ अच्छे दिल वाली चिड़िया थी सो उसने बुढ़िया की बातों का विश्वास कर लिया और बोली — "अगर जो कुछ भी तुम कह रही हो सच कह रही हो तो मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी। तुम अपनी ऑखें बन्द करके दस तक गिनती गिनो और फिर अपनी ऑखें खोलो।"

बुढ़िया ने अपनी ऑखें बन्द कीं, दस तक गिनती गिनी और फिर अपनी ऑखें खोलीं तो गरुड़ बोली — "अब तुम अपनी घाव वाली टॉगों की तरफ देखो।"

बुढ़िया ने झुक कर अपनी टॉगों की तरफ देखा तो उसने देखा कि उसकी टॉगें तो बिल्कुल ठीक हो गयी थीं। उसकी टॉगों पर तो घाव का एक निशान भी नहीं था जो उसको इतनी तकलीफ दे रहे थे।

गरुड़ उसको धन्यवाद देने का मौका दिये बिना ही बोली — "पर मैं तुम्हारे लिये कुछ और भी करना चाहती हूँ। हालाँकि तुम्हारी टाँगें अब ठीक से काम कर रही हैं फिर भी गाँव यहाँ से बहुत दूर है। तुम अपनी आँखें फिर से बन्द करो, 20 तक गिनती गिनो और फिर उन्हें खोल लो।"

बुढ़िया ने ऐसा ही किया। उसने अपनी आँखें बन्द कीं, 20 तक गिनती गिनी और फिर उनको खोल लिया। तो उसने देखा कि वहाँ का जंगल जो मीलों तक फैला पड़ा था वह तो अब खेतों में बदल गया था। बुढ़िया तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गयी।

पर चील ने उसके आश्चर्य की तरफ ध्यान न देते हुए अपना कहना जारी रखा — "अब यह तो और बहुत अच्छा होता अगर तुमको हर समय ही कोई सहायता और साथ मिल जाये तो। तो ऐसा करो कि अब तुम अपनी आँखें बन्द कर के 30 तक गिनती गिनो और फिर अपनी आँखें खोलो।"

बुढ़िया ने एक बार फिर अपनी आँखें बन्द कीं, 30 तक गिनती गिनी और फिर अपनी आँखें खोल दीं। अबकी बार तो उसके आश्चर्य का ठिकाना ही नहीं रहा जब उसने देखा कि उसके सामने तो वहाँ एक बहुत बड़ा गाँव फैला पड़ा था।

उस गाँव में बहुत सारी झोंपड़ियाँ पास पास बनी थीं। बहुत सारे लोग इधर उधर घूम रहे थे। आदमी लोग खेतों पर जा रहे थे,

स्त्रियॉ अपने अपने घरों के सामने अनाज के दाने निकाल रही थीं, गायें चर रही थीं और मुर्गियॉ इधर उधर अपना खाना ढूँढ रही थीं।

आखीर में गरुड़ ने कहा — “यह सब तुम्हारा है। जाओ आनन्द करो और खुश रहो।”

बुढ़िया तो यह सब देख कर हक्का बक्का रह गयी। वह हकला कर बोली — “धन्यवाद धन्यवाद ओ गरुड़, तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। तुम कितनी दयावान हो। मैं तुमको इसका बदला कैसे चुकाऊँ।”

गरुड़ बोली — “मुझे इसके बदले में कुछ खास नहीं चाहिये। मुझे बस वह पत्ते वाला पेड़ चाहिये जो गॉव की हद के किनारे पर खड़ा हुआ है। क्योंकि अब मेरे घोंसला बनाने और अपने बच्चों को बड़ा करने का समय आ गया है।”

बुढ़िया बोली — “अगर तुमको वाकई और कुछ नहीं चाहिये तो यह तो बहुत छोटी सी चीज है। तुम वह पेड़ ले लो, उस पर अपना घर बनाओ और शान्ति से रहो।”

गरुड़ ने झुक कर उसको नमस्कार किया और अपने पेड़ पर चली गयी। वहॉ जा कर उसने शाखाओं ओर पत्तियों से अपने लिये एक बहुत सुन्दर और मजबूत घर बनाया और उसमें रहने लगी।

कुछ समय बीता तो उसने वहॉ दो अंडे दिये। उसने उन अंडों को ठीक समय तक सेया तो उनमें से दो गरुड़ बच्चे निकले। मॉ गरुड़ अपने बच्चों के लिये तुरन्त ही खाना लाने के लिये उड़ गयी।

इस बीच उस बुढ़िया की पोती[28] भी इस नये गॉव में अपनी दादी के साथ रहने के लिये आ गयी थी। उसकी यह पोती बहुत बिगड़ी हुई थी। वह सुबह दोपहर शाम हर समय बोलती रहती "बू-हू-हू, बू-हू-हू"।

जब उसकी दादी यह सुनते सुनते थक गयी तो एक दिन उसने उससे पूछा — "यह तू हर समय क्या करती रहती है – बू-हू-हू, बू-हू-ह?"

पोती बोली — "मुझे भूख लगी है।"

"भूख लगी है? पर तुझको तो यहॉ किसी बात की कमी नहीं है फिर तुझे भूख क्यों लगी है।"

"पर मुझे एक खास चीज़ की भूख लगी है। मुझे बहुत बढ़िया वाले गरुड़ के बच्चे खाने हैं। मुझे उन्हीं की भूख लगी है।"

यह सुन कर बुढिया तो बहुत आश्चर्य में पड़ गयी। अब वह क्या करे। उसने सोचा कि वह बहाने बना कर शायद कुछ समय गुजार दे सो वह बोली — "पर बेटी मुझे गरुड़ के बच्चे मिलेंगे कहॉ?"

वह सिरफिरी लड़की बोली — "मुझे चील का एक बच्चा खाने के लिये दो नहीं तो मैं मर जाऊॅगी।"

---

[28] Translated for the word "Grand-daughter" – daughter of one's son od daughter.

यह सुन कर तो दादी बहुत डर गयी। उसने गाँव के लोगों को बुलाया और उनसे गाँव के किनारे पर लगा पेड़ काटने के लिये कहा ताकि वह उस गरुड़ के बच्चों को पकड़ सके।

आदमियों ने अपनी अपनी कुल्हाड़ियाँ उठा लीं और उनको उस पेड़ के तने पर मारना शुरू किया।

इस मार से चील के घोंसले में से दो बच्चों में से बड़ा वाला बच्चा नीचे कूद गया और अपनी माँ को अपनी सहायता के लिये चिल्लाने लगा — "सैंगो ओह सैंगो, ओह सैंगो सैंगो।"

उसकी माँ दूर उड़ कर अपने बच्चों के लिये खाना ढूँढ रही थी। जब उसने अपने बेटे की चिल्लाने की आवाज सुनी तो वह बिजली की तेजी से वहाँ भागी आयी और पेड़ पर आ कर बैठ गयी और चिल्लायी "सैंगूरी"।

पेड़ बस उस समय गिरने ही वाला था कि चील का वह चिल्लाना सुन कर वह सीधा खड़ा हो गया और उस पर लगे कुल्हाड़ी के निशान भी भर गये।

उसी समय आदमियों के पैरों के नीचे की धरती फट गयी और वे सब आदमी जो उस पेड़ को काट रहे थे उस फटी धरती में गिर पड़े। आदमियों के गिरने के बाद धरती का वह छेद बन्द हो गया।

गरुड़ ने अपने बच्चों को शान्त किया, तसल्ली दी, खाना खिलाया और बोली — "अब मुझे शिकार के लिये वापस जाना

चाहिये। ये लोग तो कुछ पागल थे पर वह बुढ़िया जो इस गॉव की मालकिन है वह मेरी दोस्त है।

वह जो कुछ भी करना चाहे करे पर तुम चिन्ता मत करना। तुम्हें उससे डरने की कोई जरूरत नहीं है।"

यह कह कर वह वहॉ से उड़ गयी।

इस बीच उस बुढ़िया की पोती ने फिर से चिल्लाना शुरू कर दिया और फिर से अपना जादू फेंकना शुरू कर दिया। और वह यह सब इतनी ज़ोर ज़ोर से कर रही थी कि बुढ़िया को फिर से परेशानी होने लगी।

बुढ़िया ने फिर से गॉव के कुछ और आदमी बुलाये और उनसे गरुड़ के बच्चों को लाने के लिये कहा। वे उस पेड़ के पास गये और उसको काटना शुरू किया। एक बार फिर चील का बड़ा बच्चा पेड़ से कूद गया और अपनी मॉ को सहायता के लिये पुकारने लगा — "सैंगो ओह सैंगो, ओह सैंगो सैंगो।"

वह बेचारा अपनी मॉ को पुकारता रहा पर इस बार उसकी मॉ दूर थी सो वह उसकी पुकार नहीं सुन सकी। पेड़ कट कर जमीन पर गिर पड़ा। लोगों ने गरुड़ के दोनों बच्चों को उठाया और उनको ले जा कर बुढ़िया को दे दिया।

पहला बच्चा तो उन्होंने बुढ़िया को दे दिया पर जब वह दूसरा बच्चा उसको दे रहे थे, जो बड़ा वाला था, वह किसी तरह से उनकी

पकड़ से छूट कर भाग निकला और एक बड़ी झोंपड़ी की छत पर जा कर बैठ गया। लोग उसको पकड़ने की कोशिश करते रहे।

इतनी देर में बुढ़िया ने उस छोटे वाले बच्चे को भूना और उसे अपनी पोती को खाने के लिये दे दिया।

कुछ देर बाद ही गरुड़ वापस आ गयी। उसने देखा कि उसका पेड़ तो गिर चुका था। उसका घोंसला भी बरबाद हो चुका था। वह तुरन्त ही गॉव की तरफ उड़ चली।

वहॉ जा कर उसने देखा कि उसका बड़ा बेटा एक झोंपड़ी की छत पर बैठा है और उसके चारों तरफ कुछ आदमी उसको पकड़ने के लिये आवाजें लगा रहे हैं। उसने अपने बेटे से पूछा कि क्या हुआ था तो उसके बेटे ने उसे सब बता दिया।

यह सब सुन कर उसने अपने बेटे को उठाया और एक सुरक्षित पहाड़ पर ला कर बिठा दिया। उस दिन के बाद से वह पहाड़ चीलों का घर बन गया। वहॉ से उड़ कर वह गॉव में गॉव की मालकिन बुढ़िया से मिलने गयी।

उसने बड़े गुस्से से उस बुढ़िया से कहा — "तुम तो बहुत ही अच्छी निकलीं।" फिर वह कुछ ऊपर उड़ी और बोली "सैंगूरी"। उसके यह कहते ही वहॉ रह रहे सारे आदमी गायब हो गये।

वह फिर दोबारा कुछ ऊपर उड़ी और बोली "सैंगूरी"। अबकी बार वहॉ की सारी झोंपड़ियॉ जमीन पर गिर पड़ीं। वह फिर बोली "सैंगूरी" तो अबकी बार जहॉ वह गॉव था वहॉ फिर से जंगल बन

गया। उसने फिर कहा "सैंगूरी" और उस बुढ़िया की एक टॉग पर फिर से घाव हो गये।

वह चील उस बुढ़िया को जो कुछ भी सजा दे सकती थी वह देने के बाद बोली — "तुम्हारे लिये यही ठीक है कि तुम इसी तरीके से रहो।" कह कर वह पहाड़ की चोटी पर जा कर हमेशा के लिये गायब होगयी।

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि "तुम भी दूसरों के साथ वैसा ही करो जैसा कि तुम उनसे अपने लिये करवाना चाहते हो और उनको धोखा मत दो इससे दूसरे के दिल में तुम्हारा विश्वास बना रहता है।"

6 कुत्ता बिल्ला कबूतर और जादू की अँगूठी[29]

एक बार की बात है कि अफ्रीका के घाना देश में एक स्त्री रहती थी। वह उतनी ही गरीब भी थी जितनी बदकिस्मत थी। वह विधवा थी और उसके सब बच्चे भी एक एक करके मर चुके थे। कुछ बीमारी से, कुछ ऐक्सीडैन्ट से और कुछ लड़ाई में।

अब उसके पास केवल उसका एक ही बेटा रह गया था और वह था उसका सबसे छोटा बेटा। वही उसकी दुखी ज़िन्दगी का अकेला सहारा था। उसका वह बेटा बहुत ही दयालु और अच्छे दिल वाला आदमी था।

एक दिन उसका बेटा रोज से पहले ही जाग गया। वह अपनी माँ के पास गया और उससे बोला — "माँ आज मुझे थोड़ा सा सोने का चूरा दो मैं समुद्र के किनारे वाले गाँव से थोड़ा सा नमक खरीद कर लाऊँगा।"

माँ को अपने बेटे पर पूरा विश्वास था सो उसने पूछा — "कितना चाहिये?"

बेटा बोला — "बस एक चुटकी।"

उसकी माँ ने उसको एक चुटकी सोने का चूरा दे दिया। उसने उन चीज़ों की एक गठरी बनायी जिनकी उसको अपनी यात्रा के

---

[29] The Dog, the Cat, the Pigeon and the Magic Ring (Tale No 6) – a folktale from Ashanti Tribe, Ghana, Africa.

लिये जरूरत थी और वह उस गॉव को चल दिया जहॉ से उसको नमक लाना था।

रास्ते में उसको एक आदमी मिला जो अपना एक काला और सफेद धब्बे वाला कुत्ता बाजार में बेचने के लिये ले कर जा रहा था। लड़के को कुत्ता बहुत अच्छा लगता था सो वह उस आदमी से बोला — "मैं इस कुत्ते को खरीदना चाहता हूॅ। क्या तुम मुझे अपना यह कुत्ता बेचोगे?"

वह आदमी बोला — "क्यों? तुम तो बहुत छोटे लड़के हो तुम इसकी कीमत कैसे दोगे?"

"तुम इसकी चिन्ता न करो बस यह बताओ कि यह है कितने का?"

"ठीक है। तुम इसके लिये एक चुटकी भर सोने का चूरा दे दो।"

"हा हा हा हा। लो यह लो एक चुटकी भर सोने का चूरा और यह कुत्ता मुझे दे दो।" कह कर उसने उस आदमी को सोने का चूरा दिया, उससे उसका कुत्ता लिया और घर वापस आ गया।

जब उसकी मॉ ने देखा कि उसका बेटा तो इतनी जल्दी वापस आ गया और वह भी एक कुत्ते के साथ तो उसको बहुत अजीब लगा। उसने पूछा — "तुमने उस समुद्र के पास वाले गॉव से नमक नहीं खरीदा, क्यों?"

"क्योंकि मैंने उस सोने के चूरे से यह सुन्दर कुत्ता खरीद लिया।"

मॉ ने एक लम्बी सॉस लेते हुए कहा "उफ़।" कुछ दिन बाद वह इस बात को भूल गयी।

पर करीब एक महीने बाद उस लड़के ने फिर से अपनी मॉ से कहा — "मॉ मुझे थोड़ी सा सोने का चूरा और दो। मैं आज यह देखने के लिये बाजार जाना चाहता हूॅ कि शायद कहीं कोई अच्छा सौदा पट जाये।"

"मुझे डर है कि तुम उसे भी पिछली बार की तरह से बरबाद कर दोगे।"

"मॉ चिन्ता न करो, तुम देखोगी कि मैं तुमको शिकायत का कोई मौका नहीं दूॅगा।"

क्योंकि वह अपने बेटे को बहुत प्यार करती थी इसलिये उसने उसको फिर से सोने का चूरा दे दिया। और वह लड़का फिर से चल दिया।

रास्ते में उसको एक आदमी मिला जो एक बिल्ले को अपनी गोद में लिये बैठा था। वह एक सुन्दर सा बिल्ला था सो वह लड़का उससे यह कहे बिना न रह सका — "मुझे यह बिल्ला खरीदना है। मुझे बिल्लों की चंचलता बहुत अच्छी लगती है। यही एक जानवर है जो अपने पैरों पर कूदता है।"

बिल्ले के मालिक ने कहा — "मैं यह बिल्ला तुम्हें बिल्कुल नहीं बेच सकता। मैंने इसे अभी अभी इसलिये खरीदा है ताकि यह मेरे सोने के कमरे में से चूहों को भगा सके। और अगर मैं तुमको इसे बेच भी दूँ तो तुम इसकी कीमत कैसे चुकाओगे?"

"क्या तुम यह इसलिये कह रहे हो क्योंकि मैं केवल एक लड़का हूँ। उसकी तुम चिन्ता न करो। यह बताओ कि इसका तुम कितना पैसा लोगे?"

आदमी बोला — "अगर तुमको यह वाकई चाहिये तो तुम इसका दो चुटकी सोने का चूरा दाम दे दो।"

लड़के ने उसको दो चुटकी सोने का चूरा दिया, उससे बिल्ला लिया और अपने घर चला आया। उसकी माँ फिर से बहुत आश्चर्यचकित हो गयी कि उसका बेटा इतनी जल्दी घर वापस कैसे आ गया।

"देखो माँ, मैं कितना सुन्दर बिल्ला ले कर आया हूँ। यह मुझे इतना सुन्दर लगा कि मैं अपने आपको इसे खरीदने से रोक ही नहीं सका।"

"बेटा मैं तो सोचती थी कि तुम दूसरों से बहुत अलग हो।" कह कर उसने उसको बहुत डाँटा पर बाद में फिर उसको उसकी बात माननी ही पड़ी।

इस घटना के बाद फिर से करीब 40 दिन निकल गये कि एक दिन फिर वह अपनी माँ के पास गया और बोला — "माँ मुझे कुछ

सोने का चूरा और दो अबकी बार मैं अपना कुछ काम शुरू करना चाहता हूँ।"

मॉ बोली — "बेटा मेरे पास अब केवल तीन चुटकी ही सोने का चूरा रह गया है। तुम उसे चाहे जहॉ ले जाओ। मगर याद रखना कि इसके बाद बस सब खत्म।"

लड़का बोला — "मॉ मेरे ऊपर भरोसा रखो।"

अगले दिन वह अपना सामान ले कर वहॉ से चल दिया। वह अभी थोड़ी दूर ही गया होगा कि उसको एक शिकारी मिला जिसके पास एक कबूतर था। लड़के को लगा कि वह शिकारी उस कबूतर को पकड़ कर अपने घर पकाने के लिये ले जा रहा था।

वह शिकारी से बोला — "मैं तुम्हारा यह कबूतर खरीदना चाहता हूँ। मुझे जब ये कबूतर आवाज निकालते हैं तो बहुत अच्छे लगते हैं।"

शिकारी बोला — "पर मैं इस कबूतर को बेचना नहीं चाहता।"

लड़का बोला — "तुम चिन्ता न करो मैं तुम्हें इसके अच्छे पैसे दूँगा।"

"क्या सचमुच? अगर मैं इसको बेचूँ तो मुझे इसके लिये कम से कम तीन चुटकी सोने का चूरा चाहिये।"

"लो यह लो तीन चुटकी सोने का चूरा।" लड़के ने उसको तीन चुटकी सोने का चूरा दिया, उससे कबूतर लिया और घर वापस आ गया।

कोई भी यह सोच सकता है कि जैसे ही उसकी माँ ने उसको अपने कन्धे पर कबूतर रखे आते देखा होगा तो उस बेचारी का क्या हाल हुआ होगा।

वह बोली – "बेटा यह तुमने क्या किया? अब तो हमारे पास कुछ भी नहीं है।"

लड़के को पता ही नहीं कि वह अपनी माँ से क्या कहे। अपनी करनी पर अफसोस करता हुआ वह अपने घर के दरवाजे के बाहर बैठ गया। कुत्ता उसके पैरों के पास बैठा था, बिल्ली उसकी गोद में बैठी थी और कबूतर उसके कन्धे पर बैठा था।

वह वहाँ बैठा बैठा सोच रहा था "अब मैं क्या करूँ। अपने इन बेकार के विचारों को किस तरह सुधारूँ? कैसे अपनी माँ की सहायता करूँ?" और जब वह अपनी गलती महासूस कर रहा था तो उसने अपने कान में एक धीमी सी आवाज सुनी।

यह कबूतर था – "शान्त हो जाओ। मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।" कबूतर ने इस बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया कि उसके कहने का लड़के पर क्या असर पड़ा।

वह आगे बोला — "मेरे अच्छे साथी, तुमको मालूम होना चाहिये कि मेरे अपने गाँव में मैं एक बहुत बड़ा सरदार था। एक दिन मैं ऐसे ही घूमने के लिये कहीं जा रहा था कि इस शिकारी ने मुझे पकड़ लिया।

अगर तुमने मुझे न खरीद लिया होता तो अब तक तो मैं मर ही गया होता और पका लिया गया होता। इसलिये तुम मुझे मेरे गाँव वापस ले चलो तो वहाँ मेरे लोग तुम्हारा ज़ोर शोर से स्वागत करेंगे।"

यह सुन कर लड़का कुछ समझ नहीं पाया। वह बोला — "कहीं ऐसा तो नहीं है कि तुम मुझे कोई कहानी बता कर मेरे पास से भाग जाना चाहते हो।"

"अगर तुम मेरा विश्वास नहीं करते तो तुम मेरे एक पैर में रस्सी बाँध दो जिससे मैं उड़ कर कहीं नहीं जा पाऊँगा।"

सो लड़के ने उसके एक पैर में रस्सी बाँधी और जिधर को भी वह कबूतर उसको ले गया वह उस कबूतर के पीछे पीछे चलता चला गया।

जब वे गाँव की हद के पास पहुँचे तो वहाँ दो बच्चे रंगीन कंचों[30] से खेल रहे थे। चिड़िया को देखते ही वे तुरन्त ही उठे और वहाँ से चिल्लाते

[30] Translated for the word "Marbles" – see their picture above. They are little glass balls.

हुए गॉव की तरफ भागने लगे "सरदार आ गये। सरदार वापस आ गये।"

यह सुन कर वहॉ के सारे आदमी और स्त्रियॉ उन दोनों से मिलने के लिये भागे। वे खुशी से चिल्ला रहे थे और उनके हाथों में शाही झंडे थे जो वे जब लेते थे जब वे राजा को लेने के लिये जाते थे। उन्होंने सबने मिल कर बहुत खुशियॉ मनायी।

कबूतर ने उनको फिर अपनी सारी कहानी बतायी। साथ ही यह भी बताया कि उस लड़के ने उसकी जान बचाने के लिये अपना आखिरी सोना तक दे दिया। यह सुन कर तो वहॉ के सारे बड़े और छोटे लोग उस लड़के के बड़े कृतज्ञ हुए।

पहले तो रानी मॉ और गॉव के बड़े लोगों ने लड़के को एक घड़ा भर कर सोने का चूरा दिया। उसके बाद एक जादूगर[31] आया। उसने अपनी ॲगुली में से एक ॲगूठी निकाली और उसे लड़के को देते हुए कहा — "लो, यह ॲगूठी लो। तुम इससे जो कुछ भी मॉगोगे यह ॲगूठी तुमको वही दे देगी।"

लड़का वहॉ तीन दिन और तीन रात तक मेहमान की तरह से रहा लेकिन फिर उसके जाने का भी दिन आया।

[31] Translated for the word "Witch Doctor". He is like Ojha in India who works on Bhoot, Pret and Spirits

उस दिन उसने कबूतर को एक बहुत ही मीठा सा विदा का सन्देश दिया। फिर उसने एक बड़ी सी भेड़ की खाल में सोने का चूरा भरा और अपने घर अपनी माँ के पास चला गया।

जब वह घर पहुँचा तो उसकी माँ अनाज के दाने निकाले जाने वाली जगह पर बैठी मुर्गियों को दाना खिला रही थी। वह दौड़ा दौड़ा गया और जा कर अपनी माँ को गले लगाया। उसने उसको अपना लाया सोने का चूरा और जादू की ॲगूठी भी दिखायी।

उसने उन सबके बारे में उसको जल्दी जल्दी बता दिया ताकि वह बेचारी ज़्यादा आश्चर्य से कहीं बेहोश ही न हो जाये। फिर वह बोला — "अब मैं जंगल जाता हूँ और इस ॲगूठी की सहायता से अपने रहने के लिये एक नया गाँव बसाता हूँ।"

वह घर के बाहर चला गया और घने जंगल में घुस गया। वहाँ भी वह काफी दूर तक चलता रहा। चलते चलते वह एक ऐसी जगह आ गया जहाँ जंगल बहुत ही घना था और वहाँ से आगे जाना मुमकिन ही नहीं था।

वहाँ उसने अपनी जादू की ॲगूठी जमीन पर रखी और उससे

कहा — "ॲगूठी, यहाँ पर एक बहुत बड़ी खुली जगह बनाओ जिसमें बहुत सारे पेड़ और ब्लैक बैरी[32] की झाड़ियाँ हों।"

---

[32] Blackberry is a kind of small fruit without any stone in it – see its picture above. The bigger black fruit is blackberry.

तुरन्त ही वहॉ के जंगली पेड़ नीचे गिर पड़े, जड़ से उखड़ गये और वहॉ की झाड़ियों को कुचल डाला। लड़के ने फिर ॲगूठी को हुकुम दिया — "अब इन सबको इकट्ठा कर के जला दो।"

पलक झपकते ही सारी लकड़ियॉ, पेड, झाड़ियॉ उस साफ जगह में इकट्ठा हो गये और जल कर राख हो गये। लड़के ने फिर कहा — "ॲगूठी, अब यहॉ इस साफ जमीन पर बहुत सारे मकान बना दो।" तुरन्त ही उस जमीन पर छोटे बड़े मकान मुशरूम की तरह से निकलने लगे।

आखीर में उसने उसको कहा — "ओ ॲगूठी, इन घरों को खाली मत छोड़ो बल्कि इन सबको लोगों से भर दो।" तुरन्त ही जादू की तरह उन सब घरों में लोगों की चहल पहल शुरू हो गयी। ऐसा लग रहा था जैसे वे हमेशा से वहीं रहते आ रहे हों।

लड़का यह सब देख कर बहुत खुश हुआ। अब उसने अपने आपको उस गॉव का सरदार घोषित कर दिया।

इस नये गॉव से एक दिन की दूरी पर अनन्सी मकड़ा[33] रहता

था। एक दिन उसने इस खुश गॉव के बारे में सुना जो जादुई ढंग से जंगल के बीच में अपने आप ही प्रगट हो गया था।

---

[33] Anansi Spider is the most important and popular character of West Africam folktales. He is always a trickster, greedy and hungry – see his picture above.

अनन्सी उस गॉव के बारे में इतना ज़्यादा उत्सुक हो गया कि उसने निश्चय किया कि वह खुद जा कर उसको देखेगा। सो वह उस लड़के से मिलने चल दिया।

वहॉ जा कर इधर उधर देखते हुए वह उस लड़के से बोला — "बधाई हो तुमको। आखिर तुम खुशकिस्मत हो ही गये। मुझे याद है कि पहले तुम बहुत गरीब थे और पिछली बार तो जब मैंने तुमको देखा था तब तो तुम पतले भी बहुत थे। पर यह सब तुमने किया कैसे?"

वह लड़का सच बोलता था कुछ छिपाता नहीं था सो उसने उसको भी सब कुछ सच सच बता दिया। यह सब सुन कर अनन्सी उससे जलने लगा। उसकी इच्छा हुई कि वह उस लड़के की ॲगूठी ले ले पर बाहर से उसने ऐसा दिखाया कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

उसने बड़े प्यार से लड़के को विदा कहा ओर अपने गॉव वापस चला गया।

गॉव पहुॅच कर उसने अपने एक भतीजे[34] को बुलाया और उससे कहा — "भतीजे, मेरा एक काम को। तुम जंगल में अचानक प्रगट हुए उस नये गॉव में जाओ और उसके नौजवान सरदार से मिलो। उसको तुम यह एक घड़ा भर कर शराब भेंट में देना और उससे दोस्ती करना। फिर जितनी जल्दी हो सके उसकी ॲगूठी चुरा लाना।"

---

[34] Translated for the word "Nephew". In English it may mean anything – brother's son or sister's son.

उसका वह भतीजा अपने चाचा की तरह ही चालाक था। वहॉ उसने किसी भी चीज़ के बारे में कुछ भी बात नहीं की। बस उस नौजवान सरदार के लिये शराब ले कर सीधा उस नये गॉव की तरफ चल दिया।

अनन्सी का भतीजा और वह नौजवान सरदार दोनों जल्दी ही बहुत अच्छे दोस्त बन गये। उस नौजवान सरदार ने अनन्सी के भतीजे से कहा कि वह उस गॉव के मेहमान की तरह से उसके पास कितने भी दिन ठहर सकता है। सो अनन्सी का भतीजा उसके पास ही ठहर गया।

तीन दिन निकल गये। चौथे दिन सुबह सरदार तैरने के लिये नदी पर जाना चाहता था सो उसने अपनी ॲगूठी उतार कर मेज पर रख दी और तैरने चला गया।

अब जब अनन्सी का भतीजा वहॉ अकेला रह गया तो उसने वह ॲगूठी उठायी और अपने चाचा के गॉव जितनी तेज़ी से भाग सकता था भागा चला गया।

जैसे ही अनन्सी के हाथ में वह जादुई ॲगूठी आयी उसने ॲगूठी को हुकुम दिया कि वह उस नौजवान सरदार के नये गॉव से भी ज़्यादा बड़ा और सुन्दर गॉव बना दे। पल भर में ही उसकी यह इच्छा पूरी कर दी गयी।

इस बीच वह लड़का नदी से तैर कर घर वापस आ गया। उसने देखा कि उसकी ॲगूठी और उसका मेहमान दोनों ही गायब

हैं। उसने उन दोनों को ही ढूँढने की बहुत कोशिश की पर उसको वे दोनों ही नहीं मिले।

उसको बहुत चिन्ता हुई तो उसने सलाह के लिये जंगल की आत्मा[35] को बुलाया। जंगल की आत्मा आया और बोला — "तुम हर एक पर विश्वास कर लेते हो इसी लिये तुम बेवकूफ बन जाते हो। अनन्सी मकड़े ने तुम्हारी ॲगूठी चुराने के लिये अपना भतीजा तुम्हारे पास भेजा था और अब वह ॲगूठी उसके पास है।

उस ॲगूठी की सहायता से उसने भी एक बहुत बड़ा गॉव बसा लिया है जो तुम्हारे गॉव से दोगुना बड़ा है और तुम्हारे गॉव से भी ज़्यादा सुन्दर है।"

"इसका मतलब यह है कि वही मेरी ॲगूठी चुरा कर ले गया है। पर अब आप मुझे यह तो बताइये कि मैं अपनी ॲगूठी उससे वापस कैसे लूँ?"

"अब तुम अपना कुत्ते ओकामैन और अपने बिल्ले ओका[36] को अनन्सी के घर भेजो। वे ही तुम्हारी इस समस्या को सुलझा सकते हैं।" इतना कह कर जंगल की आत्मा वहॉ से चला गया।

लड़का अपने घर गया और अपने कुत्ते और बिल्ले को बुलाया ताकि वह उनको उनका काम समझा सके।

---

[35] Spirit of the Forest

[36] Ocraman Dog and Ocra Cat

इस बीच अनन्सी भी एक आत्मा के पास गया तो उसने उसको दो आने वालों के बारे में चौकन्ना कर दिया। यह सुन कर उसने अपना प्लान बनाया।

उसने बहुत बढ़िया और बारीक पिसा मॉस लिया, उसमें एक रस मिलाया जिससे जो कोई भी उसे खाता वह गहरी नींद सो जाता। यह करके उसने उस मॉस को अपने घर तक आने वाली सड़क पर बिखेर दिया और उन आने वालों के इन्तजार में बैठ गया।

ओकामैन और ओका दोनों ही अनन्सी के घर के लिये चल पड़े थे और चलते चलते वे अब उस जगह पर आ गये थे जहॉ से सड़क दो तरफ जाती थी।

वहॉ आ कर उन्होंने पहले एक तरफ सूँघा फिर दूसरी तरफ सूँघा। तुरन्त ही उन दोनों को उस मॉस की खुशबू आ गयी जो अनन्सी ने बॉयी तरफ की सड़क पर बहुत सारा बिखराया हुआ था।

बिल्ला बोला — "यहॉ कुछ अजीब सा है जो मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। चलो दॉयी तरफ से चलते हैं।"

पर कुत्ता मॉस की खुशबू को नहीं छोड़ सका। उसने बिल्ले की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और वह बॉयी तरफ की सड़क ले कर चल दिया। रास्ते में उसको बहुत सारा मॉस मिल गया तो उसने उसे तुरन्त ही पेट भर कर खा लिया। उसको खाते ही तो उसको सो ही जाना था सो उसे खाते ही वह सो गया।

पर बिल्ले ने दॉयी सड़क ली और कुछ देर बाद ही वह अनन्सी के गॉव पहुॅच गया। वहॉ जा कर उसने अनन्सी का घर ढूॅढा और वह उसमें अन्दर चला गया। उसने देखा कि अनन्सी तो पत्तियों के मुलायम कालीन पर पैर फैला कर सो रहा है।

मौका अच्छा था। बिल्ले ने ॲगूठी के लिये उसका सारा घर ढूॅढ मारा पर उसको वह ॲगूठी नहीं मिली।

लेकिन फिर उसको वह ॲगूठी एक मजबूत बक्से में रखी मिल गयी। पर जैसे ही वह वह ॲगूठी निकालने लगा तो उसे लगा कि अनन्सी तो जागने वाला है सो उसने ॲगूठी वापस रख कर वह बक्सा बन्द कर दिया और वहीं पास में छिप गया।

पर तभी एक छोटा सा चूहा उसके पास से गुजरा तो उसने उसे तुरन्त ही अपने पंजे में दबोच लिया।

चूहा गिड़गिड़ाया — "मेहरबानी करके मुझे मत खाओ।"

बिल्ला बोला — "यह तो मैं सोच भी नहीं सकता जब तक कि तुम मेरी सहायता नहीं करोगे।"

"सहायता? कैसी सहायता? मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूॅगा। बताओ क्या सहायता चाहिये?"

"क्या तुमको वह मजबूत बक्सा दिखायी दे रहा है? इस अनन्सी मकड़े ने मेरे मालिक से चुरायी हुई एक ॲगूठी उसमें रखी हुई है। तुम जाओ और बिना कोई आवाज किये उसमें से वह ॲगूठी निकाल कर मुझे ला कर दे दो। मैं तुमको नहीं खाऊॅगा।"

चूहे को दोबारा नहीं कहना पड़ा। वह बिना कोई आवाज किये वहाँ से खिसक गया और उस मजबूत बक्से के ऊपर पहुँच गया। तुरन्त ही उसने उस बक्से को अपने तेज़ दाँतों से काटना शुरू कर दिया।

जैसे ही उसने उसमें छेद कर लिया वह उस बक्से में घुस गया, अपनी पूँछ में वह अँगूठी फँसायी और बिल्ले के पास वापस आ गया। ओक्रा ने चूहे को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अपने वायदे के मुताबिक उसको छोड़ दिया।

बिल्ला वह अँगूठी ले कर उसी जगह पर वापस आया जहाँ वह कुत्ते को छोड़ कर गया था। वहाँ आ कर उसने देखा कि कुत्ता तो बड़ी गहरी नींद सो रहा था।

वह बोला — "सो तुम यहाँ सो रहे हो। और यहाँ जो इतना सारा माँस पड़ा हुआ था वह कहाँ है?"

ओक्रामैन बोला — "इसका क्या मतलब है कि मैं सो रहा था? मुझे बस कुछ अच्छा सा नहीं लग रहा था सो मैं आँखें बन्द किये पड़ा था। और जहाँ तक माँस का सवाल है माँस तो यहाँ कोई था ही नहीं। हम लोगों को गलती लग गयी थी कि यहाँ माँस था।"

बिल्ले को लगा कि ओक्रामैन अपनी गलती छिपाने के लिये झूठ बोल रहा था पर उसने ऐसा दिखाया जैसे उसने उसका विश्वास कर लिया हो।

फिर कुत्ते ने उससे अँगूठी के बारे में पूछा तो उसने उसको सब कुछ सच सच बता दिया। सुन कर ओक्रामैन कुत्ता बोला — "बहुत अच्छे। पर अब हमको तो अभी नदी पार करनी है जहाँ वह सबसे गहरी है। तुम तो और सभी बिल्लों की तरह से पानी पसन्द नहीं करते तो तुम तो उसे कूद कर ही पार करोगे।

इस तरह कूद कर नदी पार करने में वह अँगूठी तुम्हारे पास से गिर भी सकती है। इसलिये अच्छा यही होगा अगर तुम उसे मुझे दे दो। मुझे तैरना आता है। मैं उसको अपने मुँह में रख लूँगा। वहाँ वह सुरक्षित रहेगी।"

बिल्ले को लगा कि कुत्ता ठीक कह रहा था सो उसने वह अँगूठी कुत्ते को दे दी।

जब वे दोनों नदी के किनारे पहुँचे तो कुत्ता तो नदी में कूद गया ओर तैरने लगा पर बिल्ला एक बड़े से पेड़ के तने पर कूद गया जो नदी के बहाव में बहा जा रहा था।

वहाँ से उसने एक और कूद लागयी और वह नदी के दूसरे किनारे पर पहुँच गया। पर कुत्ता अभी नदी के बीच में ही था कि वह तैरते तैरते थकने लगा सो उसने साँस लेने के लिये अपना थोड़ा सा मुँह खोला कि वह अँगूठी उसके मुँह से निकल गयी ओर नदी के पानी में डूब गयी।

जैसे ही कुत्ता नदी के दूसरे किनारे पर पहुँचा तो ओका बिल्ले ने उससे पूछा — "अँगूठी कहाँ है?"

ओकामैन कुत्ता कुछ बीमार सा बोला — "वह नदी के बीच में मेरे मुँह से नीचे गिर पड़ी।"

इस पर पहले तो ओका बिल्ला बहुत गुस्सा हुआ पर फिर बाद में कुछ शान्त हो गया। पर तभी एक बड़ी मछली किनारे पर आयी। ओका बिल्ले ने उसको तुरन्त ही पकड़ लिया और उसकी पूँछ पकड़ कर उससे पूछा — "क्या तुमने इत्तफाक से कोई अँगूठी देखी है?" कहते हुए उसने उसकी पूँछ को अपने पंजे में और कस कर पकड़ लिया।

अब उस मछली के पास ओर कोई चारा नहीं था कि वह अपना मुँह खोले। और जैसे ही उसने अपना मुँह खोला अँगूठी उसके मुँह से बाहर निकल पड़ी। ओका बिल्ले ने तुरन्त ही अँगूठी उठा ली और मछली को वापस पानी में फेंक दिया।

अब ओकामैन कुत्ते की बारी थी। उसने ओका बिल्ले से प्रार्थना की कि वह मालिक से जा कर यह न कहे कि रास्ते में क्या हुआ था। पर बिल्ले ने उसको कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि वह उससे बहुत गुस्सा था।

सो जब वे दोनों घर वापस आये तो कुत्ते ने यह सोच कर कि बिल्ला मालिक से सब कुछ कह देगा मालिक से इस तरह से कुछ कहानी बनायी जैसे उसकी सारी मुश्किलों का जिम्मेदार बिल्ला ही था।

पर लड़के ने जंगल की आत्मा से सच जान लिया था इसलिये वह कुत्ते के किसी भी बहाने को नहीं सुन रहा था। उसने कुत्ते को बहुत डाँटा और बिल्ले को इनाम दिया। उसने बिल्ले को घर के अन्दर रखा जहाँ वह हमेशा गरम रहता।

7 मारने वाली डंडी[37]

यह बहुत दिनों की बात नहीं है जब अनन्सी मकड़ा अपनी पत्नी असो और तीन बच्चों के साथ जंगल के पास वाले एक घर में रहता था। उसके बच्चों के नाम थे – पतली–टॉग, पूरा–पेट और बड़ा–सिर।[38] एक अच्छे पिता होने के नाते वह रोज सुबह सुबह खाना ढूँढने के लिये निकल जाता था।

एक दिन जब वह अपना खाना ढूँढने निकला हुआ था तो एक झाड़ी के पास उसको एक बहुत ही चमकती हुई और बहुत ही साफ प्लेट मिली। उसको देखते ही वह बोला — "वाह, कितनी सुन्दर प्लेट है।"

पर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब वह प्लेट कुछ नाराजी से बोली — "मेरा नाम सुन्दर नहीं है।"

इस पर अनन्सी ने उत्सुकता से पूछा — "तो फिर तुम्हारा नाम क्या है?"

प्लेट बोली — "मेरा नाम है "भरो और खाओ"।"

यह सुन कर अनन्सी ने कहा — "अच्छा भरो तो फिर देखते हैं।" तुरन्त ही वह कटोरा गरम सूप से भर गया।

---

[37] The Spanking-Switch (Tale No 7) – a folktale from Ashanti Tribe, Ghana, Africa.

[38] Asso was Anansi's wife's name. His children's names were – Skinny-Legs, Full-Belly and Big-Head.

अनन्सी ने भी अपना समय बरबाद नहीं किया और तुरन्त ही उस सूप को सारा का सारा पी गया।

सूप पी कर उसने अपने भरे हुए पेट पर हाथ फेरा और प्लेट से कहा — "तुम तो एक जादू की चीज़ हो और हर उस चीज़ की तरह जो जादू की होती है उसकी ताकत को भी लेने वाला कुछ होता है। तो तुम मुझे वह बताओ कि वह क्या है।"

प्लेट बोली —"यह तो तुम ठीक कह रहे हो। मुझे बन्दूक की नली बन्द करने वाली रुई से और छोटे कैलेबाश[39] के प्याले से डर लगता है।

अनन्सी बोला — "ठीक है।" और उस प्लेट को ले कर चल दिया।

जब वह घर वापस आया तो वह सबकी ऑख बचाता हुआ अपने घर के सबसे ऊपर वाले कमरे[40] में गया और उस प्लेट को वहॉ छिपा कर रख दिया। उसके बाद वह चुपचाप

---

[39] Calabash is the dried outer skin of a pumpkin like vegetable. It may be used to keep dry and wet things and looks like clay pitcher of India. It comes in many sizes and shapes – see the picture above of kits one kind.

[40] Translated for the Word "Attic". Attic is a room or space that is just below the roof of a building and that is often used to store things, but sometimes it is used to live there if it is big enough. Normally it is in a conical shape – see its picture above.

फिर से जंगल की तरफ चला गया। वहाँ उसने खाना इकट्ठा किया और उसे घर ले कर आ गया।

उसकी पत्नी असो ने उसे पकाया और पका कर सबको खाने के लिये बुलाया तो अनन्सी बोला — "नहीं प्रिये, मुझसे ज़्यादा जरूरत खाने की तुम लोगों को है। तुम मेरा हिस्सा भी ले लो और आपस में बाँट लो। अगर तुम्हारा पेट भर गया तो समझो कि मेरा भी पेट भर गया।"

असो को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि उसको मालूम था कि उसके पति की भूख तो बहुत थी। वह हमेशा से बहुत खाता था। पर इस समय वह कहीं नाराज न हो जाये इसलिये उसने उसका हिस्सा बच्चों में बाँट दिया और बच्चों ने खाना खा लिया।

इस बीच अनन्सी कुछ बहाना बना कर बाहर वाली सीढ़ियों से अपने घर के ऊपर वाले कमरे में गया और उस प्लेट से धीरे से कहा — "यह प्लेट तो सचमुच में बहुत सुन्दर है।"

प्लेट फिर बोली — "मैंने तुमसे कहा न कि मेरा नाम सुन्दर नहीं है।"

"अरे हाँ ठीक है मैं तो भूल ही गया। पर फिर तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम है "भरो और खाओ"।"

"तो भरो और फिर देखते हैं।"

तुरन्त ही वह प्लेट भाप निकलते हुए गरम मॉस के टुकड़ों और उनके सूप से भर गयी। अनन्सी ने तुरन्त ही उसको खा लिया।

इस तरह रोज वह छिप कर अपने ऊपर वाले कमरे में आता और पेट भर कर खाना खाता और नीचे चला जाता। रोज वह उस प्लेट को यह दिखाता कि वह उसका नाम भूल गया है, रोज वह उसकी जॉच करता और रोज उसका खाना पक्का था।

पर पतली–टॉग ने देखा कि उसका पिता कभी खाना नहीं खाता था पर फिर भी उसका वजन एक औंस भी कम नहीं हुआ था। उल्टे वह तो और ज्यादा ताकतवर होता जा रहा था।

उसको लगा कि उसके पिता के पास खाना खाने की कोई और तरकीब थी सो उसने तय किया कि अबसे वह उसके आने जाने पर कड़ी नजर रखेगा।

कुछ समय बाद अनन्सी को जब लगा कि घर में सब सो गये हैं तो वह सबकी नजर बचा कर चुपचाप अपने ऊपर वाले कमरे में गया। पर उसको यह नहीं मालूम था कि उसका बड़ा बेटा उसके हर काम पर नजर रखे था। वह जब अपने ऊपर वाले कमरे में गया था तब भी उसके बेटे ने उसको देख लिया था।

एक दिन जब अनन्सी खाना लाने के लिये जंगल गया तो उसका बड़ा बेटा ऊपर गया। वहॉ जा कर उसने इधर देखा उधर देखा तो उसको वहॉ रखी एक प्लेट दिखायी दे गयी। उसने वहॉ

अपनी मॉ और भाइयों को भी बुला लिया और सबने वहॉ बात करनी शुरू कर दी।

पतली–टॉगें बोला — "इस प्लेट के बारे में तुम क्या सोचते हो? क्या यह सुन्दर नहीं है?"

यह सुनते ही प्लेट बोली — "मेरा नाम सुन्दर नहीं है।" यह सुन कर वहॉ खड़े सब लोग आश्चर्य में पड़ गये।

पूरे–पेट ने पूछा — "तो फिर तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम है "भरो और खाओ"।"

इस पर बड़ा–सिर बोला — "तो भरो और फिर देखते हैं।"

बड़े–सिर के यह कहते ही वह प्लेट मूॅगफली और पाम के सूप से भर गयी। बच्चों को वह सूप देखने में बड़ा स्वादिष्ट लग रहा था सो वे उसको पीने ही वाले थे कि...

मॉ ने सोचा कि यह प्लेट तो जादू की है सो उसने इशारे से बच्चों को वह सूप पीने से रोका।

फिर उसने उस प्लेट से कहा — "क्योंकि तुम जादू की प्लेट हो इसलिये तुम्हारे जादू का कोई तोड़ होगा। मुझे बताओ कि वह क्या है ताकि हम अनजाने में तुमको कोई नुकसान न पहुॅचा सकें।"

प्लेट बोली — “यह तो तुम ठीक कहती हो। मुझे बन्दूक की नली बन्द करने वाली रुई से और छोटे कैलेबाश के प्याले से डर लगता है।”

तब असो ने बच्चों से कहा — “सो मेरे बच्चों, तो तुम्हारे पिता हम लोगों से खेलना चाहते हैं अब हम उनको सबक सिखायेंगे।” और उसने बच्चों से बन्दूक की नली बन्द करने वाली रुई और एक छोटे कैलेबाश का प्याला लाने के लिये कहा।

पतली–टॉगें जो अपने आप से सन्तुष्ट था नीचे रसोईघर में गया ओर दोनों चीज़ें ले कर सीटी बजाता हुआ ऊपर वाले कमरे में आ गया।

मॉ ने वह रुई उस प्लेट से छुआ दी तो वह बोली “उफ़”। फिर उसने वह कैलेबाश का छोटा प्याला भी उस प्लेट से छुआ दिया तो वह फिर से बोली “उफ़”।

उसके बाद वे सब एक एक करके नीचे चले गये और अनन्सी के आने का इन्तजार करने लगे। कुछ देर बाद ही अनन्सी रात का खाना ले कर घर आ गया।

जब उसकी पत्नी ने रोज की तरह उसको खाने के लिये बुलाया तो रोज की तरह ही उसने उससे कहा — “मुझसे ज़्यादा जरूरत खाने की तुम लोगों को है। तुम मेरा हिस्सा भी ले लो और आपस में बॉट लो। अगर तुम्हारा पेट भर गया तो समझो कि मेरा भी पेट भर गया।”

सो माँ और बच्चों ने खाना खा लिया और वे सोने चले गये। अनन्सी जैसे रोज जाता था उसी तरह से चुपचाप अपने ऊपर वाले कमरे में चल दिया। वहाँ जा कर उसने वह प्लेट अपने हाथ में ली और बोला — "यह प्लेट बहुत सुन्दर है।" पर उसकी प्लेट ने उसको कोई जवाब नहीं दिया।

वह फिर बोला — "यह प्लेट बहुत सुन्दर है।" पर फिर भी उसको कोई जवाब नहीं मिला। "यह प्लेट बहुत सुन्दर है।" पर वह प्लेट तो कोई जवाब ही नहीं दे रही थी।

तब अनन्सी ने कमरे में इधर उधर देखा तो उसको वहाँ एक कोने में बन्दूक की नली को बन्द करने वाली रुई और एक कैलेबाश का छोटा प्याला दिखायी दे गया।

अनन्सी को लगा कि असो और बच्चों को उसकी इस प्लेट का पता चल गया है। पर अनन्सी को यह महसूस ही नहीं हुआ कि इसमें जितनी गलती उसकी है उतनी ही गलती उसके परिवार की भी है क्योंकि उसने तो केवल उसको खाना खाने की वजह से उनको नहीं बताया था पर उसके परिवार ने केवल उत्सुकता के लिये ही उसका इतना नुकसान कर दिया था।

वह अपने ऊपर के कमरे से नीचे आया और उनकी इस बात का बदला लेने के लिये फिर से जंगल चल दिया। काफी दूर चलने के बाद वह थक गया तो सुस्ताने के लिये एक बड़े पेड़ के नीचे बैठ गया। फिर वह वहीं लेट गया और अपने आप ही उनको धमकी

देखने वाले प्लान बुड़बुड़ाने लगा।कुछ देर बाद उसने अपनी ऑखें बन्द कर लीं। उसको नींद आ गयी ओर वह सो गया।

उसने सपने में देखा कि पेड़ पर बैठी एक चिड़िया उसको यह सलाह दे रही थी कि उसको अपनी ऐसे बेवफा परिवार से बदला कैसे लेना चाहिये।

उसके सपने में वह उससे कह रही थी — "अनन्सी, तुम्हारे पास जो पत्तियॉ पड़ी हैं उनको हटाओ। वहॉ तुमको एक अच्छी साफ चिकनी डंडी मिलेगी। तुम उसको उठा लो।"

सपने में ही अनन्सी ने अपने पास पड़ी पत्तियॉ हटायीं तो उसको चिड़िया की बतायी हुई वह डंडी मिल गयी। उसने उसको उठा लिया।

चिड़िया फिर बोली — "अब तुम इससे कुछ अच्छे शब्द बोलो।"

तो अनन्सी बोला — "ओ मेरी सुन्दर छोटी डंडी।"

वह डंडी बोली — "मेरा नाम "मेरी सुन्दर छोटी डंडी" नहीं है।"

अनन्सी बोला — "तो फिर अपना नाम बताओ।"

"मेरा नाम "मारने वाली डंडी है।"

"अगर ऐसा है तो थोड़ा सा मारो और फिर मैं देखता हूॅ।"

डंडी को दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी बस उसने तो आव देखा न ताव और बॉये दॉये मारना शुरू कर दिया।

बेचारे अनन्सी को पता ही नहीं था कि वह अब क्या करे। वह तो उसकी मार से बचने के लिये बस आगे पीछे कूदता रहा और उफ ओह हाय चिल्लाता रहा पर वह डंडी उसको मारने से नहीं रुकी।

अनन्सी कराहता हुआ बोला “बचाओ। क्या इसको रोकने का कोई तरीका नहीं है?”

चिड़िया पेड़ के ऊपर से ही चिल्लायी — “अनन्सी, क्योंकि तुम बहुत ही बेवकूफ हो इसलिये तुमको यही मिलना चाहिये। पर अभी के लिये इतना ही काफी है। बोलो “सावधान” और यह डंडी मारना बन्द कर देगी।

अनन्सी चिल्लाया — “सावधान, सावधान” और डंडी ने तुरन्त ही मारना बन्द कर दिया। अब अनन्सी को लगा कि उसको अपने परिवार से बदला लेने का तरीका मिल गया है। उसने अपनी वह मारने वाली डंडी उठायी और अपने घर चल दिया।

घर पहुँच कर उसने रात का खाना पकाने के लिये उसे कुछ दिया और कहा कि उसको पका कर वह खुद खा ले और बच्चों को खिला दे क्योंकि उसको उस खाने की जरूरत नहीं थी। उसने यह भी कहा कि “अगर उन लोगों ने खा लिया तो उसने खा लिया।

कह कर वह अपनी डंडी ले कर अपने ऊपर वाले कमरे में चला गया। इस बार उसने यह ख्याल रखा कि उसकी पत्नी और बच्चे उसकी डंडी देख लें।

ऊपर वाले कमरे में पहुँच कर उसने अपनी डंडी कमरे के एक कोने में रख दी दरवाजा खुला छोड़ दिया और इन्तजार में बैठ गया। एक घंटा गुजर गया। फिर आया उसका बेटा पतली–टॉग।

वहॉ आ कर उसने ढूँढना शुरू किया तो उसको एक कोने में रखी डंडी मिल गयी। वह तुरन्त ही अपनी मॉ और भाइयों को बुलाने दौड़ा।

उसने उनसे पूछा — "आप लोग इसके बारे में क्या सोचते हैं? क्या यह एक सुन्दर डंडी नहीं है?"

डंडी बोली — "मेरा नाम सुन्दर डंडी नहीं है।"

पूरा–पेट बोला — "तो फिर क्या है तुम्हारा नाम?"

"मेरा नाम है "मारने वाली डंडी"।"

बड़ा–सिर बोला — "तो थोड़ा मारो फिर देखते हैं।"

काश उसने यह न कहा होता। उसके यह कहते ही डंडी ने सबको दॉये बॉये मारना शुरू कर दिया। चारों तरफ से आह ओह हाय की आवाजें आने लगीं।

यह देख कर अनन्सी ने सोचा "यही तुम लोगों के लिये ठीक है।" जब उसको लगा कि अब काफी हो गया तो वह बोला "सावधान सावधान"।

यह सुनते ही डंडी का मारना रुक गया और अनन्सी अपने सपने से जाग गया।

8 नदी की आत्मा[41]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के केन्या देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

घियासे[42] अपनी जाति का एक बहुत बड़ा लड़ने वाला था इसलिये यह स्वाभाविक था कि अब उसको एक पत्नी की जरूरत थी जो उसके लायक हो।

सो उसने अपने लिये कोई लड़की ढूँढनी शुरू की। काफी ढूँढने के बाद और दर्जनों लड़कियों को मना करने के बाद उसको एक लड़की पसन्द आयी। इसमें कोई शक नहीं कि वह लड़की उस जगह की सबसे सुन्दर लड़की थी। उसका नाम ऐम्मे[43] था और वह नदी के दूसरी तरफ रहती थी।

घियासे अपना समय बरबाद नहीं करना चाहता था सो उसने उस लड़की के माता पिता से कहा कि वे उसकी शादी उसके साथ जल्दी ही कर दें। उनको कोई ऐतराज नहीं था सो घियासे उनसे बात करके शादी का इन्तजाम करने के लिये घर वापस लौट गया।

ऐम्मे का पिता भी अपने जाति का बहुत अमीर और बहुत ताकतवर आदमी था। और क्योंकि वह चाहता था कि उसकी बेटी

---

[41] The Spirit of the River (Tale No 8) – a folktale from Kikuyu Tribe, Kenya, East Africa.
The Kikuyu are the largest ethnic group in Kenya. They speak the Bantu language as a mother tongue.

[42] Ghiyase – name of the Kenyan man

[43] Emme – name of the girl

अपने पति के घर में पहली बार ठीक से घुसे इसलिये उसने उसके साथ के लिये एक बहुत सुन्दर दासी का इन्तजाम कर दिया था। उसने अपनी सबसे छोटी बेटी को भी अपनी बड़ी बहिन के साथ जाने के लिये कह दिया था।

सो तीनों लड़कियाँ घियासे के गाँव चल दीं। उनको घियासे के गाँव पहुँचने के लिये सारा दिन चलना पड़ा इसलिये उनकी शादी की खुशी थकान में बदल गयी। जब तक वे घियासे के घर तक पहुँचीं तब तक शाम हो आयी थी। शाम का पहला तारा आसमान में निकल आया था।

अपनी थकान मिटाने के लिये और घियासे के घर में ठीक से घुसने के लिये ऐम्मे ने सोचा कि वह नदी में नहा कर तरोताजा हो ले तब घियासे के घर जाये।

अब उस नदी में एक आत्मा रहती थी जो उस नदी की अकेली ही मालिक थी। पर ऐम्मे को यह पता नहीं था सो ऐम्मे उस पानी में बिना किसी झिझक के कूद गयी। उसकी बहिन और उसकी दासी तब तक कपड़े उतार रही थीं।

ऐम्मे और उसकी बहिन उस आत्मा से बेखबर थीं। उनको उसको बारे में बिल्कुल नहीं मालूम था। उधर उस दासी का बाहर से तो व्यवहार बड़ा नम्र था पर उसका दिल बहुत काला था।

वह उस आत्मा के बारे में जानती थी पर उसने अपनी मालकिन को जानबूझ कर उसके बारे में नहीं बताया और उसे नदी में नहाने

से नहीं रोका। उल्टे वह नदी के किनारे पर खड़ी रह कर अपनी मालकिन को नदी के बीच में जाने को कहती रही कि वहॉ पानी ज़्यादा साफ था।

ऐम्मे भी आगे बढ़ती गयी कि अचानक दो हल्के नीले रंग की बॉहें पानी में से निकलीं और उसे पकड़ कर पानी में अन्दर ले गयीं। उसकी बहिन यह देख कर बहुत डर गयी पर दासी ने उसको धमकाया और बताया कि उसका असली रूप क्या था।

वह बोली — "यह रोना धोना छोड़ो नहीं तो मैं तुमको भी नदी में फेंक दूॅगी। वह आत्मा आ कर तुमको भी ले जायेगी। आज से तुम मेरी दासी रहोगी और ध्यान रखना अगर तुमने यह सब किसी से भी कहा तो. . . ।

इस तरह से उसने मालकिन की छोटी बहिन को सारा बोझा उठाने पर मजबूर कर दिया और वह छोटी बहिन उस बोझे को अपनी पीठ पर लाद कर ऐम्मे की ससुराल ले चली। दोनों नदी के उस पार घियासे के गॉव आयीं।

जब घियासे ने दासी को एक छोटी सी लड़की के साथ देखा तो वह बड़ी मुश्किल से अपना आश्चर्य छिपा सका क्योंकि उसको लगा कि यह तो वह लड़की नहीं थी जिसका हाथ उसने मॉगा था।

पर उसने सोचा कि इतनी लम्बी यात्रा की थकान और रात के ॲधेरे की वजह से शायद उसकी शक्ल बदली बदली लग रही

होगी। सो उसने उन दोनों को घर में बुलाया और उनका इज़्ज़त से स्वागत किया।

अगले दिन घियासे ने अपनी होने वाली पत्नी को अपनी जाति के लोगों से मिलवाया तो वे सब उसको देख कर चकित रह गये। वे सब सोचने लगे कि घियासे तो कह रहा था कि उसकी होने वाली पत्नी बहुत सुन्दर है पर यह तो ऐसी नहीं है। यह तो बहुत ही मामूली सी लड़की है।

पर उन्होंने घियासे से कुछ कहा नहीं क्योंकि वे सब उसको बहुत प्यार करते थे और उसको कोई दुख नहीं पहुँचाना चाहते थे।

दिन बीतते गये और घियासे अन्दर ही अन्दर रहने लगा। उसने अपनी शादी की रस्म की तारीख को भी जितना आगे बढ़ा सकता था बढ़ाता रहा। वह कभी एक बहाना बना देता तो कभी दूसरा।

दासी इस सबसे बहुत परेशान हो गयी और उसने अपना गुस्सा ऐम्मा की छोटी बहिन पर निकालना शुरू कर दिया। वह उसको डॉटने का कोई भी मौका नहीं छोड़ती थी। कभी कभी तो वह उसको डंडी से भी मारती।

इससे भी ज़्यादा वह उसको उसकी बड़ी बहिन की दुख भरी घटना की याद दिलाती।

रोज सुबह वह उस लड़की को बड़े बड़े घड़े ले कर नदी पर पानी भरने भेजती। वह बच्ची भी उस दुख के डर की वजह से जो

उसने ऐम्मा का देखा था चुप ही रहती और उस दासी से कुछ नहीं कहती।

घियासे को पता चल गया था कि वह दासी उस छोटी सी बच्ची से किस तरह से बरताव करती थी।

घियासे जब तक घर में रहता तब तक वह पाम के फल की तरह से बहुत मीठी बनी रहती पर जैसे ही घियासे घर से बाहर जाता वह पहले से भी ज्यादा बुरी बन जाती – वह उससे बुरी तरह से बोलती, उसको धमकियाँ देती, उसको मारती।

घियासे ने एक दिन उसको इस बात के लिये बहुत डॉटा।

एक दिन वह बच्ची रोज की तरह से नदी पर पानी भरने गयी। उसने नदी के पानी में अपना घड़ा डुबोया और उसे बाहर निकाल कर अपने सिर पर रखने ही वाली थी कि वह ऐसा नहीं कर सकी।

वह घड़ा उसकी अपनी बदकिस्मती की तरह बहुत बड़ा और बहुत भारी हो गया था। वह वहीं किनारे पर बैठ गयी और रोने लगी।

अचानक नदी की सतह कुछ हिली और पानी में से एक बहुत ही सुन्दर लड़की निकली। यह ऐम्मे थी जो अब नदी की आत्मा के पानी के महल में कैदी की तरह से रह रही थी।

अपनी छोटी बहिन को रोते देखकर उसने अपनी जेलर नदी की आत्मा से प्रार्थना की थी कि वह उसको कुछ देर के लिये नदी की सतह पर आने दे ताकि वह उसको कुछ तसल्ली दे सके।

आत्मा को अपनी ताकत का पूरा भरोसा था सो उसने उसको नदी की सतह पर जाने की इजाज़त दे दी थी।

पर जब बच्ची ने ऐम्मे को फिर से देखा तो वह तो बेहोश सी ही हो जाती पर उसकी बहिन के नम्र शब्दों ने उसको यह विश्वास दिला दिया कि वह सपना नहीं देख रही थी।

वह अपनी बहिन से लिपट गयी और रो रो कर उसे बताया कि उनकी दासी उसके साथ कैसा बरताव कर रही थी और वहाँ वह अपने आपको कितनी मजबूर महसूस कर रही थी।

सबसे बाद में ऐम्मे ने उसने पूछा — "और मेरा होने वाला पति?"

ऐम्मे की बहिन बोली — "वह तो रोज ही शादी की तारीख आगे बढ़ा देते हैं।"

ऐम्मे बोली — "मुझे विश्वास है कि सब कुछ ठीक हो जायेगा, तुम देखना। अब मुझे जाना है क्योंकि अगर मैं अब समय से वापस नहीं गयी तो जब तुम अगली बार यहाँ आओगी तो नदी की आत्मा मुझे तुमसे मिलने नहीं देगी। तुम यहाँ वापस आओगी न?"

"हाँ मैं यहाँ रोज सुबह आऊँगी।"

"ठीक है तो कल सुबह तक। और देखो बहादुरी से काम लेना। घबराना नहीं।" कह कर वह पानी में अन्दर चली गयी।

इस तरह से कुछ दिन बीत गये। वह छोटी बच्ची रोज पानी लेने के लिये नदी पर जाती रही। उसकी बहिन ऐम्मे उससे बात करने लिये रोज नदी की सतह पर आती रही।

वे दोनों कुछ देर के लिये साथ साथ बैठतीं, एक दूसरे को तसल्ली देतीं और फिर अपने अपने रास्ते चली जातीं।

एक दिन जब वह बच्ची पानी पर झुक रही थी और "ऐम्मे ऐम्मे" करके अपनी बहिन को बुला रही थी कि घियासे की जाति का एक शिकारी उधर आ निकला।

"ऐम्मे ऐम्मे" की आवाज सुन कर वह शिकारी एक घनी झाड़ी के पीछे छिप गया और देखने लगा कि वहाँ क्या हो रहा था।

कुछ ही देर में उसने देखा कि नदी का पानी फट गया और उसमें से एक बहुत सुन्दर लड़की किनारे पर आ गयी। उसने बच्ची को प्यार से गले लगाया और उससे बात करने लगी। कुछ देर बात करके वह लड़की नदी में फिर से वापस चली गयी।

जब वह सुन्दर लड़की नदी में वापस कूद गयी और वह बच्ची अपने पानी के घड़ों के साथ अकेली रह गयी तो वह शिकारी जल्दी से उस घनी झाड़ी के पीछे से निकला और गाँव की तरफ भाग गया। वहाँ घियासे एक जगह बैठा बैठा अपना भाला बना रहा था।

वह ख़ुशी ख़ुशी उसके पास पहुँचा और जल्दी जल्दी बोला — "घियासे घियासे, मैंने अभी अभी कुछ देर पहले तुम्हारी होने वाली पत्नी की दासी को नदी के किनारे देखा।"

घियासे ने उसकी इस बात पर ज़्यादा ध्यान न देते हुए और अपना काम जारी रखते हुए कहा — "तो क्या हुआ। वह तो पानी लाने के लिये रोज ही वहाँ जाती है।"

"पर तुम आगे तो सुनो। मैंने उसको "ऐम्मे ऐम्मे" पुकारते हुए सुना।"

यह सुन कर घियासे कुछ परेशान सा हो गया और बीच में ही बात काट कर बोला — "क्या कहा? वह ऐम्मे ऐम्मे पुकार रही थी?"

"हाँ, और फिर एक बहुत सुन्दर लड़की पानी में से निकल कर आयी और उससे बात करने लगी।"

"पर ऐम्मे तो... ।" यह सुन कर घियासे तो कुछ भी न समझ सका।

वह शिकारी फिर बोला — "मुझे मालूम है कि "ऐम्मे" तो उस लड़की का नाम है जिसको तुमने अपनी होने वाली पत्नी के लिये चुना था।

सुनो घियासे, मुझे तो ऐसा लगता है कि नदी की आत्मा ने किसी तरह से तुम्हारी होने वाली पत्नी को पकड़ लिया है और वह

उसको पकड़ कर कैदी की तरह से रखे हुए है। और जो लड़की तुम्हारे घर में रह रही है वह कोई दूसरी लड़की है।"

घियासे कुछ सोच कर बोला — "तुम शायद ठीक कह रहे हो। यही बात ठीक हो सकती है क्योंकि जितना ज़्यादा मैं उस लड़की की तरफ देखता हूँ उतना ही ज़्यादा मैं उसको पहचान नहीं पाता।

ऐसा करते हैं कि कल हम दोनों साथ साथ नदी पर चलते हैं ओर वहाँ चल कर देखते कि हमारा शक ठीक है कि नहीं। यह खबर देने के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद मेरे दोस्त।"

सो अगली सुबह घियासे और वह शिकारी दोनों नदी पर गये और एक घनी झाड़ी के पीछे छिप कर बैठ गये।

कुछ देर बाद वह बच्ची वहाँ पानी भरने आयी तो उसने अपनी बहिन ऐम्मे को पुकारना शुरू किया। कुछ ही मिनटों में ऐम्मे उस पानी में निकल आयी। घियासे ने उसको तुरन्त ही पहचान लिया कि वही उसकी असली पत्नी थी। उसके मुँह से खुशी की एक चीख निकलते निकलते बची।

जब ऐम्मे पानी में वापस चली गयी तो वे दोनों आदमी भी यह बात करते करते गाँव वापस चले गये कि ऐम्मे को नदी की आत्मा के चंगुल से किस तरह से छुड़ाया जाये।

शिकारी बोला — "मुझे लगता है कि हम लोग इसको अकेले नहीं कर पायेंगे। केवल नदी की बुढ़िया ही तुम्हारी सहायता कर सकती है।"

घियासे खुशी से चिल्लाया — "तुम ठीक कहते हो वही हमारी सहायता कर सकती है। चलो उसी के पास चलते हैं।"

कोई भी यह नहीं जानता था कि नदी की उस बुढ़िया की कितनी उम्र थी। कोई कहता था कि वह **100** साल की थी, कोई कहता था कि वह **200** साल की थी जबकि कुछ का विश्वास था कि वह **1000** साल की थी।

पर हर आदमी जानता था कि वह कहॉ रहती थी। वह नदी के बॉये किनारे पर एक झोंपड़ी में रहती थी। उसकी झोंपड़ी के पास तो हयीना[44] भी आने से डरते थे। वे वहॉ कभी नहीं आते थे।

घियासे उस नदी की बुढ़िया के पास गया और जा कर उसको अपनी सब बात बतायी तो वह बुढ़िया बोली कि वह इस मामले में उसकी कुछ सहायता कर सकती थी।

वह एक सफेद बकरा, एक सफेद मुर्गी, एक सफेद शाल और एक टोकरी अंडे इकट्ठे कर ले। जब वह ये सब चीजें इकट्ठी कर ले तो वह उनको उसके पास ले आये और तब वह देखेगी कि वह क्या कर सकती है।

घियासे वहॉ से चला गया और उस बुढ़िया की बतायी सारी चीज़ें ले कर लौटा तो बुढ़िया ने कहा कि उसको आने वाली

[44] Hyena is a tiger-like animal – see its picture above.

अमावस्या तक इन्तजार करना पड़ेगा। अभी वह गॉव वापस जा सकता था और उस दिन वह सब कुछ देखभाल लेगी।

अमावस्या आयी तो बुढ़िया नदी के दूसरे किनारे पर खुद ही चली गयी। पहले उसने वह सफेद बकरी पानी में धकेल दी और फिर वह सफेद मुर्गी। फिर एक एक करके सारे अंडे उसने पानी में फेंक दिये। उसके बाद उसने शाल नदी के पानी पर बिछा दिया जो उसकी लहरों पर बहता चला गया।

तुरन्त ही पानी फाड़ कर ऐम्मे उस शाल पर बैठ कर ऊपर नदी के किनारे आ गयी।

बुढ़िया बोली — "आओ ऐम्मे। तुम्हारा स्वागत है। तुम डरो नहीं। मैं घियासे की तरफ से आयी हूॅ। मेरा विश्वास करो।"

कह कर वह ऐम्मे को अपनी झोंपड़ी में ले गयी। वहॉ पहुॅच कर उसने उसके होने वाले पति घियासे को बुलाया तो वह तुरन्त ही अपने शिकारी दोस्त के साथ वहॉ आ पहुॅचा।

दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया। कुछ देर बाद ऐम्मे की छोटी बहिन को भी चुपचाप बता दिया गया तो वह भी उस बुढ़िया की झोंपड़ी में आ गयी।

वहॉ से उस समय जो कोई और भी गुजरा वह यह नहीं बता सका कि वहॉ पर लोग खुशियॉ मना रहे थे या किसी के मरने का दुख मना रहे थे। क्योंकि सभी लोग खुशी के ऑसू भी बहा रहे थे और खुशी से हॅस भी रहे थे।

उसके बाद उन सबने मिल कर एक प्लान बनाया जिसके अनुसार छोटी बच्ची को गॉव वापस भेज दिया गया।

जब वह बच्ची घर पहुॅची तो उसने उस दासी को बुरा भला कहना शुरू किया — "ओ नीच लड़की, तू घियासे से शादी करना चाहती थी? उॅह। तूने मेरी बहिन को केवल इसलिये मार डाला ताकि तू उसके होने वाले पति से शादी कर सके?"

दासी ज़ोर से चिल्लायी — "चुप रह ओ बेवकूफ। मैं अभी तेरी खबर लेती हूॅ।" कह कर उसने एक डंडी उठायी और उससे उसको वहॉ से भगाने की कोशिश करने लगी।

बच्ची वहॉ से दरवाजे से बाहर निकल कर बुढ़िया की झोंपड़ी की तरफ भाग गयी। वहॉ ऐम्मे और दूसरे लोग उसका इन्तजार कर रहे थे। उधर वह दासी भी अन्दर तक भागी चली गयी। पर वहॉ तो ऐम्मे थी। दासी को कुछ समझ में नहीं आया वह तो ऐम्मे को उसका भूत समझ कर बहुत डर गयी।

वह वहॉ से बिना सोचे समझे लौट पड़ी लेकिन जल्दी ही वह नदी के किनारे आ पहुॅची। वहॉ आ कर वह अपने आपको रोक न सकी और पानी में सिर के बल गिर पड़ी।

उसी समय हल्के नीले रंग की बॉहें पानी में से निकलीं और उस दासी को घसीट कर अपने महल ले गयीं। वह दासी अभी तक नदी की आत्मा की कैदी है।

कुछ दिन बाद घियासे और एम्मे की शादी हो गयी और वे दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

9 सोने का बच्चा और चाँदी का बच्चा[45]

घाना का सबसे ताकतवर भगवान न्यामे[46] एक बहुत ही बड़े और शानदार महल में रहता था। उसके महल के चारों तरफ सुन्दर खेत थे जो बहुत ऊँचे ऊँचे खड़े हुए थे। वह अपने ऐसे महल में रह कर बहुत खुश था और उसको किसी बात की कमी नहीं थी।

पर एक दिन उसको लगा कि उसका मन नहीं लग रहा था। पर यह कैसे हो सकता था? उस दिन उसको लग रहा था कि वह बहुत अकेला था सो उसने शादी करने का विचार किया।

उसने अपनी जाति की चार सबसे सुन्दर और सभ्य लड़कियाँ अपने महल में बुलवा भेजीं। उनको उसने महल में अन्दर बुलाया, कुछ खिलाया पिलाया और फिर उनसे पूछा — "मुझे बताओ कि अगर तुम मेरी पत्नी बन गयी तो तुम मेरे लिये क्या करोगी?"

उनमें से पहली लड़की जिसका नाम कोको[47] था बोली — "मैं आपके महल के सब कमरों को साफ रखूँगी और आपकी दासियों को देखूँगी भालूँगी।"

दूसरी लड़की ने कहा — "मैं आपके लिये अपने हाथों से रोज कुछ न कुछ नया और बढ़िया नाश्ता बनाऊँगी।"

---

[45] The Golden Child and the Silver Child (Tale No 9) – a folktale from Krachi Tribe, Ghana, West Africa.

[46] Nyame was the most powerful God of Ghana

[47] Coco – name of the first girl Nyame called for marriage

तीसरी लड़की बोली — "मैं आपके खेत की सारी कपास कातूँगी और उसका कपड़ा बुनूँगी।"

चौथी बोली — "मैं आपको खास बच्चे दूँगी।"

यह सुन कर न्यामे को कोई शक नहीं रहा कि उसको उस चौथी लड़की से ही शादी कर लेनी चाहिये। सो उसने कह दिया कि वह उस चौथी लड़की से ही शादी करेगा।

यह सुन कर कि न्यामे ने उससे शादी करने से मना कर दिया पहली लड़की कोको बहुत नाउम्मीद हुई। जलन से उसका दम घुटने लगा। फिर भी उसने अपने मन की जलन को छिपा लिया और वह लोगों को यह विश्वास दिलाने में सफल हो गयी कि वह दुलहिन की दोस्त थी। यहाँ तक कि वह दुलहिन की दासी[48] भी बन गयी।

न्यामे और उसकी पत्नी दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे और अपने दिन खुशी खुशी गुजार रहे थे।

एक दिन न्यामे को कुछ दिनों के लिये एक जगह देखने के लिये जाना पड़ा जहाँ अकाल पड़ा हुआ था। जब वह अपनी यात्रा पर गया हुआ था तो उसकी पत्नी ने बहुत ही शानदार जुड़वाँ बच्चों को जन्म दिया।

उनमें से एक सोने का बच्चा था और दूसरा चाँदी का। उसने कहा था कि वह न्यामे को खास बच्चे देगी सो उसने अपना वायदा

---

[48] Translated for "Lady-in-Waiting". Lady-in-Waiting is very personal maid of high status women.

रखा। पर नीच कोको न्यामे की पत्नी की इस खुशी को सहन नहीं कर सकी।

जैसे ही उसको मौका मिला उसने दोनों बच्चों को उनके पालने से निकाला उनको एक भारी ढक्कन वाली टोकरी में रखा और उस टोकरी को घने जंगल में एक पेड़ के खोखले तने में छिपा कर रख दिया। फिर वह महल चली गयी और उन दोनों पालनों में दो भयानक मेंढक[49] रख दिये।

जब न्यामे लौट कर घर आया तो दासी ने कहा — "आपको बधाई हो न्यामे। आप दो बेटों के पिता बन गये हैं। आइये अपने बेटों को देखिये।"

न्यामे की खुशी का कोई पारावार न था। वह खुशी से छलकते हुए अपनी पत्नी के कमरे में घुसा जहाँ उसके बच्चों के पालने रखे थे। पर उन पालनों में तो बच्चे नहीं थे। वहाँ तो दो मेंढक थे। उन मेंढकों को देख कर तो वह बहुत डर गया। क्या यही थे उसके वे खास बच्चे?

पहले तो उसकी समझ में कुछ नहीं आया, फिर वह बहुत दुखी हुआ और फिर वह बहुत गुस्सा हुआ। और उसके बाद तो उसको अपनी पत्नी से इतनी घृणा हो गयी कि उसने तुरन्त ही उन दोनों

[49] Translated for the word "Toad". Toad is different from frog see its picture above.

छोटे भयानक जानवरों को मारने का हुकुम दे दिया और अपनी पत्नी को महल से बाहर निकाल कर एक झोंपड़ी में कैद कर दिया।

इत्तफाक से एक शिकारी पास में ही एक शिकार का पीछा करते करते उस पेड़ के पास पहुँच गया जहाँ न्यामे की पत्नी की दासी ने टोकरी में रख कर उसके दोनों बच्चे छिपाये थे।

शिकारी ने टोकरी देखी तो उसकी उत्सुकता बढ़ गयी। उसने अपना शिकार तो छोड़ा और उस टोकरी की तरफ बढ़ा। उसने टोकरी खोली तो उसको उसमें सोने और चाँदी की खाल वाले दो बच्चे मिले।

उसके मुँह से निकला — "ओह कितना बड़ा आश्चर्य है?"

नये पैदा हुए बच्चों ने कहा — "इसमें इतने आश्चर्य की कोई बात नहीं है। हम ताकतवर न्यामे के बच्चे हैं।"

हालाँकि वह शिकारी बहुत गरीब था पर फिर भी वह उन दोनों बच्चों को बिना किसी हिचकिचाहट के अपने घर ले आया और ला कर उनको अपनी पत्नी को दे दिया।

अब वे बच्चे नये घर में अपने नये माता पिता की देखरेख में बड़े होने लगे। वे भी उन बच्चों को इस तरह पालने पोसने लगे जैसे वे उनके अपने बच्चे हों।

सालों गुजर गये। वे दोनों बच्चे बड़े हो गये – दयावान, अक्लमन्द और प्यार करने लायक। वे उस शिकारी के बहुत कृतज्ञ थे कि उसने उनको पाला।

हफ्ते में एक बार वे अपनी बॉहें इतनी ज़ोर से रगड़ते थे कि उनकी बॉहों से सोना चॉदी का चूरा नीचे गिरने लगता था। उस कीमती चूरे को वे अपने पिता को दे देते थे। उस चूरे से उनका पिता बाजार से घर की जरूरत का सामान खरीद लाता था।

एक दिन उस शिकारी की पत्नी ने अपने पति को एक तरफ बुला कर कहा — "मुझे लगता है कि अब हमें इन बच्चों को अलग करने का समय आ गया है।

हालॉकि मैं यह सब अपनी इच्छा से नहीं कह रही हूॅ पर तुमको तो मालूम ही कि ये बच्चे किसके हैं और यही ठीक भी होगा कि अब इनको अपने माता पिता के पास जाना ही चाहिये।

हम लोग इनको अपने पास बहुत दिनों तक नहीं रख सकते। ये ताकतवर न्यामे के बच्चे है।"

शिकारी ने कुछ बहाने बनाये पर फिर बाद में कुछ सोच कर उसने दोनों बच्चों के हाथ पकड़े और उनको न्यामे के पास ले चला।

जब वे न्यामे के महल में पहुॅचे तो उस शिकारी की इतनी हिम्मत नहीं हुई कि वह न्यामे को उन बच्चों के बारे में बहुत सारी सफाई दे सके सो बच्चों को विदा कहने के बाद उसने उनको वहीं महल के दरवाजे पर छोड़ा और घर चला गया। जाते जाते वह उनसे यह भी कहता गया कि वे वहॉ ठीक से रहें।

कुछ देर बाद न्यामे बाहर निकला तो उसने दरवाजे पर दो शानदार बच्चे खड़े देखे। उसके मुँह से निकला — "अरे यह क्या चमत्कार है?"

बच्चे बोले — "यह कोई चमत्कार नहीं है। हम ताकतवर न्यामे के बच्चे हैं।" और अपने पिता के आश्चर्य से निकलने से पहले ही उन्होंने अपनी मीठी आवाज में अपनी कहानी गानी शुरू कर दी।

उन्होंने अपनी माँ की इज्जत और वफादारी की कहानी बतायी, फिर कोको के नीच कामों की कहानी सुनायी और फिर शिकारी और उसकी पत्नी की दया की कहानी गायी।

जैसे जैसे न्यामे यह सब सुनता गया न्यामे का दिल खुशी से भरता गया। उसने अपने बेटों को अपने महल में अन्दर बुला लिया।

अपनी पत्नी को उसने उस झोंपड़ी में से आजाद कर दिया जहाँ उसने उसको कैद करके रखा था।

कोको को उसने खेतों में भेज दिया और जब वह वहाँ उन खेतों के बिल्कुल बीच में पहुँची तो उसको एक मुर्गी बना दिया।

पर ऐसा लग रहा था कि उस शक्ल में भी वह बहुत अच्छी नहीं लग रही थी क्योंकि दूसरी मुर्गियों ने तुरन्त ही उसको अपनी चोंच मारना शुरू कर दिया था।

फिर न्यामे उस शिकारी की झोंपड़ी मे गया जिसने उसके बच्चों की देखभाल की थी। उसको उसने एक बहुत अच्छा उपजाऊ खेत दिया।

ऐसा कहा जाता है कि आज भी जब न्यामे के वे लड़के स्वर्ग की नदी में तैरने जाते हैं तो उनके तैरने से जो पानी वहाँ से बारिश के रूप में गिरता है तो उस पानी में सोना ओर चाँदी होती है और जो उसे उठा लेता है वह अमीर हो जाता है।

10 कर्जा कैसे उतारा जाये[50]

यह बहुत पुरानी बात है कि नाइजीरिया के एक जंगल में ऐफियौंग[51] नाम का एक शिकारी अकेला रहता था। वह इतना अच्छा शिकारी था कि कुछ ही दिनों में वह अपने आस पास में बहुत मशहूर और अमीर हो गया।

उसका एक ही दोस्त था जिसका नाम था ओकुन[52]। वह उस जंगल के दूसरे किनारे पर रहता था।

पर ऐफियौंग में एक कमी थी वह यह कि वह जो कुछ भी कमाता था वह उसे बहुत मँहगे खाने पीने पर खर्च कर देता था। उसने बहुत कमाया था और उसने उस सब पैसे को जो कुछ वह खाना पीना चाहता उस पर खर्च कर दिया था। कुछ भी बचा कर नहीं रखा था।

इसके अलावा अब उसकी शिकारी की साख भी कम होती जा रही थी क्योंकि अब वह छोटे छोटे शिकार भी नहीं पकड़ पाता था। इस तरह दिन ब दिन ऐफियौंग गरीब और गरीब होता जा रहा था। कुछ दिन बाद वह इतना गरीब हो गया कि उसके पास खाने के लिये भी कुछ नहीं बचा।

---

[50] How to Pay off a Debt (Tale No 10) – a folktale from Ibibio-Efik Tribe, Nigeria, West Africa.
[51] Effiong – the name of the hunter
[52] Okun – name of the friend of Effiong

उसने अपने घमंड को पी कर अपने दोस्त ओकुन के पास जाने का इरादा किया और वह ओकुन के घर की तरफ चल दिया।

ओकुन के पास जा कर उसने उससे कहा — "ओकुन मेरे दोस्त। मैं बहुत गरीब हो गया हूँ और अब मैं नहीं जानता कि मैं क्या करूँ। तुम मेरे दोस्त हो क्या तुम मुझे कुछ पैसे उधार दे सकते हो?"

ओकुन बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। लो ये **200** सिक्के लो और इनको तब वापस कर देना जब तुम कर सको।"

ऐफियौंग बोला —"बहुत बहुत धन्यवाद दोस्त। तुम एक हफ्ते में मेरे घर आ सकते हो। उस समय मैं तुम्हारा कर्जा चुका दूँगा। फिर उसके बाद हम दोनों साथ साथ शिकार पर चलेंगे।"

ओकुन ने ऐफियौंग का बुलावा स्वीकार कर लिया और ऐफियौंग अपने घर चला गया।

इससे कुछ दिन पहले एक बार ऐफियौंग शिकार के लिये गया था तो उसने एक चीता[53] और एक बिल्ले को न मार कर उनसे दोस्ती कर ली थी।

उसके बाद उसकी दोस्ती एक खेत पर बने एक मकान में एक मुर्गे और एक बकरी से भी हो गयी थी जहॉ वह एक बार बड़े भारी तूफान से बचने के लिये शरण लेने के लिये रुक गया था।

[53] Translated for the word "Ldeopard". Leopard is tiger-like animal – see its picture above.

अगली सुबह ऐफियौंग चीते से मिलने गया तो वहाँ भी उसने उससे **200** सिक्के उधार माँगे। अब चीता तो उसका दोस्त था सो उसने भी उसको **200** सिक्के उधार दे दिये।

सिक्के अपनी जेब में रख कर उसने चीते से भी यही कहा कि वह अपना पैसा एक हफ्ते बाद उसके घर से आ कर ले जाये। लेकिन उसने उससे यह भी कहा कि अगर वह घर पर न हो तो भी वह वहाँ आ कर आराम से बैठे और वहाँ जो कुछ भी उसको खाने के लिये मिल जाये वह खा ले।

इसी तरह से वह बकरी, मुर्गे और बिल्ले के पास भी गया और उनसे भी **200** सिक्के इन्हीं शर्तों पर उधार माँगे। उन्होंने भी उसको **200–200** सिक्के उधार दे दिये।

उनसे भी उसने वही वायदा किया कि वे एक हफ्ते में आ कर अपना पैसा उसके घर से ले जायें। और अगर वह घर पर न हो तो भी वह वहाँ आ कर आराम से बैठें और वहाँ जो कुछ भी उनको खाने के लिये मिल जाये वह खा लें।

और इस तरीके से अब वह बहुत अमीर हो गया। दिन जाते देर नहीं लगती। एक हफ्ता बीत गया और अब वह दिन भी आ पहुँचा जब ऐफियौंग को सबका उधार चुकाना था। पर वह उनका पैसा वापस देना बिल्कुल नहीं चाहता था।

जिस दिन सबको उसके घर आना था उस दिन वह सुबह अँधेरे ही उठा, अनाज के कुछ दाने फर्श पर बिखेरे और घर छोड़ कर चला गया।

सूरज ऊपर आना शुरू हुआ तो सबसे पहले मुर्गे ने बॉग दी। फिर उसे याद आया कि आज तो उसको ऐफियौंग से अपने उधार दिये हुए पैसे लेने के लिये उसके घर जाना था।

सो वह उसके घर चल दिया। वह जब उसके घर पहुँचा तो उसने देखा कि वहॉ तो कोई नहीं था। वह वहॉ से वापस आने वाला ही था कि फिर उसे याद आया कि ऐफियौंग ने उससे कहा था कि अगर मैं घर पर न होऊॅ तो भी तुम वहॉ आ कर आराम से बैठना और वहॉ जो कुछ भी तुमको खाने के लिये मिल जाये वह खा लेना।

सो वह वहीं बैठ गया। उसको सामने अनाज के कुछ दाने दिखायी दे रहे थे सो उसने वे उठा कर खाने शुरू कर दिये।

कुछ देर बाद ही वहॉ पर बिल्ला आ गया। वह भी ऐफियौंग के घर में घुसा पर ऐफियौंग को घर में न देख कर वापस जा रहा था कि उसको भी याद आया कि ऐफियौंग ने उससे कहा था कि अगर मैं घर पर न होऊॅ तो भी तुम वहॉ आ कर आराम से बैठना और वहॉ जो कुछ भी तुम्हें खाने के लिये मिल जाये वह खा लेना।

उसने कुछ खाने के लिये इधर उधर देखना शुरू किया तो उसको एक मुर्गा दाने खाता नजर आ गया। उसने सोचा कि चलो

थोड़ा सा नाश्ता ही सही। बस वह चुपचाप मुर्गे पर कूद पड़ा और एक ही कौर में उसे खा गया।

उसी समय वहाँ बकरी आ गयी। देख कर कि वहाँ कोई नहीं था उसको भी याद आया कि ऐफियौंग ने उससे कहा था कि अगर मैं घर पर न होऊँ तो भी तुम वहाँ आ कर आराम से बैठना और वहाँ जो कुछ भी तुमको खाने के लिये मिल जाये वह खा लेना।

उसने भी इधर उधर देखा तो देखा कि एक बिल्ली मुर्गा खा गयी थी। बकरी ने सोचा कि यह तो बड़ा थोड़ा सा नाश्ता है पर जब तक ऐफियौंग आता है तब तक इसी को खा लिया जाये। सो वह उस बिल्ली पर कूद पड़ी।

पर बिल्ली चालाक थी। वह उसके चंगुल से बच कर निकल गयी और खिड़की से हो कर बाहर भाग गयी। वह बोली — "अब मैं उस घर में कभी नहीं जाऊँगी। मैं समझ लूँगी कि मुर्गा खा कर ही मेरा कर्जा चुक गया।"

इसी बीच में चीता शिकारी के घर के पास आ गया। उसने वहाँ आ कर बकरी की आवाज सुनी तो उसने अपनी चाल धीमी की और दरवाजा बहुत धीरे से खोल कर बकरी को देखा। बकरी किसी भी खतरे से अनजान थी। वह तो बस ऐफियौंग पर गुस्से से गुर्रा रही थी कि वह वहाँ था क्यों नहीं।

चीते ने यह सोच कर कि ऐसा मौका बार बार नहीं मिलता और वहॉ उसको देखने वाला भी कोई नहीं था बड़ी धीरे से और चुपचाप बकरी पर छलॉग लगा दी। पल भर मे उसने उसको मार दिया।

अब तक सूरज काफी ऊपर चढ़ आया था। ओकुन ने अपना दोपहर का खाना खा लिया था। उसने अपनी बन्दूक अपने कन्धे पर रखी और अपने दोस्त ऐफियौंग के घर अपने पैसे लेने के लिये चल दिया जो उसने उसको एक हफ्ता पहले दिये थे।

जैसे ही वह ऐफियौंग के घर के पास पहुॅचा उसको चीते की दहाड़ की आवाज सुनायी दी। उसकी आवाज सुन कर वह बाहर ही रुक गया। फिर वह मकान की खिड़की की तरफ यह देखने के लिये मुड़ा कि वह चीता कहॉ था।

चीते को देख कर उसने बन्दूक अपने कन्धे से उतारी और एक गोली उसकी तरफ तान कर चला दी। चीता बेचारा एक गोली में ही मर कर नीचे गिर पड़ा। उस बेचारे की तो अभी बकरी भी नहीं पची थी।

ऐफियौंग अपने प्लान के अनुसार अपने चार लेनदारों से छुटकारा पा चुका था —

मुर्गे को बिल्ली ने मार दिया था।

बिल्ली को बकरी ने भगा दिया था।

बकरी को चीते ने मार दिया था।

और चीते को ओकुन ने मार दिया था।

अब ऐफियौंग को केवल ओकुन से निपटना था। जैसे ही उसने ओकुन की बन्दूक की गोली की आवाज सुनी वह वहाँ आ गया। उसने देखा कि ओकुन चीते के बेजान शरीर पर झुका हुआ है।

ऐफियौंग ओकुन पर डरने का बहाना बना कर चिल्लाया — "अरे ओ नीच आदमी, यह तुमने क्या किया?"

ओकुन बोला — "मैंने क्या किया? क्या इसी तरह से तुम मुझे धन्यवाद दोगे? एक तो तुम्हारे घर में चीता था उसको मार कर मैंने तुम्हारी जान बचायी और तुम उल्टा मुझसे पूछ रहे हो कि मैंने क्या किया।"

ऐफियौंग गुस्से से बोला — "ओ पागल, यह चीता तो मेरा बहुत ही अच्छा दोस्त था। और तुमने उसे मार दिया?"

ओकुन ने इसके लिये उससे माफी मॉगी कि वह तो यह सोच ही नहीं सका कि वह चीता ऐफियौंग का दोस्त भी हो सकता था। पर अब तो यह हो चुका था।

पर ऐफियौंग उसकी कोई सफाई सुनने को तैयार नहीं था। उसने ओकुन को राजा के दरबार में ले जाने की धमकी दी।

ओकुन डर गया क्योंकि वह जानता था कि राजा इस तरह का आदमी नहीं था कि वह ऐसे मामलों को ढीले ढाले तरीके से लेता। सो उसने अपने दोस्त को तसल्ली देखने की कोशिश की।

ओकुन बोला — "सुनो, ऐसा करते हैं कि अगर तुम इस सबको भूल जाओ तो मैं तुम्हारा सारा कर्जा माफ करता हूँ और साथ में तुमको भेंट के तौर पर **200** सिक्के ऊपर से और देता हूँ।"

ऐफियौंग यह सुन कर मन ही मन बहुत खुश हुआ कि उसने जो कुछ सोचा था वह तो पूरा होने जा ही रहा था। इसके अलावा उसको **200** सिक्के और मिल रहे थे। फिर भी उसने अपनी खुशी ओकुन को दिखायी नहीं और राजा के पास जाने पर ही अड़ा रहा।

बड़ी मुश्किल से वह ओकुन की बात माना। उसके बाद वे दोनों फिर कभी न मिलने के लिये अलग हो गये।

जैसे यह भी ऐफियौंग के लिये काफी नहीं था सो उसने चीते की खाल रख कर उसको बाजार में बेच दिया।

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि "इससे पहले कि तुम किसी को अपना पैसा उधार दो पहले यह देख लो कि तुम वह पैसा किसको उधार दे रहे हो।"

11 तारे कैसे बने?[54]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि दो दोस्त ऐबौप और ऐमबौ[55] एक ऐसी जगह की खोज में निकले जहॉ वे अनाज और मॅूगफली का एक बहुत अच्छा खेत बना सकें।

उन्होंने इधर उधर देख कर एक ऐसी जगह ढॅूढ ली जो उनके खेत के लिये बहुत अच्छी थी। उन्होंने तुरन्त ही वहॉ लगे पेड़ गिराने शुरू कर दिये। जमीन साफ करके उन्होंने फिर उसको तोड़ा।

वे लोग दो दिन और दो रात उस जमीन पर बिना रुके काम करते रहे। तीसरे दिन उन्होंने आराम किया।

चौथे दिन सुबह के समय उन्होंने फिर से अपने औजार उठाये और वे फिर से अपने काम पर वापस चले गये। वहॉ जा कर उन्होंने खेत के बीच में एक छोटा सा मन्दिर बनाया। मन्दिर को

---

[54] How the Stars Were Born? – folktale from Ekoi Tribe, Nigeria, West Africa.

[55] Ebopp and Mbaw – names of the two friends

बनाने में उनको दो दिन लग गये। तीसरे दिन फिर उन्होंने आराम किया।

इसी तरह से, यानी दो दिन काम और तीसरे दिन आराम करके, उन्होंने अनाज रखने का एक घर बनाया, भूसा रखने की जगह बनायी, रसोईघर बनाये और एक कुँआ बनाया।

जब खेत बन कर तैयार हो गया तो वे अपनी पत्नियों को बुला लाये जो अभी भी पुराने गॉव में रह रही थीं। सबने मिल कर वहॉ अपनी मेहनत के फल का खूब आनन्द मनाया।

अपनी पत्नियों की सहायता से उन्होंने वहॉ केले के पेड़ लगाये अनाज और मूँगफली के बीज बोये। यह सब बहुत लम्बा और मेहनत का काम था।

आखीर में ऐबौप ने कहा — "बस मेरा और मेरी पत्नी का काम खत्म हो गया।"

एमबौ भी बोला — मेरा और मेरी पत्नी का भी काम खत्म हो गया।"

ऐबौप आगे बोला — "बस अब हमको अपनी फसल काटने का इन्तजार करना है। भगवान करे हमारी फसलें बहुत अच्छी हों और हम लोग आराम से रह सकें।"

पर सब कुछ ठीक नहीं हुआ। एक शाम जब ऐबौप अपनी पत्नी अनवान[56] के साथ बैठा खाना खा रहा था। उनके कटोरों में उनका सूप खूब गरम था कि किसी ने उनका दरवाजा खटखटाया।

यह ओबासी ओसौ[57] का दूत था जो अनवन के गॉव के सरदार के पास से आया था। वह बहुत ज़ोर से भाग कर आया था इसलिये हॉफ रहा था। हॉफते हॉफते बोला — "ऐबौप, मुझे तुमसे अकेले में कुछ बात करनी है।"

यह सुन कर ऐबौप की पत्नी बाहर चली गयी और दूत बोला — "तुम ताकतवर रहो ऐबौप, मैं तुमसे यह कहने आया हूॅ कि तुम्हारी साली[58] अब इस दुनियॉ में नहीं है।"

यह सुन कर ऐबैप बहुत ज़ोर से रो पड़ा। केवल इसलिये नहीं वह उसकी साली थी जिसको वह बहुत प्यार करता था बल्कि अपनी पत्नी के लिये भी। क्योंकि वह उसकी पत्नी की बहिन थी। फिर उसने ऐमबौ को बुला भेजा ताकि वह उसे कुछ तसल्ली और सलाह दे सके।

ऐमबौ आ कर बोला — "मुझे तुम्हारे और तुम्हारी पत्नी दोनों के लिये बहुत अफसोस है ऐबौप। पर क्या तुमने यह भी सोचा है कि उसके दफ़न का खर्चा तुम कैसे उठाओगे?" अभी अभी तो हम

---

[56] Anwan – name of Ebopp's wife

[57] Obassi Osaw – name of the Chief of the village of Anwan (the wife of Ebopp

[58] Translated for the word "Sister-in-Law" – in English it may mean several people but here it means wife's sister.

लोगों ने अपने खेत जोते बोये हैं और फसल कटने में तो अभी देर है।"

"पर ऐमबौ हमको वह सब तो करना ही चाहिये जो हमको करना है क्योंकि सम्बन्धी होने के नाते वह सब करना भी तो मेरा फर्ज है। अगर मैं दफ़न की दावत नहीं दे सका तो मैं सरदार ओबासी ओसौ को अपना मुँह कैसे दिखाऊँगा?"

ऐमबौ बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो। हमको वह सब तो करना ही चाहिये जो हमको करना है।"

ऐबौप ने ऐमबौ को धन्यवाद दिया और दूत से कहा — "तुम ओबासी ओसौ के पास वापस जाओ और उनसे कहना कि मैं उनके गाँव छह दिन में आऊँगा।"

फिर उसने अपने दोस्त ऐमबौ को भी यह कहते हुए विदा कर दिया कि वह अगले दिन उससे मिलेगा और यह खबर बताने के लिये अपनी पत्नी के पास चला गया।

उसको अपनी पत्नी को यह खबर बताने में काफी देर लग गयी कि उसकी बहिन अब इस दुनियाँ में नहीं थी। अगले छह दिन तक अनवन अपनी बहिन के लिये लगातार रोती रही।

अगले दिन दोनों दोस्तों ने जो थोड़े बहुत पैसे उनके पास थे वे सब पैसे निकाले और बाजार जा कर वे चीज़ें खरीदीं जो उनको दफ़न की दावत के लिये चाहिये थीं। फिर वे अपने खेत पर चले

गये और वहाँ जा कर देखने लगे कि अब उनको किस चीज़ की जरूरत थी।

ऐबौप बोला — "हम लोगों ने हमारे पास जो कुछ भी था वह सब तो खर्च कर दिया पर अभी भी हमको दो बहुत जरूरी चीजें और चाहिये – रस्म के लिये पाम की शराब और रम[59]। पर बिना पैसे के हम क्या करें।"

ऐमबौ ने उसको सलाह दी — "तुम शहर वापस जा कर अपने सम्बन्धियों और जानने वालों से क्यों नहीं मिलते? हो सकता है कि वे लोग तुमको कुछ कर्जा दे दें।"

ऐबौप बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो। मैं जा कर कोशिश करता हूँ।"

और वह शहर जा कर कर्जे के लिये अपने जानने वालों के घरों के चक्कर लगाने लगा। पर उन सब लोगों ने कोई न कोई बहाना बना कर उसको पैसे उधार देने से मना कर दिया। जब वह अपने गाँव लौटने लगा तो रात होने लगी थी।

उसने अभी अभी शहर छोड़ा था और वह धीरे धीरे नदी के किनारे से होता हुआ अपने गाँव की तरफ जा रहा था। कर्जा न मिलने की वजह से वह बहुत दुखी था सो वह एक पत्थर पर बैठ गया और अपनी ठोड़ी अपने हाथ पर टिका कर भगवान से शिकायत करने लगा।

---

[59] Rum is a kind of strong liquor.

तभी एक जुगनू[60] उधर उड़ता उड़ता आया और उसके घुटने पर आ कर बैठ गया। ऐबौप को लगा कि उसको उससे बात करके कुछ आराम मिलेगा सो वह उससे बात करने लगा।

वह बोला — "प्यारे जुगनू, काश तुम जान पाते कि यह आदमियों की दुनियाँ कितनी बेरहम है। जब तुम सफल होते हो तब हर कोई तुम्हारा दोस्त होता है पर सावधान रहो जब हालात बदलते हैं। तुम जानवर लोग किस्मत वाले हो कि तुमको झूठ का अन्दाजा ही नहीं है।"

इस तरह वह उस जुगनू से कुछ देर तक बात करता रहा। वह तो आश्चर्यचकित रहा गया जब उसने जुगनू के बोलने की आवाज सुनी — "ओह, मुझे तुम्हारे लिये बहुत अफसोस है ऐबौप।"

ऐबौप के मुँह से निकला — "हे नदी के देवता। यह तो ठीक है कि यह दुख तो मेरे दिमाग तक चला गया था जैसे कि मेरे पास अपनी समस्याऐं कम थीं पर अब तो लगता है कि मैं बिल्कुल ही पागल हो गया हूँ। मैं तो अब आवाजें भी सुनने लगा हूँ।"

तभी जुगनू ने आगे बोलना शुरू किया — "पागल होने से तुम्हारा क्या मतलब है? यह तो मैं हूँ जो तुमसे बात कर रहा हूँ। सुनो ओ ऐबौप, मैं तुम्हारे एक पुरखे की आत्मा हूँ। और यह तुम्हारी खुशकिस्मती है कि तुम मुझसे मिल रहे हो।"

[60] Translated for the word "Firefly". In Hindi it is called "Patbeejanaa" too.

ऐबौप भी यह सुन कर बहुत खुश हुआ और उससे पूछा कि "मै आपको किस तरह खुश करूँ?"

जुगनू बोला — "तुम बहुत दयालु हो ऐबौप। तुम अपने दुख में भी अपने पुरखों की इज्ज़त करना नहीं भूले। इसके बदले में मैं तुम्हारी वह सहायता करूँगी जो तुम्हारे सम्बन्धियों और जानने वालों ने नहीं की।"

जुगनू की रोशनी थोड़ी सी कम हुई और उसने ऐबौप को एक चमकता हुआ पत्थर दिया और बोला — "लो यह पत्थर लो। तुम इससे वे सब चीजें खरीद सकोगे जिनकी तुम्हें जरूरत है। बल्कि इससे तुम और भी बहुत सारी चीजें खरीद सकोगे।"

और इसी वजह से उस दिन से जुगनू के सिर को छोड़ कर उसका केवल आधा शरीर ही चमकता है। उसका सिर तो पहले भी नहीं चमकता था।

ऐबौप इस भेंट को ले कर बहुत खुश हुआ। उसने उस पत्थर को अपनी मुट्ठी में बन्द कर लिया और अपने खेत की तरफ दौड़ गया। वह इतना खुश था कि वह उस कीड़े को धन्यवाद देना भी भूल गया जिसने उसको वह पत्थर दिया था। पर वह कीड़ा भी उसके धन्यवाद का इन्तजार किये बिना ही उड़ गया था।

जब वह घर पहुँचा तो उसने अपनी पत्नी और दोस्त ऐमबौ को बुलाया और उनको वह पत्थर दिखलाया। अब उनकी चिन्ताऐं खत्म हो चुकी थीं।

अगले दिन वे सब ओबासी ओसौ के गॉव चल दिये। हर एक आदमी दावत के लिये अपने अपने हिस्से का सामान ले कर जा रहा था जो उन्होंने शहर से खरीदा था।

जब वे गॉव की हद पर पहुॅचे तो वे अलग हो गये। अनवन तो अपनी बहिन की कब्र पर रोने चली गयी। ऐबौप और ऐमबौ गॉव के सरदार ओबासी और वहॉ के बड़े लोगों से से मिलने चले गये।

उन्होंने तुरन्त ही पूछा — “क्या तुम वह सब कुछ ले आये हो जो तुम्हारी साली की दावत के लिये जरूरी है?”

ऐबौप बोला — “मैं केवल खाना ले कर आया हूॅ। दूसरी चीज़ें मैं यहीं इसी गॉव में खरीदूॅगा।”

गॉव के बड़े लोग कुछ बोले तो नहीं पर उन्होंने एक दूसरे की तरफ कुछ शक की निगाहों से देखा।

उस समय उस गॉव और उसके आस पास की सारी जगहों में भारी अकाल पड़ा हुआ था। उस समय वहॉ खाने पीने की कोई भी चीज़ मिलना बहुत मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन सा था।

ऐमबौ ने अपने दोस्त को तसल्ली देते हुए कहा — “तुम धीरज रखो ऐबौप। मुझे पूरा विश्वास है कि इस छोटे से चमकीले पत्थर को देखते ही तुमको सब सामान मिल जायेगा।

तुम यह करके देखो – इस पत्थर को एक ओखली में रखो और उसको अच्छी तरह से कुचल लो। इस तरह कुचलने से वह और ज़्यादा बढ़ जायेगा और फिर तुम उससे और ज़्यादा सामान खरीद पाओगे।

सो ऐबौप ने अपने दोस्त की बात मानते हुए उस पत्थर को एक ओखली में डाला और वह उसे तब तक कूटता रहा जब तक वह पिस कर बारीक चूरा नहीं बन गया।

उसने देखा कि इसका नतीजा तो वाकई बहुत अजीब था। उनकी ऑखें तो उस चूरे की चमक से खुल ही नहीं पा रही थीं।

ऐमबौ ने अपने दोस्त को एक छोटा सा काला थैला दिया जिस में उन दोनों ने उस चूरे को भर लिया। फिर वे दोनों साथ साथ उन चीज़ों की खोज में गये जो उनको उस मौके को ठीक से मनाने के लिये और चाहिये थीं।

वे चलते गये चलते गये। चलते चलते वे एक दूसरे गॉव के किनारे तक जा पहुॅचे जो ऐफ़ियौन[61] की झोंपड़ी के सामने ही था।

ऐफ़ियौन अपनी जाति का एक बहुत अमीर और बड़ा लड़ने वाला था ओर जैसा कि अक्सर होता है इस अकाल के समय में भी उसके पास बहुत सारा खाना था।

[61] Effion – name of the warrior of another village

ऐबौप ने उससे कहा — "मुझे शराब की कुछ बकरे की खालें और रम के कुछ बैरल[62] चाहिये जो तुमने छिपा कर रखे हुए हैं। इस सबके लिये मैं तुमको एक ऐसी चीज़ दूँगा जो तुमको और ज़्यादा ताकतवर और अमीर बना देगी। तुम्हारे साथी लोग तुम्हारे सामने सिर झुकायेंगे।

ऐफ़्यिौन ने कुछ पल सोचा और फिर बोला — "ठीक है। पर तुम जितना माँग रहे हो तुमको उससे आधा ही मिलेगा क्योंकि मुझे अपने खाने के लिये भी तो कुछ चाहिये न।"

ऐबौप ने मुस्कुराते हुए कहा — "ठीक है। आधा सामान एक दफन की दावत के लिये काफी होगा। पर सुनो जो थैला मैं तुमको इसके बदले में दूँगा उसको तुम तब तक नहीं खोलना जब तक मैं अपने खेत पर न पहुँच जाऊँ। मैं तुमको यह वहाँ जा कर बता दूँगा।

और जब तुम उस थैले को खोलोगे तो तुम्हारे गाँव के लोग तुम्हारे आगे सिर झुकायेंगे।"

और इस तरह वहाँ की रीति और रस्मों के अनुसार दफन की रस्में और दावत हुई। सब लोग इस सबसे बहुत खुश थे क्योंकि वहाँ वाकई में किसी चीज़ की कोई कमी नहीं थी।

---

[62] Barrel – a barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

जब सब रस्में खत्म हो गयीं तो गाँव का सरदार ओबासी ओसौ ऐबौप के पास गया और अपने गाँव के लोगों की तरफ से उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उससे रात को रहने के लिये ज़ोर दिया।

पर ऐबौप ने नम्रता से उसको मना कर दिया और अपने दोस्त ऐमबौ और अपनी पत्नी अनवन को ले कर घर चल दिया।

जब वे अपने खेत पर पहुँचे तो ऐबौप ने ऐफ़ियौन को अपना एक दूत यह सन्देश ले कर भेजा — "मैं अपने घर आ गया हूँ और अब तुम वह थैला खोल सकते हो।"

जैसे ही ऐफ़ियौन को यह सन्देश मिला तो हालाँकि रात हो गयी थी फिर भी उसने बहुत ज़ोर से चिल्ला कर अपने गाँव वालों को बुलाया — "जल्दी आओ, जल्दी आओ। मैं तुम सबको कुछ बहुत ही बढ़िया चीज़ दिखाना चाहता हूँ।"

एक बड़े लड़ने वाले ने सब गाँव वालों की तरफ से कहा — "हम लोग सब यहाँ खड़े हैं। अब तुम हमको वह दिखाओ जो तुम हमको दिखाना चाहते हो।"

ऐफ़ियौन घमंड से फूलता हुआ बोला — "यह जो कुछ मेरे पास है वह तुम सबको मेरे सामने झुकने पर मजबूर कर देगा चाहे तुम चाहो या न चाहो।"

यह सुन कर सब उसकी तरफ शक से देखने लगे। तभी उसने अपनी जेब से वह थैला निकाला जो ऐबौप उसको दे कर गया था और उसको सबके सामने पलट दिया।

उन्होंने सबने एक बहुत ही चमकीली रोशनी देखी और उनके मुँह से एक आह निकल कर रह गयी। पर उसी पल एक बहुत ज़ोर का हवा का झोंका आया और उस चूरे को चारों तरफ उड़ा कर ले गया – सड़कों पर, पेड़ों पर और सबको अपनी चमक से ढक दिया।

यह देख कर ऐफ़ियौन बहुत ही नाउम्मीद हुआ हालाँकि उसके गाँव के सब लोग उसके सामने झुके जरूर। वे उस चमत्कारी चूरे को पकड़ने के लिये उसके सामने जमीन पर लेट गये। केवल ऐफ़ियौन खुद ही वहाँ आश्चर्य का मारा चुपचाप तीर की तरह सीधा खड़ा रहा।

बच्चे भी उस चूरे को उठाने के लिये दौड़ पड़े। वे तेज़ थे।

तभी से हर शाम को क्योंकि दिन की रोशनी में उस चूरे की चमक देखनी नामुमकिन थी बच्चे उसके पीछे भागते जो तारों की तरह चमकता था। जब वे उनको पकड़ लेते तो वे उनको एक बक्से में रख लेते।

एक महीने के बाद वह बक्सा इतना भर गया कि उसको बन्द करना मुश्किल हो गया। तब एक दिन हवा ने आ कर यह सब हमेशा के लिये बन्द कर दिया। उस दिन हवा वहाँ इतनी तेज़ चली

इतनी तेज़ चली कि वह बक्सा खुल तो गया पर बन्द नहीं हो पाया। और उस बक्से का सारा चूरा उड़ कर हवा में बिखर गया।

वह चूरा ऊपर उड़ता गया उड़ता गया और आसमान तक जा कर रुक गया जहाँ आज भी सिवाय ॲधेरे के और कुछ नहीं है। और उस ॲधेरे में वह चूरा तारों के रूप में चमक रहा है।

12 बड़े खरगोश की गन्दी चालें[63]

यहॉ बड़े खरगोश[64] की गन्दी चालों की पॉच लोक कथाऐं दी जाती है जो टौंगा जाति के लोगों में कही सुनी जाती हैं। टौंगा जाति के लोग दक्षिणी अफ्रीका के कई देशों में रहते हैं इसलिये ये कथाऐं किसी एक देश की नहीं हैं बल्कि एक पूरी जाति की हैं।

1 बड़ा खरगोश और हिरनी

एक दिन बड़े खरगोश ने अपनी दोस्त हिरनी[65] को सलाह दी कि तुम मेरे साथ साझेदारी कर लो।

वह बोला — “क्या तुम मेरे साथ खेतों पर काम करना पसन्द करोगी? हम लोग बीन्स बोयेंगे।”

हिरनी तैयार हो गयी और दोनों ने खेत पर साथ साथ काम करना शुरू कर दिया।

---

[63] Hare’s Dirty Tricks (Tale No 12) – a folktale from Thonga people, Southern Africa.
Tonga, Thonga or Tsonga people and languages span most of southern Africa, notable countries being South Africa, Swaziland, Mozambique, Malawi, Zambia and Zimbabwe.

[64] Translated for the word “Hare”. Hare is a bit bigger than Rabbit – see its picture above.

[65] Translated for the word “Antelope”. Antelope is of same species as the deer but with a different kind of look – see its picture above.

अगर थोड़े में कहा जाये तो बड़े खरगोश ने हिरनी की बीन्स चुरायीं और हिरनी ने बड़े खरगोश की बीन्स चुरायीं। यह एक बहुत ही बढ़िया साझेदारी थी।

पर एक दिन बड़े खरगोश ने खेत में एक जाल बिछाया और रात को जब हिरनी अपने रोज के समय पर खेत में आयी तो उसकी टॉग उस जाल में फॅस गयी।

सुबह को यह दिखाते हुए जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं बड़ा खरगोश खेत में आया और हिरनी को वहॉ फॅसा पाया। वह बोला — "यह सब जो कुछ तुमने किया है मुझे तो अब उसके लिये जंगल के राजा के पास जाना पड़ेगा।"

"नहीं नहीं, मैं तुमसे प्रार्थना करती हॅू कि तुम मुझे जंगल के राजा के पास मत ले जाओ। तुम मुझे छोड़ दो तो मैं तुम्हें अपनी सारी बीन्स दे दॅूगी और साथ में तुमको एक नया हल भी दे दॅूगी।"

बड़ा खरगोश इस बात पर राजी हो गया। उसने उससे उसकी बीन्स ले लीं, उससे नया हल ले लिया और चला गया।

2 बड़ा खरगोश और नर छिपकली

कुछ समय बाद उसको एक बहुत बड़ा नर छिपकली वारन[66] मिला जो एक गड्ढे के पास पैर फैला कर आराम से लेटा हुआ धूप खा

[66] Varan – name of the big lizard the Hare met

रहा था। बड़े खरगोश ने उससे पूछा — "अरे तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

नर छिपकली बोला — "मैं यहाँ राजा के पानी की चौकीदारी कर रहा हूँ ताकि लोग इसे गन्दा न करें।"

बड़े खरगोश ने उसको सलाह दी — "और तुम यहाँ बस इसी काम के लिये इतनी कड़ी धूप में लेटे हुए हो? मेरी बात सुनो। जबकि तुम यहाँ इस तरह से लेटे हुए बेवकूफ की तरह से अपना समय बरबाद कर रहे हो तो तुम्हारे अपने खेत भी तो बरबाद हो रहे हैं।

इससे अच्छा तो यह है कि चलो चल कर तुम्हारे खेतों में हल चलाते हैं। अगर तुम चाहो तो मैं इस काम में तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।"

वारन बोला — "हल? यह मैं कैसे कर सकता हूँ? अगर मैं अपने अगले वाले पैरों से हल पकड़ना चाहूँ भी तो मैं तो अपने पीछे वाले पैरों पर सीधा खड़ा भी नहीं हो सकता।"

"तुम तो बहुत ही बेवकूफ हो। यह काम तो बहुत आसान है। मैं हल को तुम्हारी पूँछ से बाँध दूँगा फिर तुम हल को जितनी देर चाहे उतनी देर तक खींचते रहना। आओ न।"

वारन थोड़ी देर तक कुछ हिचकिचाता रहा तो बड़े खरगोश ने उसकी इस हिचकिचाहट का फायदा उठाते हुए उसकी पूँछ में हल

बॉध ही दिया। बेचारा नर छिपकली तो उसको अपनी पूँछ में बॉध कर हिल भी न सका।

बड़ा खरगोश तुरन्त ही गड्ढे के पास गया और वहॉ जा कर पेट भर कर पानी पिया और फिर उसको सारा गन्दा कर आया। इतने पर भी वह सन्तुष्ट नहीं हुआ तो वह वारन के खेतों में चला गया और वहॉ जा कर उसकी सारी मूँगफलियॉ खा आया।

सूरज अब तक आसमान में बहुत ऊपर चढ़ आया था और उसकी गर्मी अब तक बहुत बढ़ गयी थी। बड़ा खरगोश अब तक अपना खाना खा कर वापस आ गया था।

वह वारन से बोला — "वारन, वारन। यह तो बहुत अच्छा हुआ कि तुम यहीं ठहरे रहे। तुम्हें मालूम है टिड्डों के एक बहुत बड़े दल ने सारे शहर पर हमला बोल दिया है। और जब वे गड्ढा पार कर रहे थे तो उन्होंने उसका सारा पानी भी गन्दा कर दिया।

मुझे अभी अभी पता चला है कि उन्होंने तुम्हारा मूँगफलियों का खेत भी सारा बरबाद कर दिया है। यह तो बस चमत्कार ही हो गया समझो कि मैं साबुत बचा हुआ हूँ।"

वारन बोला — "हे भगवान। जल्दी करो मुझे इस हल से खोलो नहीं तो मैं तो हिल भी नहीं पाऊँगा।"

"हॉ हॉ। तुम चिन्ता न करो। पर तुम मुझसे गुस्सा तो नहीं हो न? या हो?"

"पर इन सब बातों के बारे में तुमसे कहा किसने?"

बड़े खरगोश ने चालाकी से जवाब दिया — "एक था जो जल्दी में भागा जा रहा था उसी ने मुझे बताया। पर अगर तुम चाहते हो कि मैं तुमको जल्दी से खोल दूँ तो तुम मुझसे बहुत सारे सवाल मत पूछो।"

"ठीक है ठीक है नहीं पूछता पर तुम मुझे जल्दी से खोलो तो सही। मैं इस हल से तंग आ गया हूँ।"

"इतनी भी जल्दी क्या है? क्या तुम्हें पूरा यकीन है कि तुम्हें पीने के लिये पहले थोड़ा पानी नहीं चाहिये? यहॉ धूप में तो बहुत गरम हो रहा है।"

वारन जल्दी से बोला — "नहीं नहीं। मैं ऐसे ही ठीक हूँ बस तुम मुझे जल्दी से खोल दो और किसी और बात की चिन्ता मत करो।"

बड़ा खरगोश बोला — "पर अगर तुम पानी नहीं पियोगे तो मैं तुम्हें नहीं खोलूँगा।"

"तुम तो इस पानी की बात का बतंगड़ बना रहे हो। ठीक है ठीक है मुझे बहुत प्यास लगी है लाओ मुझे पानी ला कर दो। पर जल्दी करो।"

सो बड़ा खरगोश वारन के घर दौड़ा गया। वहाँ से उसका एक लकड़ी का प्याला लिया, उसमें गड्ढे में से थोड़ा पानी भरा, गड्ढे के पानी को ज़ोर से हिलाया और उसे उस छिपकली के पीने के लिये ले आया।

आ कर उससे बोला — "ध्यान रखना, अगर कोई आये और तुमसे पूछे कि गड्ढे का पानी किसने गन्दा किया तो कहना कि टिड्डों ने किया है।"

वारन जोर से चिल्लाया — "ठीक है ठीक है। पर अब तुम मुझे खोलो तो।"

पर बजाय उसे खोलने के बड़ा खरगोश जंगल के राजा और वहाँ के दूसरे बड़े बड़े जानवरों को बुलाने के लिये दौड़ गया। शेर हाथी जिराफ और और दूसरे जानवर भी।

बड़ा खरगोश उन सबको वारन के पास ले आया और जब वे सब उस नर छिपकली के चारों तरफ इकट्ठा हो गये तो उन्होंने उससे पूछा — "राजा के इस गड्ढे में से पानी किसने पिया और इसको गन्दा किसने किया?"

वारन बोला — "टिड्डों के झुंड ने।"

इससे पहले कि कोई और कुछ बोलता बड़ा खरगोश बोला — "यह झूठ बोल रहा है। ज़रा इसके प्याले की तरफ तो देखो।

बजाय इसके कि यह उस गड्ढे की रखवाली करता मैंने इसको उस गड्ढे में से खीरे की तरह ठंडा पानी पीते हुए पकड़ा तो मैंने इसको इस हल से बॉध दिया ताकि यह उस गड्ढे से दूर रहे और फिर आप सबको बुलाने के लिये दौड़ गया।"

राजा और दूसरे जानवर बोले — "इस बात पर कौन विश्वास करेगा कि वारन ने ऐसा किया। शाबाश, बड़े खरगोश शाबाश। अच्छा किया जो तुमने इसकी यह पोल खोल दी कि यह हमारा पानी गन्दा कर रहा था।"

किसी ने नर गिलहरी की बात ही नहीं सुनी। उसको तुरन्त ही लोहे की जेल में डाल दिया गया और उसकी चौकीदारी के लिये कई भयानक मगर तैनात कर दिये गये।

कहानी का यही अन्त नहीं है। बड़े खरगोश ने सबको विदा कहा, अपना हल अपने कन्धे पर रखा और फिर से हिरनी को ढूढने चल दिया।

3 बड़ा खरगोश और हिरनी

वह हिरनी को ढूॅढता हुआ तब तक घूमता रहा जब तक उसको वह मिल नहीं गयी। इत्तफाक से वह भी इस समय एक बड़े गड्ढे के पानी की रखवाली कर रही थी। अब पानी तो बहुत कीमती होता है

सो उसकी तो दिन रात रखवाली करनी ही होती है और यही काम वह कर रही थी।

हिरनी ने जैसे ही बड़े खरगोश को देखा तो वह वहीं से बोली — "ओ बड़े खरगोश, क्या तुम यहाँ इसलिये आये हो कि तुम मेरे हल से खुश नहीं हो? या फिर मेरे बीन्स के खेत उस नुकसान के लिये काफी नहीं थे जो तुमने मेरी वजह से सहा?"

चालाक बड़े खरगोश ने कहा — "नहीं नहीं, यह बात नहीं है हिरनी रानी। मैं तो बस ज़रा ऐसे ही घूमने के लिये निकला था और तुम? तुम यहाँ इस गड्ढे को देखती हुई क्या कर रही हो? तुम कहीं पागल तो नहीं हो गयी हो?"

"मैं यहाँ इसलिये खड़ी हूँ ताकि कोई इस पानी को गन्दा न कर सके।"

बड़ा खरगोश बोला — "यह तो बड़ा अच्छा काम है। जबकि सारे लोग अपने अपने खेतों में काम कर रहे हैं और तुम यहाँ यह पानी देख रही हो। और जब अकाल पड़ेगा तब तुम क्या खाओगी? इस गड्ढे का पानी शायद?"

हिरनी बोली — "अरे, मैंने तो इस बारे में कभी सोचा ही नहीं था। तुमने मेरी बीन्स ले लीं और तुमने मेरा हल भी ले लिया। अब मैं क्या करूँ।"

बड़ा खरगोश तुरन्त बोला — "अरी ओ बेवकूफ, मैंने तुमको उस सबके लिये तो माफ भी कर दिया। वह सब अब पुरानी बात हो गयी, छोड़ो उसको। लो यह हल लो और आओ मेरे साथ। चलो मैं तुम्हारी तुम्हारा नया खेत बनाने में सहायता करता हूँ।"

"अगर ऐसा है तो चलो ऐसा ही सही। मेरे दिमाग में एक बहुत ही अच्छा खेत है।" और वे दोनों उस खेत पर चल दिये।

अभी उस खेत को जोतते हुए उन्हें कुछ ही देर हुई थी कि हिरनी ने कहा — "मुझे बहुत अफसोस है खारगोश भाई कि क्योंकि मैं अपने पिछले पैरों पर खड़ी हो कर आगे वाले पैरों से हल को नहीं पकड़ पा रही थी इसी लिये बजाय खेत को जोतने के मैं तुम्हारी बीन्स चुरा रही थी।"

बड़ा खरगोश बोला — "तुम अपना दिल मत छोटा करो। मैं इस हल को एक पल में तुम्हारे आगे वाले पैरों में बाँध दूँगा और फिर तुम इस खेत को बड़े अच्छे तरीके से जोत सकोगी।"

पर यह सब तो कुछ ठीक से काम नहीं किया।

बड़ा खरगोश बोला — "शायद इससे हल्का हल काम कर जाये। बस ज़रा सा इन्तजार करो मैं अभी गाँव जा कर एक दूसरा हल्का वाला हल ले कर आता हूँ।"

हिरनी जब तक उसका जवाब दे तब तक तो वह बड़ा खरगोश वहाँ से गाँव की तरफ भाग गया। पर वह गाँव जाने की बजाय उस गड्ढे की तरफ गया जहाँ वह हिरनी पहरा दे रही थी। वहाँ जा कर

उसने पेट भर कर पानी पिया ओर बाकी पानी को हिला कर गन्दा कर दिया।

उसके बाद वह एक पीले रंग के लोटे में पानी भर कर हिरनी के पास वापस आ गया और उस लोटे को हिरनी के पास ही छिपा दिया।

बड़े खरगोश को वापस आया देख कर हिरनी ने उससे पूछा — "क्या तुमको कोई हल्का हल मिला?"

बड़े खरगोश ने शरमा कर जवाब दिया — "अफसोस, मुझे कोई हल्का हल तो नहीं मिला। उन्होंने मुझसे कहा कि गाँव में बैलों का एक झुंड घुस आया था उसने उनको बरबाद कर दिया। और उन्होंने उस गड्ढे का पानी भी गन्दा कर दिया है। यह तो बहुत ही बुरा हुआ। है न?"

हिरनी दुखी होते हुए बोली — "हॉ यह तो बहुत ही बुरा हुआ। ओह, उस गड्ढे का पानी? ओ बड़े खरगोश, जल्दी से मुझे खोलो।"

"मैं तुम्हें खोल दूँगा, मैं तुम्हें खोल दूँगा पर पहले तुम ज़रा यह ताजा पानी तो पीलो। तुमको यह पानी पी कर अच्छा लगेगा।" और उसने उसको पानी का वह लोटा दे दिया जो वह गड्ढे में से भर कर लाया था।

हिरनी ने बिना कुछ सोचे समझे वह पानी पी लिया।

उधर बड़ा खरगोश जंगल के राजा और दूसरे बड़े जानवरों को लाने के लिये दौड़ गया। जब वे वहाँ आ गये तो उन्होंने हिरनी के पैरों के पास एक लोटा पड़ा देखा तो उससे पूछा — "तुम्हारे पास यह पानी कहाँ से आया?"

हिरनी बोली — "बड़े खरगोश ने दिया।"

बड़ा खरगोश छूटते ही बोला — "झूठी। यह पानी तुमने अपने आप लिया और तुमने अपने आप ही पानी गन्दा किया। और मैंने तो तुमको यहाँ हल से बाँध कर इसलिये रखा ताकि तुम यह सब करके यहाँ से भाग न जाओ।"

हिरनी गुस्से से बोली — "क्या मतलब है तुम्हारा? वह तो बैलों के एक झुंड ने गाँव बरबाद किया और गड्ढे का पानी गन्दा किया।"

राजा और दूसरे जानवर बोले — "यह सब क्या बकवास है? और बैलों का झुंड? यहाँ तो कोई भी नहीं आया। तुम झूठ बोल रही हो तुमको सजा मिलेगी।"

और राजा ने उस हिरनी को भी मगरों की निगरानी में जेल में डाल दिया।

सो देखो न यह बड़ा खरगोश कितना नीच था। उसके लिये सारी चीज़ें कितनी आसानी से हो जाती थीं। या फिर उसको अपने से ज्यादा अक्लमन्द शायद कोई मिला ही नहीं।

4 बड़ा खरगोश और मादा कछुआ

एक दिन उस बड़े खरगोश को एक मादा कछुआ मिली। इत्तफाक से वह भी पानी की निगरानी कर रही थी।

"ओह तो तुम यहाँ हो। बेवकूफों की तरह इस गड्ढे के किनारे खेल रही हो। चलो मेरे साथ चलो और चल कर हमारे खेत जोतो। जब अकाल पड़ेगा तब तुम क्या सोचती हो कि तुम्हारी कौन सहायता करेगा?

राजा और सब जानवर तो तुम्हारे इस भलाई के काम को जल्दी ही भूल जायेंगे और उस समय वे तुमको भूखा मरने के लिये छोड़ देंगे।"

मादा कछुआ बोली — "मान लिया कि तुम ठीक कह रहे हो पर क्या तुम मुझे यह बता सकते हो कि मैं अपनी इन छोटी छोटी टाँगों से हल कैसे चला सकती हूँ?"

बड़ा खरगोश बोला — "ओह उसकी तुम चिन्ता न करो। यह तो बहुत ही आसान काम है लाओ तुम अपनी टाँग दो. . . ।"

पर मादा कछुए ने उसको यह नहीं करने दिया क्योंकि वह उसकी यह चाल जानती थी। वह बोली — "तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। पर यह कहानी तो मैंने सुनी हुई है।"

बड़ा खरगोश आश्चर्य प्रगट करते हुए बोला — "तो क्या तुम सोच रही हो कि मैं तुम्हारे साथ कोई धोखा कर रहा हूँ? तुम्हारी

जैसी इच्छा हो वैसा करो पर जब समय आये और तुमको भूख लगे तो रोती हुई मेरे पास मत आना।"

और यह कह कर वह वहाँ से चला गया।

और फिर हुआ कुछ ऐसा कि कुछ घंटे बाद ही मादा कछुए को बहुत ज़ोर की भूख लगने लगी और उसको अब पता नहीं था कि वह अब क्या करे कि उसी समय बड़ा खरगोश वापस आ गया।

उसने मादा कछुए से पूछा — "सब कुछ ठीक चल रहा है न?"

मादा कछुआ बोली — "मुझे यह मानना ही पड़ेगा कि तुम बिल्कुल ठीक कह रहे थे। मुझे बहुत भूख लगी है और मुझे नहीं पता कि मैं क्या करूँ?"

बड़ा खरगोश तुरन्त बोला — "इसी लिये तो मैं यहाँ आया हूँ, मेरी दोस्त। चलो सूअर के खेत में चलते हैं और वहाँ जा कर उसके खेत की शकरकन्दी[67] खाते हैं।

मादा कछुआ कुछ हिचकिचा रही थी क्योंकि उसको चोरी करने में अच्छा नहीं लग रहा था पर उसको बहुत ज़ोर की भूख भी लगी थी सो वह बड़े खरगोश के साथ सूअर के खेत पर शकरकन्दी खाने चली गयी। उन्होंने सूअर के खेत से खूब सारी शकरकन्दियाँ चुरायीं और उनको दूर जंगल में ले जा कर आग में भून लिया।

[67] Translated for the word "Sweet Potatoes" – Sweet Potato is a root vegetable and can be eaten by boiling or roasting. It is a very common vegetable. See its picture above.

कुछ देर बाद बड़ा खरगोश बोला — “क्या तुम ज़रा बाहर जा कर देखोगी कि कहीं सूअर हमारे पीछे पीछे तो नहीं आ रहा?”

यह सुन कर मादा कछुआ को बड़े खरगोश पर फिर कुछ शक हुआ पर फिर भी वह बोली — “हॉ हॉ क्यों नहीं। पर जैसा कि तुम जानते हो कि चार ऑखें दो ऑखों से ज़्यादा अच्छी होती हैं तुम भी मेरे साथ चलो न। मैं इस तरफ जाती हूँ तुम उस तरफ जा सकते हो।”

अब बड़ा खरगोश इस बात को मना नहीं कर सका सो दोनों सूअर देखने चले – एक दॉये हाथ को दूसरा बॉये हाथ को।

पर जैसे ही मादा कछुआ बड़े खरगोश की ऑखों से ओझल हुई वह वापस लौट आयी और आ कर बड़े खरगोश के थैले में आ कर छिप गयी।

कुछ देर बाद ही बड़ा खरगोश भी वापस आ गया। उसने देखा कि मादा कछुआ तो वहॉ अभी भी नहीं लौटी थी सो उसने जल्दी से सारी शकरकन्दियॉ अपने थैले में भरीं, थैला अपने कन्धे पर डाला और अपनी ऊॅची आवाज में गाता हुआ चल दिया।

वह चिल्लाता जा रहा था — “ओ मादा कछुआ, जल्दी भागो। सूअर आ रहा है। और वह तो सचमुच में बहुत गुस्सा है। बस जल्दी भाग चलो।” पर थैले के अन्दर मादा कछुआ तो शान्ति से शकरकन्दी खा रही थी।

सो जबकि बड़ा खरगोश भाग रहा था मादा कछुआ थैले के अन्दर आराम से बैठी हुई बड़ी बड़ी स्वाददार मीठी शकरकन्दियाँ खा रही थी।

कुछ देर बाद बड़े खरगोश को भूख भी लग आयी और वह चलते चलते थक भी गया। उसने जब देखा कि वह अब मादा कछुए से सुरक्षित है तो वह साँस लेने के लिये एक पेड़ के नीचे रुक गया।

वह खुशी खुशी बोला — "ओह अब ये सारी शकरकन्दियाँ मेरी हैं।"

उसने शकरकन्दी का थैला खोला और उसके अन्दर अपना पंजा डाल कर उसमें से कोई अच्छी सी शकरकन्दी ढूँढने लगा तो मादा कछुए ने उसके पंजे में एक छोटी सूखी पतली शकरकन्दी थमा दी।

बड़े खरगोश ने उसको देखा तो बोला — "ओह यह वाली नहीं। यह तो बहुत ही छोटी है।"

सो उसने फिर से उस थैले में अपना पंजा डाला और उसमें से फिर से कोई अच्छी सी शकरकन्दी ढूँढने लगा। मादा कछुए ने फिर से उसको वैसी है एक छोटी पतली सूखी हुई शकरकन्दी पकड़ा दी।

वह फिर बुड़बुड़ाया "ओह यह भी पहले वाली से कोई ज्यादा बड़ी नहीं है। यह तो बिल्कुल ही हैज़लनट[68] के बराबर है।"

कह कर उसने तीसरी बार उस थैले में अपना पंजा डाला।

इस बार उसने कुछ बड़ी सी चीज़ महसूस की तो उसको पकड़ लिया। "आखिर मैंने उसको पकड़ ही लिया।" कह कर उसने उसको बाहर निकाल लिया और खाने के लिये अपने मुँह की तरफ ले गया।

ज़रा सोचो कि बड़े खरगोश का चेहरा तब कैसा दिखायी दिया होगा जब उसने मादा कछुए के मुँह को अपने मुँह के सामने देखा होगा। मादा कछुआ बोली — "हम जो बोते हैं वही काटते हैं।"

यह सुन कर बड़े खरगोश ने मादा कछुए को जमीन पर रख दिया और वह धीरे धीरे चली गयी।

बड़े खरगोश दुखी हो कर फिर बुड़बुड़ाया "और मैं इसको सारे समय अपनी पीठ पर लाद कर लाता रहा।" वह भी दुखी हो कर अपने घर वापस चला गया।

तुम सोच रहे होगे कि अब तो बड़े खरगोश ने कुछ सीख लिया होगा और तब से अपने तरीकों में कुछ सुधार ले आया होगा पर ऐसा नहीं था। तुम गलत सोच रहे हो क्योंकि बड़ा खरगोश तो किसी भी तरह सुधरने वाला नहीं था।

[68] Hazelnut is a kind of nut. See its picture above.

एक बार तो उसने शेर की टॉग खींचने की कोशिश की – क्या तुम ऐसा सोच सकते हो कि वह राजा की टॉग खींचने की हिम्मत कर सके? पर ऐसा ही हुआ। सुनो कहानी उसकी भी —

5 बड़ा खरगोश और शेर

एक दिन मैजेस्टी ने सोचा कि वह सारे जानवरों को जंगल में बुलाये और उनमें से एक जानवर ऐसा चुने जो उसके मूँगफली के खेत की ठीक से रखवाली कर सके।

सो सब जानवर जमा हुए और हर एक जानवर को जॉचा गया। तो अब तुमको विश्वास नहीं होगा कि शेर ने किस जानवर को चुना – बड़े खरगोश को।

राजा ने अपने इस चुनाव की वजह बतायी कि क्योंकि वह देखने में चोर और चालाक लगता था और उसको बहुत सारी चालाकियॉ आती थीं। ऐसे जानवर से अच्छा और कौन जानवर होगा जो चोर को पकड़ सकेगा? एक चोर को एक चोर ही पकड़ सकता है।

सो राजा ने उसको अपने खेत का चौकीदार चुन कर अपने मूँगफली के खेतों पर भेज दिया। कुछ समय तक तो सब कुछ ठीक चलता रहा पर यह सब बहुत दिनों तक नहीं चल सका।

बड़े खरगोश को वहॉ पर बहुत अच्छी अच्छी चीज़ें देखने को मिलीं तो फिर भला वह कब तक रुकता। पर इस बार मामला ज़रा

खतरे वाला था। क्योंकि राजा कोई ऐसा वैसा जानवर तो था नहीं जिसको वह जल्दी से बेवकूफ बना सकता।

पर फिर भी उसने काफी सोच विचार कर एक प्लान बनाया।

एक सुबह बड़ा खरगोश शेर के पास गया और उससे खेत पर आ कर यह देखने के लिये कहा कि वह वहाँ खेत पर यह देखे कि उसकी चौकीदारी कैसी चल रही थी।

शेर राजी हो गया ओर वह बड़े खरगोश के पीछे पीछे चल दिया।

कुछ देर बाद बड़े खरगोश बोला — "योर मैजेस्टी, आपके राज्य में कुछ चोर हैं। हैं न? अगर मैं झूठ बोलूँ तो शैतान मुझे उठा कर ले जाये।"

शेर ने कुछ नाराज होते हुए पूछा — "ऐसा तुम कैसे कह सकते हो?"

बड़ा खरगोश शेर को तसल्ली देते हुए बोला — "आप परेशान न हों, योर मैजेस्टी। आइये मैं आपको उस हर एक के पैरों के निशान दिखाता हूँ जिसने भी आपकी मूँगफली चुराने की कोशिश की। मैं उन सबके पैरों के निशान पहचानता हूँ और आज मैं आपको उन सबके नाम भी बताता हूँ।"

यह सुन कर राजा की उत्सुकता बढ़ गयी। वह बोला — "ठीक है देखते हैं कि तुम ठीक बोल रहे हो या नहीं।"

पहले बड़ा खरगोश उसको एक केले के पेड़ के नीचे ले गया और उसको कई सारे पैरों के निशान दिखाये और उनको पहले एक जानवर के पैरों के निशान बताये फिर दूसरे जानवर के पैरों के निशान बताये।

बड़ा खरगोश आगे बोला — "और केवल यही सब नहीं है। अगर आप इस पेड़ के पीछे खड़े हो जायें तो आप अपनी आँखों से चोर को देख भी पायेंगे।"

शेर बड़े खरगोश की इस बात से बड़ा खुश हुआ कि वह उसको चोर को दिखायेगा भी सो वह उस पेड़ के नीचे लेट गया और चोरों के आने का इन्तजार करने लगा।

इस बीच बड़े खरगोश ने कुछ शाखाओं को आपस में बुन कर रस्सी बनायी और पेड़ के तने से बाँध दी और बोला — "अब जब हम चोर का इन्तजार कर रहे हैं तो मैं आपके लिये केले के इन सुन्दर मुलायम पत्तों का एक ताज बनाता हूँ।"

राजा बड़े खरगोश की इस होशियारी की तारीफ करते हुए बोला — "धन्यवाद। तुम्हारा यह विचार तो बहुत अच्छा है।"

"पर पहले मैं आपके सिर के बालों में कंघी कर दूँ वरना वह ताज अपके सिर पर ठीक से नहीं रखा जायेगा। टेढ़ा मेढ़ा हो जायेगा।"

"हॉ यह तो ठीक है। कर दो।"

खरगोश ने तुरन्त ही शेर के सिर के बालों में कंघी करना शुरू कर दिया। उसने उसके बालों की एक लम्बी पोनीटेल बनायी और उसको उस रस्सी से बॉध दिया जो उसने पेड़ से बॉधी थी।

इस बीच शेर को कोई चोर आता दिखायी नहीं दिया।

जब बड़े खरगोश ने यह सब कर लिया तो वह एक तरफ को इशारा करके चिल्लाया — "देखिये योर मैजेस्टी, उधर देखिये। जल्दी दौड़िये। वह रहा आपका एक चोर। वह आपकी मूॅगफलियॉ निकाल रहा है।"

यह सुन कर शेर ने उठ कर खड़ा होना चाहा ताकि वह उस चोर को देख सके पर अपने बाल बॅधे होने की वजह से उसके सिर में बहुत जोर से दर्द होने लगा और वह वहीं रुक गया। वह उठ ही नहीं सका बल्कि वह तो अपने पैरों पर भी खड़ा नहीं हो सका।

उसी समय बड़े खरगोश ने दूसरे जानवरों को आवाज लगानी शुरू की — "आओ आओ तुम भी देखो, आज मैंने एक अजीब चीज़ देखी। यह तो राजा शेर खुद ही अपने खेतों की मूॅगफलियॉ चुरा रहा है और तुम लोगों का नाम लगा रहा है।"

बड़े खरगोश ने थोड़ी सी मूँगफलियाँ शेर के पैरों के पास फेंकते हुए कहा — "देखो, मैंने इस चोर को आज पकड़ लिया है। यह तुम सबका झूठा नाम लगा कर तुम्हारे ऊपर अपना और ज़्यादा शासन जमाना चाहता है।"

शेर तो उसकी ये बेकार की बातें सुन कर इतने ज्यादा आश्चर्य में पड़ गया कि वह तो एक शब्द भी नहीं बोल सका। दूसरे जानवर जो बड़े खरगोश की आवाज सुन कर इकट्ठा हो गये थे उन्होंने शेर की चुप्पी को हाँ समझा। उन्होंने कुछ डंडियाँ उठायीं और उस बेचारे शेर को मारना शुरू कर दिया।

इसके बाद उन्होंने बड़े खरगोश को जंगल का राजा घोषित कर दिया और उसको शाही कुरसी पर बिठा दिया। बड़ा खरगोश अपने नये ओहदे के अनुसार काम करने लगा।

उसको देख कर तो ऐसा लगता था जैसे वह अपने जन्म से ही राजा रहा हो। वह सबको राजा के ही ढंग से हुकुम देता था और वह सारे जानवरों पर राज्य करता था।

पर जब खास मामलों की बात होती तो सब कुछ गड़बड़ हो जाता। जानवरों ने जल्दी ही पहचान लिया कि यह काम उसके बस का नहीं था – खास कर के जज का और राजा का। सो उन्होंने उसको राजा के पद से हटा दिया।

बड़ खरगोश इसके बिल्कुल भी खिलाफ नहीं बोला। बजाय शान से छोड़ने के उसने सोचा कि वह राजा का सारा खजाना अपने साथ ले जायेगा।

पर अब उसकी किस्मत का पहिया पलट रहा था। जब जानवरों ने देखा कि वह राजा का पद छोड़ कर जा रहा है तो उन्होंने उसका पीछा करने का विचार किया।

बड़ा खरगोश भागता गया और भागता गया। किसी तरह से वह जा कर एक बिल में छिप गया। उसको लगा कि वहाँ वह सुरक्षित रहेगा।

पर अपनी सूँघने की खास ताकत से उस बिल के मालिक चींटी खाने वाले[69] ने बड़े खरगोश की इस छिपी हुए जगह को ढूँढ लिया और शोर मचा दिया।

जानवरों ने एक लम्बी मुड़ी हुई डंडी से उसको बाहर निकालने की कोशिश की। कुछ बार कोशिश करने के बाद उन्होंने उस डंडी में उसका एक पंजा फॉस लिया।

पर बड़े खरगोश ने भी हिम्मत नहीं हारी और चालाकी की एक आखिरी चाल चलते हुए चिल्लाया — “खींचो, और खींचो। तुमने तो पेड़ की जड़ को पकड़ रखा है।”

[69] Translated for the word “Anteater” – see its picture above.

यह सुन कर जानवरों ने उसका पंजा छोड़ दिया और फिर से कोशिश करनी शुरू की पर इस बार उन्होंने वाकई पेड़ की जड़ पकड़ ली थी।

एक बार फिर बड़े खरगोश ने चाल खेली और चिल्लाया — "आउ आउ। ज़रा धीरे से। तुम लोग तो मेरा पंजा ही तोड़ दोगे।"

यह सुन कर बिल के बाहर के जानवरों ने उसे और ज़ोर से खींचना शुरू कर दिया। वह जड़ टूट गयी। तुरन्त ही बड़ा खरगोश बहुत ज़ोर से चीखा जैसे कि उसको बहुत जोर की चोट लगी हो। जानवरों ने सोचा कि इस बार उन्होंने बड़े खरगोश को ठीक से सजा दे दी।

सो वे बोले — "अब रुक जाओ। बस अब बहुत हो गया। हम लोगों ने उसको काफी सीख दे दी है और अब वह हमको और तंग नहीं करेगा।"

कह कर उन्होंने उस बिल को उसके सामने एक बड़ी झाड़ी लगा कर बन्द किया और चले गये।

बड़े खरगोश ने सोचा कि उसने उनको एक बार फिर से बेवकूफ बना दिया है पर तभी एक तेज हवा को झोंके ने उस बड़ी झाड़ी को बिल के अन्दर घुसा दिया जिससे वह बिल एक जाल की तरह से बन्द हो गया।

खरगोश चिल्लाया — "उफ, तुम लोग तो मेरी सॉस घोट कर ही दम लोगे।"

कह कर उसने उस झाड़ी को बिल के दरवाजे से पीछे धकेलने की आखिरी कोशिश की और वह उसको हटा कर बाहर भाग गया।

बाहर तो कोई था नहीं पर वह खुद इतना डरा हुआ था कि बस वहॉ से वह जितना जल्दी भाग सकता था भाग गया और फिर उस जगह कभी दिखायी नहीं दिया।

13 सौ जानवर[70]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के केन्या और आसपास के देशों में जहॉ स्वाहिली जाति के लोग रहते हैं वहॉ कही सुनी जाती है। स्वाहिली जाति के लोग पूर्वी अफ्रीका के कई देशों में रहते हैं – केन्या, तन्ज़निया, मोज़ाम्बीक, यूगान्डा। इसलिये ये कथाऐं किसी एक खास देश की नहीं है बल्कि स्वाहिली जाति के लोगों की है।

एक बार की बात है कि पाटा नाम के गॉव में एक आदमी अपनी पत्नी और अपने एकलौते बेटे के साथ रहता था। उनके पास अपने पहनने के कपड़े और एक टूटी सी झोंपड़ी जिसमें वे रहते थे के अलावा 100 जानवर थे।

उनका बेटा जब छोटा था तभी उसके पिता चल बसे। उनके जाने बाद अब उसी को जानवरों की देखभाल करनी पड़ती थी। उसकी मॉ घर में रह कर खाना बनाती थी।

पर कुछ साल बाद उस लड़के की मॉ भी चल बसी और अब वह लड़का अपने माता पिता के छोड़े हुए 100 जानवरों के साथ अकेला रह गया। और एक साल बीत गया तो उसको लगा कि अब उसको शादी कर लेनी चाहिये।

---

[70] One Hundred Cattle (Tale No 13) – a folktale from Swahili people, Eastern Africa.
Swahili people and language span several of Eastern African states – Kenya, Tanzania, Mozambique and Uganda. These people are mostly Muslims.

वह अपनी जाति में अपने दोस्तों के पास गया और उनको अपने इस फैसले के बारे में बताया। वे सब उसके इस फैसले से बिल्कुल राजी थे कि इस समय उसको एक पत्नी की सख्त जरूरत थी।

उन्होंने कहा — "तुम्हारे लिये इस समय एक पत्नी बहुत ही फायदेमन्द साबित होगी पर तुमको कैसी लड़की चाहिये? तुम किससे शादी करना चाहते हो?"

उस नौजवान ने जवाब दिया — "वह लड़की अपने गाँव से नहीं होनी चाहिये। मुझे एक दूसरे ही तरीके की लड़की चाहिये। क्या कोई उसको चुनने की जिम्मेदारी लेगा?

मैं अभी छोटा हूँ और मेरे जितनी उम्र वाले के लिये यह ठीक नहीं होगा कि वह खुद अपनी शादी के लिये किसी लड़की का हाथ माँगे। खास कर के जब जबकि वह किसी दूसरे गाँव की हो।"

उसके दोस्तों ने इस बात पर भी हामी भरी और उनमें से उसका एक दोस्त इस काम की जिम्मेदारी लेने के लिये तैयार हो गया। उसने कहा कि वह उसका दूत बन कर जायेगा और उसके लिये लड़की देखेगा।

वह वहाँ से चला गया और कुछ समय बाद लौट आया। उसने उस नौजवान से कहा — "मैंने तुम्हारे लिये पड़ोस के गाँव से एक बहुत ही अच्छी लड़की ढूँढ ली है।"

नौजवान दुलहे ने पूछा — "कौन है वह?"

वह आदमी बोला — "वह एक अमीर आदमी अब्दुल्ला की अकेली बेटी है। अब्दुल्ला के पास 6000 जानवर हैं।"

इस खबर को सुन कर वह नौजवान को और भी ज़्यादा लगने लगा कि उसको एक पत्नी की जरूरत है। उसने अपने दोस्त से कहा कि वह उस गाँव में जाये ओर शादी की सब बात पक्की कर आये। वह आदमी फिर चला गया।

उसकी बात सुन कर अब्दुल्ला ने कहा — "उस लड़के से कहना कि अपनी बेटी के बदले में मुझे 100 जानवर चाहिये। अगर उसे मेरी बात मंजूर है तो फिर कोई और अड़चन नहीं है।"

आदमी ने आ कर नौजवान को बताया कि उस लड़की के पिता ने क्या कहा था। नौजवान ने इस बारे में काफी देर तक सोचा और बोला — "अगर मैं उसको अपने 100 जानवर दे देता हूँ तो मेरे पास तो कुछ रह ही नहीं जायेगा क्योंकि मेरे पास तो हैं ही कुल 100 जानवर। फिर मैं और मेरी पत्नी कैसे गुजारा करेंगे?"

आदमी ने कहा — "तुम सोच लो और अपना जवाब मुझे बता दो। फिर मैं उसको अब्दुल्ला को बता आऊँगा। मुझे तो अपना काम करना ही है न।"

नौजवान सोचने लगा कि वह इस हालत में क्या करे। वह अपना सिर खुजलाता हुआ इधर से उधर चक्कर काटने लगा।

आखिर उसने फैसला किया और उस आदमी से कहा — "जाओ और उससे जा कर कह दो कि मैं तैयार हूँ। मैं उसको **100** जानवर दे दूँगा जो वह अपनी बेटी के लिये माँग रहा है।"

वह आदमी अब्दुल्ला के पास गया और उन दोनों की मुलाकात का इन्तजाम किया गया।

दुलहे ने अपनी होने वाली दुलहिन को देखा। उसको लड़की बहुत सुन्दर लगी सो उसने उसके पिता से शादी की शर्तें तय की। तीन दिन बाद उसने अपने **100** जानवर अब्दुल्ला को दे दिये और एक महीने बाद उन दोनों की शादी हो गयी।

दुलहिन अपने पति के गाँव में उसके घर में रहने के लिये आ गयी। कुछ हफ्तों तक सब कुछ ठीक चला। घर में खाने की कोई कमी नहीं थी। घर में दूसरी चीज़ों की भी कोई कमी नहीं थी।

पर जल्दी ही घर में खाने का सामान खत्म होने लगा तो वह नौजवान अपनी पत्नी से बोला — "प्रिये, अब हम लोग गरीब हैं। मेरी पूरी सम्पत्ति तो वही मेरे जानवर थे। मैं गायों को दुहता था और बैलों से खेत जोतता था।

मैंने अपने सारे जानवर तुमको पाने के लिये दे दिये ओर अब मेरे पास कुछ नहीं है। अब मेरे पास एक ही रास्ता है कि मैं अपने पड़ोसियों के पास जाऊँ और उनके लिये काम करूँ।

मुझे बहुत नीचे और बहुत थकाने वाले काम करने पड़ेंगे पर उस काम करने से जो कुछ मैं कमाऊँगा उससे हमारे पास कम से कम खाने के लिये तो कुछ होगा।"

पत्नी ने उसके आगे अपना हाँ में सिर झुकाया पर वह बोली कुछ नहीं। अब वह नौजवान हर सुबह अपने पड़ोसियों के घर जाता और थोड़े से दूध, एक थैला अनाज या फिर एक छोटे से माँस के टुकड़े के बदले में उनकी मजदूरी करता।

कभी वह उनकी गायें दुहता, कभी वह उनकी लकड़ी काटता, कभी वह उनकी छत ठीक करता, तो कभी वह उन स्त्रियों के लिये नदी से पानी ले कर आता जो घर में अकेली खाना बनाने के लिये रह जातीं। पर इन सब कामों के लिये वे उसको बहुत कम पैसे देते।

इस बीच गाँव के एक बहुत ही खास आदमी के एक सुन्दर लड़के ने किसी विदेशी लड़की[71] को गाँव में देखा तो वह उसके दिमाग में घुस गयी और वह उससे प्रेम करने लगा।

सो रोज जब उस लड़की का पति काम पर चला जाता तो वह लड़का उसके घर जाता और उसके घर के आस पास घूमता रहता ताकि वह उससे बात कर सके।

[71] Translated for the word "Foreigner". Here Foreigner does not mean from some other country, but from some other village and from some other tribe.

उस लड़की ने यह दिखाया कि जैसे उसमें कुछ गलत नहीं था पर वह इसके बारे में अपने पति से कुछ नहीं कह सकी। क्योंकि इससे उसको लगा कि इससे उसका पति घर ठहर जाता और जो थोड़ा बहुत काम उसको मिलता था वह भी नहीं मिलता। इससे जो थोड़ी बहुत कमाई होती थी वह भी नहीं होती और उनको खाना भी नसीब नहीं होता।

उस लड़की की शादी हुए करीब करीब छह महीने बीत गये तो अब्दुल्ला ने सोचा कि वह अपनी बेटी और दामाद[72] को देख कर आये। सो बिना बताये ही वह उनसे मिलने के लिये चल दिया।

जब वह अपने दामाद के घर पहुँचा तो उसने उसके घर का दरवाजा खटखटाया तो आश्चर्य कि उसकी बेटी दरवाजा खोलने आयी।

जब उसने अपने पिता को दरवाजे पर देखा तो सोचा कि "अच्छा है कि मेरा घर ठीक से रखा हुआ है और मैंने भी अपनी आखिरी अच्छी वाली पोशाक पहनी हुई है वरना मेरे पिता मेरे बारे में जाने क्या सोचते।"

अपनी शरम छिपाते हुए उसने अपने पिता को अन्दर बुलाया और उनको आराम से बिठाया। उसने उनको ताजा फल खाने को दिये। उसका पिता बोला — "सो मेरी बेटी, तुम कैसी हो? क्या तुम अपने पति के साथ खुश हो?"

[72] Translated for the "Son-in-Law" – the husband of daughter.

उसने कुछ हिचकिचाते हुए कहा — “जी पिता जी।” पर वह अपना दुख छिपाने पर भी नहीं छिपा सकी सो वह अपने पिता के लिये चाय बनाने के लिये पानी लाने का बहाना करके वहॉ से चली गयी।

वह अपने कमरे में गयी और जा कर फूट फूट कर रोने लगी। “और अब मैं क्या करूँ? घर में खाने के लिये कुछ भी नहीं है पर मुझे कमसे कम अपने पिता को खाना तो खिलाना ही है।”

वह इसका कोई हल सोच ही रही थी कि उसने उस नौजवान लड़के को देखा जो काफी दिनों से खिड़की से उससे बात करने की कोशिश में उसके घर के चक्कर काट रहा था।

उसने कुछ सोचा और अपने ऑसू पोंछ लिये। अपने आपको ठीक किया और इस उम्मीद में पीछे वाले दरवाजे से बाहर गयी कि शायद वह उस नौजवान को वहॉ देख सके।

वह उसे वहॉ मिल गया। वह बोला — “मेहरबानी करके मेरे इस पागलपन को माफ करना पर जबसे मैंने तुम्हें देखा है न तो मुझे नींद आती है न मुझे भूख लगती है।

मेरे पिता बहुत अमीर हैं। तुम इस भिखारी को छोड़ो और मेरे साथ भाग चलो। मैं तुमको बहुत खुश रखूँगा और तुमको रानी बना कर रखूँगा।”

लड़की ने उससे कुछ प्यार की बातें कीं फिर बोली — "यह मेरी गलती थी कि मैंने एक ऐसे आदमी से शादी की जिसके पास अपने खाने के लिये भी कुछ नहीं था।

अगर तुम मुझसे सच्चा प्यार करते हो तो मुझे यहाँ से ले चलो। मैं इस गरीबी में रहते रहते तंग आ गयी हूँ। मैंने बहुत दिनों से पेट भर कर खाना भी नहीं खाया है और कोई नया कपड़ा खरीदने की बात तो छोड़ो।"

वह नौजवान तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया। उसने सोचा "ओह आखिर मैं अपने काम में सफल हो ही गया।" और उस लड़की से बोला — "तो चलो फिर आज ही चलते हैं। और आज ही क्यों अभी क्यों नहीं।"

लड़की बोली — "थोड़ा रुको। आज ही मेरे पिता मुझसे मिलने के लिये आये हैं और मैं उनसे बहुत दिनों से नहीं मिली हूँ। मुझे अभी उनके लिये अच्छा खाना भी बनाना है।

पर जैसा कि मैंने तुमसे अभी कहा मेरे पास उनके लिये खाना बनाने के लिये कुछ भी नहीं है। तुम ज़रा जा कर खाने के लिये माँस का एक अच्छा सा टुकड़ा ले आओ ताकि मेरी मेज खाली खाली न लगे। उसके बाद मैं तुम्हारे साथ चली चलूँगी।"

उस नौजवान ने खुश होते हुए कहा — "ठीक है। मैं तुम्हारे लिये माँस ले कर अभी आया।"

कुछ मिनटों में ही वह उसके लिये चौथाई गाय ले कर आ गया और उससे बोला — "यह लो और अपना वायदा याद रखना।"

लड़की बोली — "तुम चिन्ता मत करो।" और वह गाय के मॉस के उस बड़े टुकड़े को ले कर उसको पकाने के लिये अन्दर चली गयी।

खाना बनाते बनाते शाम के खाने का समय हो गया। उसका पति भी पड़ोसी के लिये कुछ छोटा मोटा काम करके घर वापस आगया। जब उसने अपने ससुर को देखा तो वह कुछ घबरा गया। वह उस समय उसको वहाँ देखने की उम्मीद नहीं कर रहा था।

पर उसने अपने आपको किसी तरह सॅभाला और यह दिखाते हुए कि सब कुछ ठीक था उसने उनको इज्जत से सलाम किया। फिर दोनों कुछ देर तक बात करते रहे। उसके बाद नौजवान ने उनसे माफी मॉगी और अपनी पत्नी को रसोईघर में देखने चला गया।

उसने आश्चर्य से पूछा — "अरे तुम खाना बना रही हो? पर घर में तो कुछ था ही नहीं।"

लड़की हिचकिचाते हुए बोली — "मुझे कुछ मॉस मिल गया।"

"मिल गया का क्या मतलब है? किसने दिया तुम्हें यह?"

"देखो अब तुम गुस्सा मत हो। मैंने पड़ोसी से प्रार्थना की कि मेरे पिता यहाँ खाना खाने के लिये आये हैं पर मेरे पास उनको खिलाने के लिये कुछ नहीं है तो उन्होंने मुझे यह मॉस दे दिया।"

नौजवान कुछ नहीं बोला। उसका सिर नीचे झुक गया और उसको बहुत शरम आयी कि अब उसकी यह हालत हो गयी थी कि उसको पड़ोसियों से दान लेना पड़ा। क्या वह इतना गिर गया था?

उसको इतना दुखी देख कर उसकी पत्नी ने उसको तसल्ली देने की कोशिश की — "देखो तुम खुश रहो, इसमें इतना सोचने की कोई बात नहीं है। हम उन्हें इस मॉस के बदले में कुछ दे देंगे फिर हम उनके ऐहसान के नीचे नहीं दबे रहेंगे।

पर अब तुम जाओ और पिता जी के पास बैठो। खाना अभी तैयार हुआ जाता है। तुम वहॉ बैठो और मैं खाना लगाती हूॅ।"

इस बीच यह देख कर कि वह लड़की अभी तक नहीं आयी वह नया नौजवान उसको देखने के लिये सामने के दरवाजे की तरफ गया ताकि वह उसको बाहर आने के लिये इशारा कर सके।

पर जब वह उसके खुले दरवाजे के सामने इधर उधर घूम रहा था तभी उस लड़की के पति ने उसको देख लिया।

उसने उसको पहचान लिया कि वह तो उनके एक पड़ोसी का बेटा था जो उसको कभी कभी काम देता रहता था। सो उसने उसको सलाम किया और उसको खाने के लिये अन्दर बुला लिया।

वह नया नौजवान उसको मना नहीं कर सका और उसके बुलावे पर अन्दर चला गया। अन्दर जा कर वह भी दूसरों के साथ मेज पर बैठ गया। सो तीनों – पिता, पति और वह नौजवान, मिल कर बात करने लगे जैसे सब कुछ सामान्य हो।

कुछ समय बाद मॉस मेज पर लाया गया और लड़की उन तीनों को वहॉ एक साथ बैठा देख कर बिना किसी आश्चर्य के मुस्कुरायी और बोली — "ओ बेवकूफ लोगों, खाना तैयार है।"

यह सुन कर सबको बड़ी शरम आयी और सबके दिल में गुस्से की एक लहर दौड़ गयी।

अपनी बेटी के शब्दों के बाद उसके पिता ने सबसे पहले खामोशी तोड़ी — "तुमने मुझे बेवकूफ क्यों कहा?"

लड़की बोली — "पिता जी, आप गुस्सा न हों। पहले आप खुशी खुशी खाना खा लें उसके बाद मैं आपको बताऊॅगी कि मैंने आपको बेवकूफ क्यों कहा।"

पर उसका पिता बोला — "नहीं। पहले मैं तुमसे सुन लूॅ कि मैं बेवकूफ क्यों हूॅ तभी मैं खाना खा सकूॅगा। अभी तो तुम्हारी बात सुन कर मेरी भूख ही खत्म हो गयी है।"

इस पर उसकी बेटी निडर हो कर बोली — "पिता जी, आप बेवकूफ इसलिये हैं कि आपने अपनी इतनी कीमती चीज़ बहुत छोटी सी चीज़ के लिये दे दी।"

उसका पिता बोला — "मैंने? और वह कीमती चीज क्या है जो मैंने बहुत छोटी सी चीज़ के लिये दे दी?"

"आपको पता नहीं कि आपकी कीमती चीज़ क्या है? पिता जी मैं अपने बारे में बात कर रही हूॅ।"

पिता बोला — "तुम मेरे लिये बहुत कीमती हो यह सच है पर अगर तुम इसको ज़रा और साफ करके कहो तो. . . ।"

बेटी बोली — "यह तो साफ है पिता जी। आप जानते हैं कि आपके मेरे अलावा और कोई दूसरा बच्चा नहीं है और फिर भी आपने मुझे केवल 100 जानवरों के बदले में दे दिया हालाँकि आपके अपने पास 6000 से ज़्यादा जानवर हैं। शायद वे 100 जानवर आपके लिये मुझसे ज़्यादा कीमती थे।"

यह सुन कर पिता को बहुत शरम आयी। उसका चेहरा शरम से लाल पड़ गया। वह बोला — "बेटी, तुम ठीक कहती हो। मैं सचमुच में ही एक बेवकूफ हूँ।"

उसके बाद उस लड़की के पति की बारी थी — "और तुमने मुझे बेवकूफ क्यों कहा?"

उसकी पत्नी ने उसकी तरफ देखा और बोली — "तुम तो मेरे पिता से भी ज्यादा बेवकूफ हो। तुमको तुम्हारे माता पिता से केवल कुछ जानवर विरासत में मिले और तुमने वे सब केवल मुझे पाने के लिये दे दिये।

अगर तुमने कोई लड़की अपने गाँव की ली होती तो शायद उसकी तुम्हें इतनी कीमत न देनी पड़ती। पर तुम तो कोई विदेशी लड़की चाहते थे और इसी लिये तुम इतने गरीब हो गये।

इतना ही नहीं तुमने तो मुझे भी गरीब बना दिया क्योंकि हमारे पास इतना खाना ही नहीं है कि हम रोज पेट भर कर खाना खा

सकें। अगर तुमने कुछ जानवर भी अपने पास रख लिये होते तो तुम आज पड़ोसियों के घर में काम नहीं कर रहे होते।"

और पति को यह मानना पड़ा कि उसकी पत्नी ठीक कह रही थी। वह वाकई अपने ससुर से भी ज़्यादा बेवकूफ था।

वह नौजवान भी जो उसको ले जाना चाहता था जानना चाहता था कि वह बेवकूफ क्यों था।

वह लड़की बोली — "तुम तो मेरे पिता और पति दोनों की बेवकूफियों को मिला कर उनसे भी ज़्यादा बेवकूफ हो। यह मैं यकीन के साथ कह सकती हूँ।"

"इसका क्या मतलब है?"

"तुम तो गाय के मॉस के इस चौथाई टुकड़े के बदले में वह चीज़ लेना चाहते थे जिसको उसके पिता ने 100 जानवर ले कर दिया था और उसके पति ने 100 जानवर दे कर लिया था। क्या तुम मेरे पिता और पति दोनों से ही ज़्यादा बेवकूफ नहीं हो?"

वह नौजवान भी शरम और डर से लाल पड़ गया। उसने सोचा कि उसके लिये अब यही अच्छा है कि इससे पहले कि बात और आगे बढ़े और उस लड़की का पति उसको मारे उसको अब यहाँ से चले जाना चाहिये और वह वहाँ से उठ कर चला गया।

उधर लड़की का पिता अपने गाँव चला गया पर वहाँ जा कर उसने तुरन्त ही अपने दामाद को उसके 100 जानवर वापस कर दिये

औरउसे माफ करने के लिये उसको ऊपर से 200 जानवर और दे दिये।

इस तरह से वे पति पत्नी दोनों अब अमीर हो गये थे। अब वे सुख से रहने लगे।

14 तीन अजीब गॉव[73]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश की हौसा जनजाति के लोगों में कही सुनी जाती है।

यह बहुत दिनों की बात है एक जगह एक स्त्री अपनी दो बेटियों के साथ रहती थी। उसकी दोनों बेटियॉ शादी के लायक थीं।

दिन गुजरते गये और एक दिन आखिर उस स्त्री को अपनी दोनों बेटियों के लिये दुलहे मिल ही गये। पर दोनों ही अपने अपने में कुछ निराले थे।

उनमें से एक एक ऐसे गॉव से आता था जहॉ किसी को सोने की इजाज़त नहीं थी और दूसरा एक ऐसे गॉव का था जहॉ किसी को खाने की इजाजत नहीं थी।

लेकिन बस यह न पूछो कि यह सब कैसे मुमकिन था। या तो उन दोनों गॉवों पर कोई जादू का साया पड़ा हुआ था और या फिर उन पर किसी शैतान का असर था।

पर सच तो यही था कि उनमें से एक गॉव में लोग सोते नहीं थे और दूसरे में लोग खाते नहीं थे।

---

[73] Three Strange Villages (Tale No 14) – a folktale from Hausa Tribe, Nigeria, West Africa. Hausa people are mostly Muslims.

उस स्त्री ने इन अजीब चीज़ों के बारे में कुछ ज़्यादा विचार नहीं किया और अपनी दोनों बेटियों की शादी अपने चुने हुए लड़कों से कर दी।

बड़ी लड़की एक सुन्दर से घर में चली गयी वहाँ उसकी सेवा करने के लिये बहुत सारे नौकर चाकर थे। उसके घर में किसी चीज़ की कमी नहीं थी, सिवाय सोने के आनन्द के।

उस लड़की की बिना सोये रात पर रात गुजरे जा रही थी और उसकी पलक भी नहीं झपक रही थी। इससे उसको हर समय थकान रहती। वह बहुत चिड़चिड़ी हो गयी थी और वह अपने आपको किसी तरह भी सँभाल नहीं पा रही थी।

उसने अपने पति को बहुत समझाया कि सोना उसके लिये कितना जरूरी था पर वह समझता ही नहीं था और बल्कि कुछ गुस्से और डर से उसकी तरफ देखता था।

सो लड़की ने यह सब अपनी माँ को लिखा — "माँ, मैं यहाँ बिल्कुल ठीक हूँ पर मैं चाहती हूँ कि तुम कुछ दिनों के लिये मेरे पास आ कर रहो।"

माँ को जैसे ही यह चिट्ठी मिली उसको लगा कि जरूर ही कोई गड़बड़ है। उसने अपनी बेटी के लिये कुछ मिठाई बनायी और अपनी सबसे अच्छी पोशाक पहन कर उसके घर चल दी।

एक दिन और एक रात की यात्रा के बाद वह अपनी बेटी के घर जा पहुँची जहाँ लोग कभी सोते नहीं थे। वहाँ सबने उसका दिल

खोल कर स्वागत किया और उसके आने की खुशी में एक दावत का इन्तजाम किया।

उसके दामाद[74] ने कहा — "हम आपका स्वागत करते हैं। भगवान करे आप कभी न सोयें।"

दामाद की ऐसी इच्छा पर सब लोगों ने ताली बजायी पर लड़की की माँ बेचारी हक्का बक्का रह गयी कि यह कैसी इच्छा थी।

उसकी बेटी उसके कान में फुसफुसायी — "यहाँ ज़्यादा खाना पीना मत माँ नहीं तो तुम थक जाओगी और फिर सो जाओगी। मैं तुमको बाद में आ कर सब कुछ समझा दूँगी।"

दावत खत्म हो गयी, मेहमान लोग चले गये और माँ ने बेटी की बात सुनी। वह लड़की अपने पति को बहुत प्यार करती थी पर वह इस तरह की जिन्दगी और नहीं जी सकती थी।

उसको नींद की जरूरत थी पर उसको डर था कि अगर वह कहीं सो गयी तो वह अपनी ससुराल वालों को नाराज कर देगी। या फिर घर से ही बाहर निकाल दी जायेगी। इसलिये वह हमेशा न सोने की ही कोशिश करती थी।

उसकी माँ को लगा कि ये हालात कुछ ठीक नहीं थे पर उसकी यह समझ में नहीं आ रहा था कि उनको सुधारने के लिये वह करे क्या। किसी तरह उसने अपनी बेटी को तसल्ली दी और वह लेटने चली गयी।

---

[74] Translated for the word "Son-in-Law" – daughter's husband

पर यह सारा मामला उसको इतना परेशान कर रहा था कि वह रात भर सो ही नहीं सकी और यह उसके लिये अच्छा ही रहा क्योंकि इस तरह से वह वहाँ किसी को नाराज नहीं कर सकी।

जब सुबह हुई तो उसकी बेटी कुँए से पानी लाने गयी। वहाँ जाने से पहले उसने अपनी माँ से कहा — "माँ, मैं आग पर दूध रखे जाती हूँ ज़रा उसको देखती रहना।"

सो माँ आग के पास बैठ गयी। रात भर तो वह सो नहीं सकी थी सो वह बहुत थकी हुई थी और फिर उसको मिली आग की गरमी। उन दोनों के असर से उसका सिर नीचे की तरफ झुकने लगा और उसे जँभाइयाँ आने लगीं।

बस कुछ मिनटों में ही उसके ऊपर तो नींद छा गयी। वह वहीं पैर फैला कर लेट गयी और तुरन्त ही सो गयी।

उसी समय वहाँ उसकी बेटी की एक पड़ोसन दूध माँगने के लिये आ गयी। वह घर में घुसी, उसने आवाज लगायी और आग के पास गयी तो उसने देखा कि वह स्त्री तो वहाँ सो रही थी।

उसने तुरन्त ही शोर मचा दिया — "अरे कोई सहायता करो। यह क्या हो गया। यह बेचारी स्त्री तो मर गयी।"

सारे गाँव में शोर मच गया। कोई इधर भाग रहा था तो कोई उधर चिल्ला रहा था। कोई गाँव के सारे लोगों को बुलाने के लिये ढोल बजा रहा था और कुछ लोग तो उस स्त्री की दफ़न की रस्म की तैयारी भी करने लगे थे।

बेटी ने भी यह सब सुना तो वह जल्दी से घर दौड़ी। घर में घुस कर जब उसने अपनी माँ को देखा तो उसकी समझ में आया कि क्या मामला है।

वह चिल्लायी — "शान्त हो जाओ, शान्त हो जाओ मेरी माँ मरी नहीं है वह तो बस केवल सो गयी है।"

यह सुन कर सब लोग चुप हो गये और उन सबकी आँखें लड़की पर जम गयीं। वह आगे बोली — "हाँ, सोना हम सबके लिये सामान्य बात है। सोना कोई मौत नहीं है। देखो।"

कह कर उसने अपनी माँ को ज़ोर से हिलाया तो उसकी माँ जाग गयी और उठ कर बैठी हो गयी। वह अपनी आँखें मलने लगी। पास में खड़े सब लोग उसकी तरफ आश्चर्य से देखने लगे। जैसे वह मर कर ज़िन्दा हो गयी हो।

फिर बेटी की माँ ने जँभाइयाँ लेते हुए कहा — "मेरे प्यारे दामाद जी, उसके सम्बन्धियों और उसके अच्छे दोस्तों, नींद तो बहुत जरूरी है और तुम लोगों के लिये अच्छी भी है। इसलिये नींद से मत डरो। यह तो एक स्वाभाविक चीज़ है जो हर किसी को आनी चाहिये।"

यह सुन कर वे सब लोग अपने बेवकूफी भरे डर पर बहुत शरमिन्दा हुए। उस दिन से उनका सबका नींद से जो डर बैठा हुआ था वह निकल गया और उन्होंने सोना सीख लिया।

अब हम दूसरे गाँव चलते हैं जहाँ उस स्त्री की दूसरी बेटी की शादी हुई थी। वहाँ लोगों को खाना खाने की इजाज़त नहीं थी। वह लड़की भी वहाँ बहुत अच्छी जगह रह रही थी।

उसका घर भी बहुत सुन्दर था। उसके घर में भी बहुत सारे नौकर चाकर काम करते थे। सब कुछ बहुत अच्छा था सब लोग उस लड़की को बहुत प्यार करते थे।

पर बस वहाँ एक ही कमी थी – कोई खाना नहीं था। न तो सुबह को, न दोपहर को और न शाम को। अब यह कोई छोटी बात तो थी नहीं।

यह लड़की वहाँ खाना न खाने की वजह से बहुत जल्दी थकान महसूस करने लगी। उसने अपने पति को अपनी जरूरतें समझाने की बहुत कोशिश की पर उसकी समझ में भी कुछ नहीं आ रहा था क्योंकि वह जानता ही नहीं था कि खाना क्या होता है।

यह सब देख कर वह बहुत परेशान हो गयी और उसने अपनी माँ को एक खत भेजा जिसमें लिखा था — "माँ, मैं यहाँ बहुत अच्छी हूँ, बहुत खुश हूँ। पर फिर भी मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे घर कुछ दिन आ कर रहो।"

उसकी माँ जो अभी अभी अपनी बड़ी बेटी के घर से लौट कर आयी थी समझ गयी कि यहाँ भी जरूर कुछ गड़बड़ है। उसने तुरन्त ही अपनी बेटी के लिये कुछ मिठाई बनायी और अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन कर उसके गाँव चल दी।

वहाँ भी वह एक दिन और एक रात चल कर अपनी बेटी के गाँव पहुँची जहाँ कभी किसी ने कुछ खाया नहीं था।

बेटी के घर में सबने उसका दिल से स्वागत किया और उसके आने की खुशी में एक नाच का इन्तजाम किया। दामाद ने अपनी सास के आने की खुशी में यह इच्छा प्रगट की — "हम आप का यहाँ स्वागत करते हैं और भगवान से यह प्रार्थना करते हैं कि आप कभी किसी खाने का स्वाद न चखे।"

सब लोगों ने इस इच्छा पर खुशी प्रगट की, तालियाँ बजायीं पर लड़की की माँ इस सब पर कुछ खुश नजर नहीं आयी।

उसकी बेटी ने यह देख लिया तो वह उसके कान में फुसफुसायी — "माँ हँसो और ऐसा दिखाओ कि जैसे सब कुछ ठीक है। मैं तुम्हें बाद में सब समझाती हूँ।

नाच खत्म हुआ। थके हुए मेहमान चले गये तो माँ ने बेटी की शिकायत सुनी। वह अपने पति को बहुत प्यार करती थी। वह अपने गाँव के रीति रिवाजों को भी खूब अच्छी तरह से समझती थी पर अगर वह दिन में कम से कम एक बार खाना न खाये तो उसका सुन्दर पति बहुत जल्दी एक सुन्दर विधुर[75] बन जायेगा।

माँ ने अपनी बेटी को तसल्ली दी और उसको उसके पलंग पर सुलाने ले गयी। उसको "गुड नाइट" कहा और फिर अपने कमरे में

[75] Translated for the word "Widower" – whose wife has died.

चली गयी। वहाँ जा कर वह अपनी बेटी की समस्या का हल सोचती रही सोचती रही तो उसको एक विचार आया।

जब अँधेरा हो गया तो वह एक काशीफल[76] के खेत में गयी और वहाँ से उसने कुछ सबसे बड़े और पके हुए काशीफल तोड़े और उनको ले कर घर वापस आ गयी।

वह सारी रात काम करती रही और सुबह होने तक उसने 100 से भी ज़्यादा कटोरे काशीफल का सूप बना लिया। सुबह उसने उन कटोरों को ले जा कर घर के बाहर के बरामदे में रख दिया।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो उसने अपनी बेटी को बुलाया और उससे कहा — "आओ बेटी नाश्ता तैयार है।"

उसकी बेटी बोली — "पर माँ... । तुमको मालूम होना चाहिये कि यहाँ लोग खाना नहीं खाते।"

उसकी माँ कुछ गुस्से से बोली — "हाँ मुझे मालूम है।" कह कर उसने अपनी बेटी को बरामदे की तरफ धक्का दे दिया। दोनों स्त्रियाँ वहाँ बैठ गयीं और आराम से नाश्ता करने लगीं।

उसी समय एक छोटा लड़का रोता हुआ उनके पास आया। उसकी कमान की रस्सी टूट गयी थी। दोनों स्त्रियों ने उसको चुप किया और उसको गोद में बिठा लिया।

[76] Translated for the word "Pumpkin" – see its pucture above.

फिर अनजाने में ही उन्होंने उसको कुछ चम्मच गरम गरम सूप पिला दिया। वह छोटा लड़का तो बहुत ही आश्चर्य में पड़ गया क्योंकि उसने तो कभी कुछ खाया ही नहीं था। वह तो पहली बार ही कुछ खा पी रहा था। उसको वह सूप बहुत अच्छा लगा।

उसके बाद उन्होंने उसको पीने के लिये कुछ दूध दिया तो उसको उसे पी कर भी बहुत अच्छा लगा। उसने रोना बन्द कर दिया और खुशी से ताली बजाने लगा।

उसको सूप अच्छा लगा तो उसने सूप और माँगा। जब वह दूसरा कटोरा सूप पी रहा था तो सोचो वहाँ कौन आ गया? उसका पिता।

अपने बेटे को खाता हुआ देख कर पिता पहले तो पीला पड़ गया फिर परेशान होते हुए पूछा — "इन जादूगरनियों ने तेरे ऊपर क्या जादू किया है। अब तो तू मर जायेगा।"

माँ बोली — "नहीं। वह खाने से नहीं मरेगा पर अगर वह नहीं खायेगा तो मर जायेगा। लोग बिना खाना खाये मरते हैं। खाना खा कर तो उनमें ताकत आती है।"

पर उसके पिता की यह बात समझ में नहीं आयी। वह रोने लगा तो उसके रोने की आवाज सुन कर गाँव के सारे लोग वहाँ इकट्ठा हो गये और चिन्ता में पड़ कर उस बच्चे के चारों तरफ जमा हो गये।

मॉ का दामाद भी वहीं था। वह भी अपनी सास की करनी से अपना गुस्सा और शरम छिपाये नहीं छिपा पा रहा था।

तब मॉ बोली — "प्रिय दामाद जी, सम्बन्धियों और प्यारे दोस्तों, आप सब आयें और वैसा ही करें जैसा कि इस भोले भाले बच्चे ने किया है। उसने यह खा कर अपनी स्वाभाविक आदत को ढूँढ लिया है। आप सब भी आयें और इसे खायें।"

बच्चे को अभी तक ज़िन्दा देख कर सब बड़े आश्चर्यचकित थे सो उनको अपनी बेवकूफी पर बहुत शरम आयी। वे सब भी खाने के रीति रिवाज सीखने के लिये उन दोनों स्त्रियों के पास खाने की मेज पर बैठ गये और सूप पीने लगे।

और उसके बाद तो उन्होंने फिर कभी शाम का नाश्ता भी नहीं छोड़ा।

15 बाज़ और बच्चा[77]

यह बहुत दिनों की बात है कि एक जगह एक स्त्री रहती थी जिसके एक बहुत छोटा बेटा था। उसको रोज ही खेतों पर काम करने के लिये जाना पड़ता था। पर उसकी यह समझ में नहीं आता था कि जब वह काम पर जाये तो वह अपने बच्चे को कहाँ छोड़ कर जाये सो वह हमेशा ही उसको अपने साथ लेकर जाती थी।

वह उसको एक पेड़ के नीचे लिटा देती वहीं उसको दूध पिलाती फिर अपना हल ले कर अपने खेत जोतती।

एक दिन उसने बच्चे को ठीक से दूध पिला दिया था ताकि वह कुछ देर के लिये शान्त रहे और फिर एक बहुत ही सुन्दर केले का पेड़ देख कर उसकी छाँह में उसको आराम से लिटा दिया पर जैसे ही वह उसको लिटा कर वहाँ से अपना काम करने गयी तो वह बच्चा रोने लगा और फिर चुप ही नहीं हो।

स्त्री ने उसको चुप करने की बहुत कोशिश की। वह चुप हुआ भी पर कुछ देर बाद ही जैसे ही वह उसको छोड़ कर वहाँ से गयी तो उसने फिर ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया।

[77] Hawk and the Child (Tale No 15) – a folktale from Baila (Ila) Tribe, Zambia, Southern Africa.

उसी समय एक चील[78] वहॉ ऊपर से उड़ कर नीचे आयी और बच्चे के पास आ कर बैठ गयी। उसने बच्चे को जब तक अपने पंखों से सहलाया और अपनी चोंच से गुदगुदी की जब तक वह बच्चा मुस्कुराया नहीं।

फिर उसने देखा कि बच्चे की मॉ अपना हल लिये उसको मारने के लिये चली आ रही है तो वह वहॉ से उड़ गयी। मॉ ने बच्चे को उठाया और गॉव वापस चली गयी।

उसने अपने पति से इस असाधारण घटना के बारे में इस डर से कुछ नहीं कहा कि वह उसकी इस बात का विश्वास ही नहीं करेगा। रोज की तरह से उसने अपना शाम का खाना बनाया, बच्चे को दूध पिलाया और सोने चली गयी।

अगली सुबह रोज की तरह वह फिर अपने बच्चे को ले कर खेतों पर अपना काम करने गयी। उसने फिर अपने बच्चे को एक पेड़ की छॉह में लिटाया, दूध पिलाया और अपना हल ले कर अपने काम पर चली गयी।

पर कुछ देर बाद बच्चे ने फिर से रोना चिल्लाना शुरू कर दिया। पर देखो तो कि वही चील फिर से वहॉ आ गयी। उसने फिर से बच्चे को अपने पंखों से सहलाया और चोंच से गुदगुदाया जब तक वह चुप नहीं हो गया।

---

[78] Translated for the word “Hawk” – see its picture above.

इस बार वह स्त्री डर कम रही थी और उसको आश्चर्य ज़्यादा हो रहा था। उसके मुँह से निकला — "कितने आश्चर्य की बात है कि यह चील मेरे बच्चे को कोई नुकसान पहुँचाने की बजाय उसको चुप करा रही है और बच्चा भी चुप हो गया।"

उस स्त्री ने अपने बच्चे को उठाया और तुरन्त ही अपने गाँव वापस चली गयी। जैसे ही उसके पति ने उसको जल्दी जल्दी समय से पहले आते देखा तो उससे पूछा कि क्या हुआ था।

अबकी बार उस स्त्री ने अपने पति को बताया — "आज एक बड़ी आश्चर्यजनक घटना घटी।"

पति बोला — "यहाँ तो कभी ऐसी असाधारण घटना होती नहीं। अबकी बार यह चमत्कार कैसे हुआ?"

स्त्री बोली — "कल भी और आज भी जब मैं खेत जोत रही थी एक चील उड़ कर नीचे आयी।"

पति ने बीच में ही बात काटी "तो क्या हुआ। चील देखना तो कोई ऐसी असाधारण घटना नहीं है।"

"अरे आगे तो सुनो, बात यहीं तक नहीं है। बात यह है कि बच्चा रोये जा रहा था रोये जा रहा था। चुप ही नहीं हो रहा था।

मैं उसको देखने जाने वाली ही थी कि वह क्यों रो रहा है कि कहीं से खुले नीले आसमान में से एक चील नीचे आयी और आ कर उसके पास बैठ गयी।

उसने उसको अपने पंखों से सहालाया और अपनी चोंच से गुदगुदाया और बच्चा जल्दी ही चुप होगया।"

पति थोड़ी ज़ोर से बोला — "यह तुम क्या बेकार की बातें कह रही हो? जहाँ तक किसी को भी याद पड़ता है ऐसा पहले कभी हुआ है क्या? तुम ऐसी कहानियाँ अपने ही पास रखो।" यह सुन कर स्त्री ने अपना सिर झुका लिया और फिर कुछ नहीं कहा।

उसने अपने बच्चे को उठाया, हल को अपने कन्धे पर रखा और फिर से काम पर चली गयी।

उसने फिर से अपने बेटे को एक पेड़ की छाँह में लिटाया, दूध पिलाया और हल ले कर खेत जोतने चली गयी। बच्चे ने फिर से रोना शुरू कर दिया।

स्त्री ने सोचा मैं अभी अभी घर जाती हूँ और अपने पति को बुला कर यह सब दिखाती हूँ। उसने तुरन्त ही बच्चे को उठाया और तुरन्त ही गाँव भागी भागी गयी।

जब वह घर पहुँची तो उसने अपने पति को झोंपड़ी के बाहर अपने तीर तेज़ करते हुए बैठे देखा तो उसने उससे चिल्ला कर कहा — "आओ जल्दी आओ और आ कर देखो कि मैंने तुमसे सच कहा था या झूठ।"

पति को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने तुरन्त ही अपना तीर कमान उठाया और अपनी पत्नी के पीछे पीछे चल दिया। जैसे ही वे खेत के पास पहुँचे स्त्री ने कहा — "उन झाड़ियों के पीछे छिप

जाओ और देखो हिलना नहीं। मैं बच्चे को यहाँ इस पेड़ की छाँह में लिटाती हूँ।"

जैसे ही बच्चे की माँ उसको वहाँ अकेला छोड़ कर गयी बच्चे ने फिर से रोना शुरू कर दिया। कुछ पल में ही वह चील वहाँ आ गयी और आ कर उसने उसको अपने पंखों से सहलाना शुरू कर दिया और चोंच से गुदगुदाना शुरू कर दिया।

यह देख कर बच्चे का पिता तो बहुत डर गया। उसने अपनी कमान खींची, निशाना साधा और तीर छोड़ दिया। पर इत्तफाक से उसी पल वह चील एक तरफ को हट गयी और जो तीर उसको मारने के लिये चलाया गया था वह बच्चे को लग गया।

बड़े लोगों का कहना है कि इस तरह से दुनियाँ का यह पहला खून था।

चील यह कहते हुए ऊपर उड़ गयी — "ओ आदमी, तुम और तुम्हारे जैसे और जो भी आदमी इस समय दुनियाँ में हैं और जो आने वाले हैं वे भी, जैसे मैं तुम्हारे बच्चे को तसल्ली देने आयी फिर भी तुमने मुझे मारने की कोशिश की मेरी बद दुआ उन सबको लगेगी।

तुमने अपने ही बच्चे को मारा है तुमको भी तुम्हारा अपना ही कोई आदमी मारेगा और इस तरह वे सब आपस में एक दूसरे को मारते रहेंगे।" और बदकिस्मती से उसकी बद दुआ अभी तक चल रही है।

16 ऐनगोम्बा और उसकी टोकरी[79]

एक बार की बात है कि एक दिन बहुत सुबह सुबह रोशनी फूटते ही चार छोटी लड़कियों ने एक बड़ी नदी में मछली पकड़ने जाने का प्रोग्राम बनाया।

उन चार लड़कियों में एक एनगोम्बा थी – गरीब, बीमार, घावों से भरी हुई। वह गाँव की सबसे ज़्यादा गरीब लड़की थी।

सो चारों लड़कियाँ मछली पकड़ने चलीं। पर कुछ दूर चलने के बाद ही दूसरी तीन लड़कियों ने ऐनगोम्बा से कहा — "तुम अपने घर जाओ। तुम हमारे जैसी नहीं हो।"

एनगोम्बा तुरन्त बोली — "नहीं मैं वापस नहीं जाऊँगी। मैं भी अपनी माँ के लिये मछली पकड़ना चाहती हूँ।"

बाकी तीनों लड़कियाँ एक साथ बोलीं — "तुम? तुम क्या सोचती हो तुम क्या मछली पकड़ोगी? तुम तो बीमार हो। जाओ जाओ तुम वापस घर चली जाओ।"

यह सुन कर ऐनगोम्बा की आँखों में आँसू आ गये पर वह चुप रही। उसने दूसरी लड़कियों को आगे आगे जाने दिया और वह झील के बराबर के रास्ते से नदी की तरफ चल दी।

[79] Ngomba and Her Basket (Tale No 16) – a folktale from Bakongo Tribe, Congo, Central Africa.

वह अपना मछली पकड़ने का प्लान छोड़ने वाली नहीं थी। वह चलती रही चलती रही जब तक कि वह बड़ी नदी के किनारे तक नहीं पहुँच गयी।

वहाँ जा कर उसने एक मछली पकड़ने वाला डंडा गाड़ा और मछली पकड़ना शुरू किया। उसने गाया —

मैं एक गरीब लड़की हूँ

जैसे ही उसने यह गाया और अपना मछली पकड़ने वाला काँटा पानी में फेंका तो तुरन्त ही एक मछली ने उसमें अपना मुँह मारा। उसने उस मछली को पकड़ कर अपनी टोकरी में रख लिया और फिर गाया —

मेरी कोई परवाह नहीं करता

यह सुन कर एक दूसरी मछली ने काँटे में अपना मुँह मारा तो उसने उसको भी अपनी टोकरी में रख लिया। उसने फिर गाया —

दूसरी लड़कियों ने कहा "घर जाओ"

एक और मछली ने काँटे में अपना मुँह मारा और वह मछली भी ऐनगोम्बा की टोकरी में गयी। उसने फिर गाया —

मैं बिल्कुल अकेली हूँ

और फिर एक और मछली ऐनगोम्बा की टोकरी में गयी।

जब वह इस तरह से मछलियॉ पकड़ रही थी कि तभी एक डाकू वहॉ से गुजर रहा था।

उसने उस लड़की का गीत सुना और छिप कर उसे देखने लगा कि उसने कितनी मछलियॉ पकड़ी हैं। फिर वह अपनी छिपने की जगह से बाहर निकल कर आया और उसके पास गया।

उसने उससे पूछा — "तुम यहॉ अकेली क्या कर रही हो?"

ऐनगोम्बा बोली — "क्या तुमको दिखायी नहीं देता कि मैं यहॉ मछलियॉ पकड़ रही हूँ? पर आप कौन हैं?"

डाकू ने जवाब दिया — "उफ, मैं भी क्या चीज़ हूँ? मैं एक डाकू हूँ और हर आदमी मुझसे डरता है।"

"ओह डाकू जी मुझे माफ करना। मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप मुझे मारना नहीं। मैं बीमार जरूर हूँ पर मैं मछली पकड़ने में बहुत अच्छी हूँ। देखिये ज़रा मैं कैसे मछली पकड़ती हूँ।"

कह कर उसने अपना कॉटा पानी में फेंका और फिर से गाना शुरू किया —

यह आदमी मुझे मारना चाहता है

एक मछली ने उसके कॉटे में अपना मुँह मारा और ऐनगोम्बा ने उसे तुरन्त अपनी टोकरी में रख लिया। उसने फिर गाया —

मेरी कोई परवाह नहीं करता

एक और मछली उसकी टोकरी में गयी। उसने फिर गाया —

मैं रोती हूँ और उससे दया की भीख माँगती हूँ

एक और मछली उसकी टोकरी में गयी। उसने फिर गाया

वह कहता है कि तुम्हारे ऊपर कोई दया नहीं

और एक और मछली उसकी टोकरी में गयी।

बच्ची की मछली पकड़ने की यह असाधारण योग्यता देख कर डाकू उससे बोला — "तुम डरो नहीं। अब तुम मेरे साथ आ रही हो।"

पर ऐनगोम्बा बोली — "नहीं, मैं आपके साथ नहीं आ सकती। मुझे ये मछलियाँ अपनी माँ के पास ले जानी हैं।"

डाकू बोला — "या तो तुम मेरे साथ चलो नहीं तो मैं तुमको मार डालूँगा।"

सो बच्ची ने फिर से अपना मछली पकड़ने वाला काँटा पानी में डाला और गाया —

यह डाकू मुझे मार डालने की धमकी देता है

एक मछली ने फिर से काँटे में अपना मुँह मारा और वह भी ऐनगोम्बा की टोकरी में गयी। उसने फिर गाया —

मेरी कोई परवाह नहीं करता

एक और मछली ऐनगोम्बा की टोकरी में गयी। उसने फिर गाया —

पर ये मछली मेरी माँ के लिये छोड़ दो

और फिर एक और मछली ऐनगोम्बा की टोकरी में गयी। उसने फिर गाया —

मैं तुम्हारे लिये कुछ और मछली पकड़ दूँगी तुम देखना

और फिर एक और मछली ऐनगोम्बा की टोकरी में गयी।

डाकू ने एक बार फिर कुछ देर तक सोचा और बोला — "ठीक है, हम ये मछलियाँ तुम्हारी माँ के पास ले चलेंगे पर उसके बाद तुम मेरे साथ चलोगी और मेरे साथ रहोगी। तुम वहाँ मेरे पास बड़ी इज्जत के साथ रहोगी और फिर जब तुम बड़ी हो जाओगी तब मैं तुमसे शादी कर लूँगा।"

बच्ची को पता नहीं था कि वह क्या कहे। पर उसको उस समय लगा कि उसकी ज़िन्दगी तभी तक सुरक्षित है जब तक वह उस डाकू का कहना मानती है सो उसने वही किया जो वह डाकू चाहता था। उन्होंने वे मछलियाँ बच्ची की माँ को दीं और वे दोनों साथ साथ डाकू के गाँव चले गये।

ऐनगोम्बा की वह भयानक बीमारी ठीक हो गयी। वह वहाँ सुख में बड़ी होने लगी। उसको वहाँ वे सब सुख मिले जिनका उस

डाकू ने उससे वायदा किया था। समय निकलता गया। अब वह इतनी बड़ी हो गयी थी कि अब वह शादी के लायक हो गयी थी।

पर ऐनगोम्बा का उस डाकू से शादी करने का कोई इरादा नहीं था इसलिये उसने अपने आपको उससे आजाद करने का एक प्लान बनाया।

उसने अपनी कुछ वफादार नौकरों को इकट्ठा किया और उनको जंगल में रोज सबसे ज्यादा खुरदरी पाम की पत्तियाँ इकट्ठी करने के लिये भेजा। उसने उन पत्तियों को गाँव से दूर एक साफ जगह पर सुखाया।

जब उसको लगा कि उसके पास वे पत्तियाँ काफी हो गयीं तो उसने उसकी वैसी ही एक बहुत बड़ी टोकरी बनायी जैसी कि उसके पास मछली पकड़ने वाली थी।

दिन बीतते गये। डाकू को कुछ भी शक नहीं हुआ हालाँकि उसको कई बार पाम के रस की खुशबू हवा में तैरती लगी। पर उसकी यह समझ में नहीं आया कि वह आ कहाँ से रही थी।

वह अपनी डाकू की ज़िन्दगी जीता रहा। लोगों को लूटता रहा, उनके ऊपर हमले करता रहा और उनको मारता रहा। पर साथ में वह अपनी शादी के दिन के बारे में भी बराबर सोचता रहा।

आखिर ऐनगोम्बा की टोकरी बन कर तैयार हो गयी। अब वह समय आ गया था जब ऐनगोम्बा को अपना प्लान शुरू करना था। एक दिन सुबह को जब वह डाकू बाहर जा रहा था तो जाने से

पहले वह उससे बोला — "तुम तैयार हो जाओ। हम लोग आज दोपहर को शादी कर रहे हैं।"

सो ऐनगोम्बा और उसके नौकर उस बड़ी टोकरी को एक पहाड़ की चोटी पर ले गये और वहाँ ले जा कर उसको उस चोटी के किनारे पर रख दिया।

फिर वे सब उस टोकरी में कूद कर बैठ गये और उसको हिलाने लगे जब तक वह इतनी खराब तरीके से नहीं रखी गयी कि वह एक ही झटके से नीचे खाई में गिर पड़ती।

इस तरह से रख कर उन्होंने उसको खाई में गिराया पर वह खाई में नहीं गिरी बल्कि हवा में रुक गयी जैसे हवा के छिपे हुए हाथों ने उसको रोक लिया हो। और ऐनगोम्बा ने गाया —

ओ टोकरी घर चल, जैसा मैं कहती हूँ

यह सुन कर वह टोकरी ऐनगेम्बा की माँ के घर की तरफ चल दी। उसने फिर गाया —

जल्दी उड़ और मुझे यहाँ से दूर ले चल

और टोकरी जल्दी जल्दी उड़ चली। उसने फिर गाया —

बहुत दूर, जितनी तेज़ तू उड़ सकती है

और वह टोकरी बहुत तेज उड़ चली। उसने फिर गाया —

जल्दी, जल्दी, उस आदमी से दूर

और वह टोकरी उड़ती गयी और उड़ती गयी।

पर कुछ ऐसा हुआ कि वह टोकरी उस डाकू के सिर के ऊपर से उड़ी। वह डाकू एक पेड़ की एक शाख पर छिपा हुआ बैठा था ताकि वह किसी जाने वाले के ऊपर हमला कर सके।

डाकू ने ऊपर आसमान में एक टोकरी उड़ती देखी तो उसके मुँह से निकला "ओह"।

वह सोच रहा था कि काश उसकी होने वाली पत्नी वहाँ उस अच्छी चीज़ को देखने के लिये होती – एक बहुत ही बड़ी टोकरी, हवा में लटकी हुई, शान्ति से जाती हुई।

उसी समय वह टोकरी थोड़ी सी नीची हुई और उसके सिर के पास से निकल गयी। उसी समय डाकू ने देखा कि उस टोकरी में तो लोग बैठे हुए थे। उसने पहचान लिया कि उन लोगों के बीच में तो उसकी होने वाली पत्नी भी बैठी थी।

यह देख कर उसको बहुत आश्चर्य हुआ। वह उसका पीछा करने के लिये एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर होता हुआ चल दिया। वह जब तक चलता गया जब तक उसको दोबारा से वह टोकरी दिखायी नहीं दे गयी थी। वह ऐनगोम्बा के गाँव की तरफ जा रही थी।

इस बीच ऐनगोम्बा की टोकरी एक दो गाँव पार कर उसकी माँ के पुराने घर के सामने जा कर रुक गयी। ऐनगोम्बा तुरन्त ही टोकरी से नीचे उतरी और जा कर अपनी माँ से लिपट गयी।

उसकी मॉ ने पहले तो उसको पहचाना नहीं पर फिर जब उसकी ऑखों में देखा तब उसको लगा कि वह तो उसकी बीमार बेटी थी जिसको बहुत समय पहले एक डाकू अपने साथ ले गया था।

वह अब कितनी बड़ी हो गयी थी और कितनी सुन्दर और तन्दुरुस्त भी।

बस तभी अपनी होने वाली पत्नी के पीछे पीछे उसके लिये चिल्लाता हुआ वह डाकू भी आ गया। वह उसको मारने की धमकी भी दे रहा था।

वह बुढ़िया बोली — "यह सच है कि मेरी बेटी के ऊपर तुम्हारा यह बहुत बड़ा ऐहसान है क्योंकि तुमने उसको ठीक किया है। हम भी तुमको उसके लिये बहुत बहुत धन्यवाद देते हैं पर अगर ऐनगोम्बा तुम्हारे साथ रहना नहीं चाहती तो तुम उसको जबरदस्ती अपने पास नहीं रख सकते।"

डाकू गुस्से में भर कर बोला — "बेकार की बातें मत करो। यह लड़की मेरी है। मैंने इसको ठीक किया है और यह मेरे पास ही रहने वाली है।"

मॉ ने महसूस किया कि इस जिद्दी से बात करने के लिये होशियारी से काम लेना पड़ेगा। यह ऐसे नहीं मानेगा। सो उसने ऐनगोम्बा को ले जाने के लिये डाकू को शाम तक इन्तजार करने के लिये कहा।

इस बीच उसने अपने रसोईघर में एक गड्ढा खोदा। उस गड्ढे में उसने एक बड़ा बरतन रख दिया जिसमें वह साबुन बनाया करती थी। उसमें उसने उबलते पानी से भर दिया।

फिर उसने वह गड्ढा कुछ डंडियों पत्तों और एक चटाई से ढक दिया और डाकू को शाम का खाना खाने के लिये रसोईघर में बुलाया।

अब यह सोचना तो बहुत आसान है कि यह कहानी किस तरह खत्म हुई होगी। वह डाकू उस गरम पानी से भरे बरतन में गिर गया और उबल गया।

इस कहानी से यह सीख मिलती है कि तुम अगर किसी का भला करते हो तो इसका यह मतलब नहीं है कि तुम उसको अपनी इच्छाओं का दास बना लो।

17 कछुए के खोल पर दरारें कैसे[80]

कछुए के खोल पर जो दरारें हम आज देखते हैं ये दरारें कैसे आयीं इस बारे में कई देशों में कई लोक कथाऐं कई तरह से कही सुनी जाती है।

फिर भी करीब करीब सब कथाओं में एक बात एक सी है और वह यह कि हर लोक कथा में कछुए का खोल उसके ऊपर आसमान से नीचे गिरने से ही टूटता है।

पर यह भी सोचने की एक बात है कि वह आसमान में जाता ही क्यों है और फिर नीचे गिरता ही क्यों है। कछुआ तो आसमान का जीव नहीं है।

नीचे दी हुई लोक कथा अफ्रीका के ज़ाम्बिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है। देखते हैं कि इस लोक कथा में कछुए के साथ क्या बीती।

मिस्टर कछुआ मिसेज़ कछुए से शादी कर के बहुत खुशी खुशी रहता था। उनका एक दोस्त था मिस्टर गिद्ध[81]। वह अक्सर उनके घर आता जाता रहता था।

वह जब भी मिस्टर कछुए के घर आता था मिसेज़ कछुए के लिये कछ न कुछ भेंट लाता था और मिस्टर कछुए के लिये कोई न कोई स्वादिष्ट खाने की चीज़ ले कर आता था।

---

[80] How the Cracks in the Tortoise's Shell Came to Be (Tale No 17) – a folktale from Baila (Ila) Tribe, Zambia, Southern Africa.

[81] Translated for the word "Vulture" – see its picture above.

मिस्टर कछुआ उसको उसकी अपने घर इतनी बार आने का कुछ बदला देना चाहता था पर वह उसको कैसे देता। उसके तो पंख ही नहीं थे और बिना पंख के वह उसके घर जाता कैसे।

एक दिन वह अपनी पत्नी से बोला — "प्रिये, तुम भी शायद यही सोच रही होगी जो मैं सोच रहा हूँ। हमारा दोस्त मिस्टर गिद्ध कई बार हमारे घर आ चुका है। अगर हम उसके घर एक बार भी नहीं गये तो यह अच्छी बात नहीं है।"

मिसेज़ कछुआ बोली — "यह तो तुम ठीक कहते हो। पर हम उसके घर जायें कैसे? मिस्टर गिद्ध इस बात को समझता है कि हम तो उड़ ही नहीं सकते जब तक हमारे पंख न निकल आयें।"

मिस्टर कछुआ बोला — "बेवकूफी की बातें मत करो। अगर प्रकृति हमको इस खोल की जगह पंख देना चाहती तो हम चिड़िया होते न कि कछुआ।

पत्नी बोली — "ओह क्या सचमुच? क्या तुमको यकीन है कि ऐसा ही होता जैसा तुम सोच रहे हो? खैर चलो छोड़ो, अब यह बताओ कि तुम इस समस्या को कैसे सुलझाना चाहते हो?"

कछुआ कुछ सोचता हुआ बोला — "मुझे कोई न कोई तरीका निकालना ही पड़ेगा।"

अपना सिर हिलाते हुए उसकी पत्नी बोली — "ठीक है। जब तुमको कोई तरीका मिल जाये तो मुझे भी बताना।"

एक दिन और एक रात बीत गयी। अगले दिन की सुबह कछुआ खुश खुश अपनी पत्नी से बोला — "मुझे वह तरीका मिल गया। मुझे एक बहुत ही शानदार विचार आया है। सुनो, मिस्टर गिद्ध आज हम लोगों से मिलने आने वाला है।

तुम यह करना कि तुम मुझे पाम की पत्तियों में अच्छी तरह से लपेट देना। जब हमारा मेहमान आये तो वह पार्सल उसको दे देना और उससे कहना कि हमको कुछ तम्बाकू के बदले में कुछ मक्का वाहिये। बाकी मैं देख लूँगा।"

मिसेज़ कछुए ने वैसा ही किया जैसा उसके पति ने उससे करने के लिये कहा था। उसने मिस्टर कछुए को पाम की पत्तियों में बाँध दिया।

जब गिद्ध उनके घर उनसे मिलने आया तो उसने घर पर कछुए को नहीं देखा तो उसने उसकी पत्नी से पूछा — "मिसेज़ कछुआ, आज तुम्हारे पति कहाँ है?"

निसेज़ कछुआ ने उसको बताया कि उसको अपने किसी सम्बन्धी से मिलने जाना पड़ा और वह अब एक हफ्ते तक नहीं लौटेगा। सब गड़बड़ हो गया।

गिद्ध बोला — "गड़बड़ हो गया? लेकिन क्यों? एक हफ्ता तो ऐसे ही निकल जाता है।"

"मैं बताती हूँ मिस्टर गिद्ध कि क्यों सब गड़बड़ हो गया। क्योंकि वह चला गया है और मेरे पास मक्का का एक भुट्टा भी नहीं छोड़ गया। अब मुझे तम्बाकू के इस पार्सल के बदले में कुछ मक्का खरीदने जाना पड़ेगा।

पर यहाँ आस पास में कही मक्का दिखायी नहीं देती और तुमको तो मालूम है कि लम्बी यात्रा के लिये मेरी चाल बहुत धीमी है।"

मिस्टर गिद्ध बोला — "यह तो वाकई बड़ा गड़बड़ हो गया। मैं तुम्हारी चिन्ता समझ सकता हूँ।"

लेकिन फिर कुछ सोच कर बोला — "पर अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे लिये मक्का ला सकता हूँ। मेरे देश के हिस्से के खेतों में अभी भी काफी मक्का पड़ी हुई है।"

मिसेज़ कछुआ बोली — "ओह मिस्टर गिद्ध, यह तो तुम्हारी मेरे ऊपर बड़ी मेहरबानी होगी। अगर तुमको इसमें कोई बहुत ज़्यादा तकलीफ न हो तो. . . ।"

"ओह नहीं नहीं। इसमे तकलीफ की क्या बात है। यह तो मेरे लिये बहुत खुशी की बात होगी कि मैं अपने दोस्त की कुछ सहायता कर पाऊँगा।"

कह कर गिद्ध ने तम्बाकू का पार्सल अपने पंजों में उठाया जिसमें अन्दर मिस्टर कछुआ बैठा था और अपने घोंसले की तरफ उड़ गया।

पर जब वह उड़ रहा था तो उसने पार्सल में आती एक आवाज सुनी। “ओ मेरे दोस्त, यह मैं हूँ तुम्हारा दोस्त। देखो मैंने तुम्हारे घर इतनी ऊपर आने का इन्तजाम कर ही लिया।”

गिद्ध यह सुन कर चौंक गया और इस चौंकने में वह पार्सल उसके पंजों से छूट गया। वह पार्सल जमीन पर गिर गया और उसके गिरने से कछुए के खोल में सब जगह दरारें पड़ गयीं।

भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि कछुआ इतनी उपर से गिरने के बाद भी मरा नहीं।

उस दिन से कछुए और गिद्ध दोनों ने अपने अपने घर रहने का इरादा कर लिया पर उसके बाद कछुए के खोल की दरारें कभी नहीं भरीं। वे अभी भी उसके खोल पर देखी जा सकती हैं।

18 कृतज्ञ सॉप[82]

एक बार एक आदमी कहीं जा रहा था। रास्ते में उसको दो सॉप लड़ते हुए मिले। वह उनके पास गया तो उसने देखा कि उनमें से एक सॉप की लड़ते लड़ते बहुत ही बुरी हालत हो गयी थी।

उस आदमी को उस घायल सॉप पर बहुत दया आयी सो उसने एक डंडी उठायी और उन दोनों लड़ते हुए सॉपों को अलग अलग कर दिया।

उसने बड़े वाले सॉप को धमकी दी तो वह वहॉ से बड़ी तेज़ी से भाग गया। फिर उसने दूसरे सॉप को डंडी से छू कर देखा कि वह अभी भी ज़िन्दा था कि नहीं। भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि वह अभी भी ज़िन्दा था।

सॉप बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद आदमी। अगर तुम यहॉ न आते तो अब तक तो मैं मर ही गया होता। तुम्हारे इस उपकार के बदले मैं तुमको एक ताकत देता हूँ कि तुम सारे जानवरों की भाषा समझ सको कि वे क्या कह रहे हैं।"

आदमी ने पूछा — "क्या तुम सच कह रहे हो?"

[82] The Grateful Serpent (Tale No 18) – a folktale from Nuer Tribe, Sudan, Eastern Africa.

"हॉ बिल्कुल। तुम वह सब जान जाओगे जो मच्छर चूहा और गाय आदि जानवर बात करेंगे। पर ध्यान रखना कि यह बात तुम किसी से कहना नहीं।"

यह भेंट पा कर वह आदमी बहुत खुश हो गया। दोनों ने एक दूसरे को प्यार से विदा कहा और अपने अपने रास्ते चले गये।

उस शाम सोने से पहले उस आदमी ने अपने सारे दरवाजे और खिड़कियॉ बन्द कर लिये और सोने के लिये बिस्तर पर लेट गया।

कुछ देर बाद एक मच्छर दरवाजे से अन्दर आने की कोशिश करने लगा। जब वहॉ से उसको अन्दर आने का रास्ता नहीं मिला तो वह खिड़की पर गया। पर वहॉ भी उसको अन्दर आने की कोई जगह नहीं मिली तो गुस्से में आ कर वह बहुत ज़ोर से भिनभिनाने लगा।

"सत्यानाश हो इस जगह का। यह घर तो ताबूत की तरह से कस कर बन्द है। मैं इसके अन्दर कैसे घुसूॅ?"

घर के अन्दर आदमी ने जब मच्छर की यह बात सुनी तो उसको हॅसी आ गयी। उसकी पत्नी ने उसकी तरफ देखते हुए पूछा — "अरे तुम क्यों हॅस रहे हो?"

अपनी दूसरी हॅसी को रोकते हुए आदमी बोला — "कुछ नहीं कुछ नहीं।" और फिर वे सो गये।

कुछ देर बाद एक चूहे ने उसके घर में घुसने की कोशिश की। उसने भी घर का दरवाजा और खिड़कियाँ देखीं पर उसको भी वे घुसने के लिये नामुमकिन लगीं।

चूहे ने थोड़ी देर तो सोचा फिर वह सीधा छत की तरफ भाग गया। वहाँ उसको तख्तों के बीच में घर में घुसने की एक छोटी सी जगह मिल गयी सो वह वहाँ से घर में घुस गया।

उसने चीज़[83] के लिये उस आदमी के घर के सारे कमरे छान मारे। उसके लिये उसने इधर चीज़ें गिरायीं उधर चीज़ें गिरायीं पर उसको चीज़ कहीं नहीं मिली।

यह देख कर वह गुस्से में चिल्लाया — "हुँह। सत्यानाश हो इस घर का। यह किस तरह का घर है कि मुझे यहाँ चीज़ का एक ज़रा सा टुकड़ा भी नहीं मिल रहा।"

बिस्तर में लेटे लेटे उस आदमी ने भी यह सुना तो वह बहुत ज़ोर से हँस पड़ा। उसको हँसता सुन कर उसकी पत्नी ने फिर पूछा — "अब क्या हुआ? अब क्यों हँस रहे हो?"

आदमी ने अपने आपको बड़ी मुश्किल से रोकते हुए कहा — "ओह कुछ नहीं, कुछ नहीं। सचमुच में कुछ नहीं।"

---

[83] Cheese is the prcessed Indian Paneer. It is very commom ingredient of most European and American dishes.

रात गुजर गयी और सुबह हो गयी। जैसे वह रोज करता था उसी तरह उस सुबह को भी वह गायों के बाड़े में गया और उनको हरे हरे घास के मैदान में चराने के लिये ले गया।

रास्ते में सब गायें आपस में बात करती जा रही थीं और वह आदमी बड़ी रुचि से उनकी बातें सुनता हुआ चला जा रहा था। उसके बाद उनके दूध दुहने का समय आया तो उसकी पत्नी बैठने के लिये एक स्टूल और दूध दुहने के लिये एक बालटी ले आयी।

उसको देख कर सबसे बड़ी गाय रॅभायी और बोली — "ओ गायों देखो ज़रा, यह स्त्री हमारा दूध चुराने आ गयी।" यह सुन कर वह आदमी फिर ज़ोर से हॅस पड़ा।

इस बार उसकी पत्नी को गुस्सा आ गया — "तुम फिर हॅस रहे हो? क्या बात है कल से तुम हॅसे ही जा रहे हो।"

"नहीं नहीं कोई खास बात नहीं, बस ज़रा यूॅ ही।" पर उसके पास कोई ऐसा बहाना नहीं था जिस पर कोई दूसरा उस पर विश्वास कर लेता।

उसी समय गाय ने फिर से रॅभाना शुरू कर दिया — "नहीं नहीं, आज नहीं। आज मैं अपना दूध अपने बछड़े के लिये रखना चाहती हॅू।" और वह उसकी पत्नी से दूर हट गयी। आदमी ने उसकी बात फिर से समझ ली तो वह फिर हॅस पड़ा।

इस बार पत्नी से रहा नहीं गया तो वह बोली — "तुम क्या सोचते हो कि तुम किसका मजाक उड़ा रहे हो?"

उसने फिर से उसको यह कर शान्त किया — "ओह मेरी प्यारी पत्नी, किसी का नहीं, किसी का नहीं। तुम तो यूँ ही बस... ।"

वह बोली — "कल से तुम एक बेवकूफ की तरह से बरताव कर रहे हो।" और अपना स्टूल और बालटी ले कर वह घर के अन्दर चली गयी।

शाम को वह स्त्री फिर से गायों को दुहने के लिये आयी तो वह बहुत थोड़ा दूध ही दुह पायी सो वह अपने पति से बोली — "देखना ये गायें मुझे दूध ही नहीं दुहने दे रहीं।"

गाय बोली — "क्या तुम यह दूध मेरे बछड़े को पिलाने के लिये ले जा रही हो?" यह सुन कर तो आदमी हॅसते हॅसते दोहरा ही हो गया।

पत्नी बोली — "यह क्या कोई हॅसने की बात है जो तुम इतनी ज़ोर से हॅस रहे हो? तुम मेरा मजाक बना रहे हो। तुम मेरी बिल्कुल भी परवाह नहीं करते।"

एक बार फिर गाय रॅभायी — "हो सकता है कि उसके पास इसकी कोई वजह हो।"

पति फिर हॅस पड़ा। उससे अपनी हॅसी रोकी ही नहीं गयी।

पत्नी बोली — "अगर तुम्हारा यही ढंग रहेगा तो मैं गॉव के अक्लमन्द लोगों के पास जाती हूँ और उनसे कहती हूँ कि वे रात को हमारे घर आयें। मैं उनको अपनी समस्या बताऊॅगी और उनसे तलाक की प्रार्थना करूॅगी।

अब पति के पास कुछ कहने को नहीं था। वह फिर से बहुत ज़ोर से हँस पड़ा कि शायद हँस कर वह अपनी पत्नी को शान्त कर सके पर ऐसा नहीं हुआ। वह शान्त नहीं हुई।

शाम को गाँव के बड़े लोग आये और आग के चारों तरफ बैठ कर उस स्त्री से बोले – "तुमने हमें यहाँ क्यों बुलाया है?"

"मेरा पति मेरे ऊपर बिना किसी वजह के हँसता रहता है। हम जब सोने जाते हैं तभी भी यह हँसता है। जब यह जानवर चराने ले जाता है तभी भी हँसता है जब मैं दूध दुहती हूँ यह तभी भी हँसता है। मुझे अच्छा नहीं लगता कि इस तरह से कोई मेरा मजाक बनाये।"

बड़े लोगों ने एक दूसरे की तरफ देखा और हाँ में सिर हिलाया कि हाँ यह स्त्री कह तो ठीक रही है। उन्होंने उसके पति से पूछा – "क्यों भाई क्या बात है? हमें बताओ कि तुम अपनी पत्नी पर हर समय क्यों हँसते रहते हो?"

पति बोला – "नहीं मैं उस पर नहीं हँसता।"

"तो फिर तुम किस पर हँसते हो?"

"मुझे यह बताने की इजाज़त नहीं है।"

"तुम हमारा बेवकूफ नहीं बना सकते। और इसमें न बताने की इजाज़त की क्या बात है। बताओ तुम किस पर हँसते हो।"

"अगर मैं थोड़े में कहूँ तो मैं वह सब समझता हूँ जो कुछ भी ये जानवर आपस में बात करते हैं।"

इस पर उन बड़े आदमियों ने फिर एक दूसरे की तरफ देखा और ना में सिर हिलाया। मामला बिल्कुल साफ था कि यह आदमी पागल हो गया था। इसके बाद वे सब वहाँ से एक दूसरे कमरे में चले गये और एक नतीजे पर पहुँचे।

उसके बाद वे सब वापस लौटे और बोले — "ओ स्त्री, आज से तुम आजाद हो। तुमको आज से इस आदमी से तलाक दिया जाता है क्योंकि तुम्हारा पति पागल हो गया है।"

पत्नी ने यह सुन कर रोना शुरू कर दिया और पति ने उसे फिर से समझाना शुरू किया कि यह सब क्या था। पर बड़े लोगों का फैसला किसी तरह से नहीं टाला जा सका। और अब उनका दिमाग भी बदला नहीं जा सकता था।

इस तरह से यह शादी खत्म हो गयी। गाँव के लोगों ने उस दुखी जोड़े से सहानुभूति प्रगट की और पति अपनी पत्नी से बचने के लिये वह गाँव छोड़ कर एक अकेली जगह चला गया।

वह वहाँ कुछ दिन रहता रहा कि उसको वही साँप फिर से मिल गया जिसको उसने बचाया था।

साँप बोला — "हलो आदमी, तुमसे फिर से मिल कर बहुत खुशी हुई। पर तुम यहाँ इस जगह क्या कर रहे हो?"

आदमी बोला — "काश तुम जानते कि मेरे साथ क्या हुआ है। मुझे तुम्हारी दी हुई भेंट अपने गाँव वालों को बतानी पड़ी और उन सबने सोचा कि मैं पागल हो गया हूँ।

मेरी पत्नी मुझे छोड़ कर चली गयी, मुझे अपना गाँव भी छोड़ना पड़ा। इस बात को कोई नहीं मान सकता कि तुम मेरे लिये खुशकिस्मती ले कर आये।"

साँप बोला — "तुम आदमी लोग भी कितने बेवकूफ होते हो। तुम यह तो देखते नहीं कि क्या सच है। तुम लोगों को तो बस जो कुछ ऊपर से दिखायी देता है तुम लोग उसी को सच समझ लेते हो।

सुनो। जो लोग तुमको पागल कह रहे है वे खुद ही सबसे बड़े पागल हैं। उनके बारे में सोचना छोड़ो। तुम एक ऐसी पत्नी से बच गये जो तुमको समझ ही नहीं सकी। अच्छा हुआ कि तुम अपने बेवकूफ साथियों से भी बच गये।

तुमसे ज़्यादा किस्मत वाला और कौन होगा। खुश रहो और देवता तुम्हारी रक्षा करें।"

आदमी ने सोचा "यह तो ठीक है। यह साँप ठीक कह रहा है। अब मैं एक आजाद और खुशकिस्मत आदमी हूँ।" और खुशी से सीटी बजाते हुए वह आजाद चिड़ियों की बातचीत सुनने के लिये एक मक्का के खेत की तरफ चल दिया।

Classic Books of African Folktales in Hindi
8 Books

1901 **Zanzibar Tales.**
No 1 by George W Bateman. 10 tales. The 1st African Folktale book.
Translated in Hindi by Sushma Gupta. 2019

1910 **Folktales From Southern Nigeria.**
No 15 By Elphinstone Dayrell. London: Longman Green & Co. 40 tales.
Translated in Hindi by Sushma Gupta. 2019

1917 **West African Folk-Tales**
No 20 By William H Barker and Cecilia Sinclair. Lagos: Bookshop. 35 tales.
Translated in Hindi by Sushma Gupta. 2019

1947 **The Cow Tail Switch and Other West African Stories.**
No 14 By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt. 143 p.
Translated in Hindi by Sushma Gupta. 2019

1962 **Fourteen Hundred Cowries and Other stories.**
No 8 By Abayomi Fuja. Ibadan: OUP. 31 tales
Translated in Hindi by Sushma Gupta. 2019

1998 **African Folktales.**
No 12 By Alessandro Ceni. 18 tales.
Translated in Hindi by Sushma Gupta. 2019

2001 **Orphan Girl and Other Stories.**
No 13 By Buchi Offodile. 41 tales
Translated in Hindi by Sushma Gupta. 2019

2002 **Nelson Mandela's Favorite African Tales**.
No 7 ed Nelson Mandela. 32 tales
Translated in Hindi by Sushma Gupta. 2019

List of stories of all these books is available at :
http://sushmajee.com/folktales/books-Old/index-old-books.htm

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़ हिन्दी में —

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. 1901. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **1901**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**

2. Serbian Folk-lore : popular tales
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874**. 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). Out of 26 tales it contains 20 folktales and some other material.

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal. By Rev Lal Behari Dey. **1889.** 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारी डे। **1889**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। जनवरी **2019**

5. Russian Folk-Tales. By Alexander Nikolayevich Afanasief. 1889. 64 tales.
Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **1916**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian. By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **1903**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales. 2002. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2002**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**

8. Fourteen Hundred Cowries. By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियॉ – फूजा अबायोमी। **1962**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**

9. Il Pentamerone. By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales. Only 32 tales are available.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **1634**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**

10. Tales of the Punjab. By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **1894**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**

11. Folk-tales of Kashmir. By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **1887**। हिन्दी अनुवाद — सुषमा गुप्ता। जून **2019**

12. African Folktales. By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998.** 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **1998**। हिन्दी अनुवाद — सुषमा गुप्ता। जून **2019**

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on June, 2019
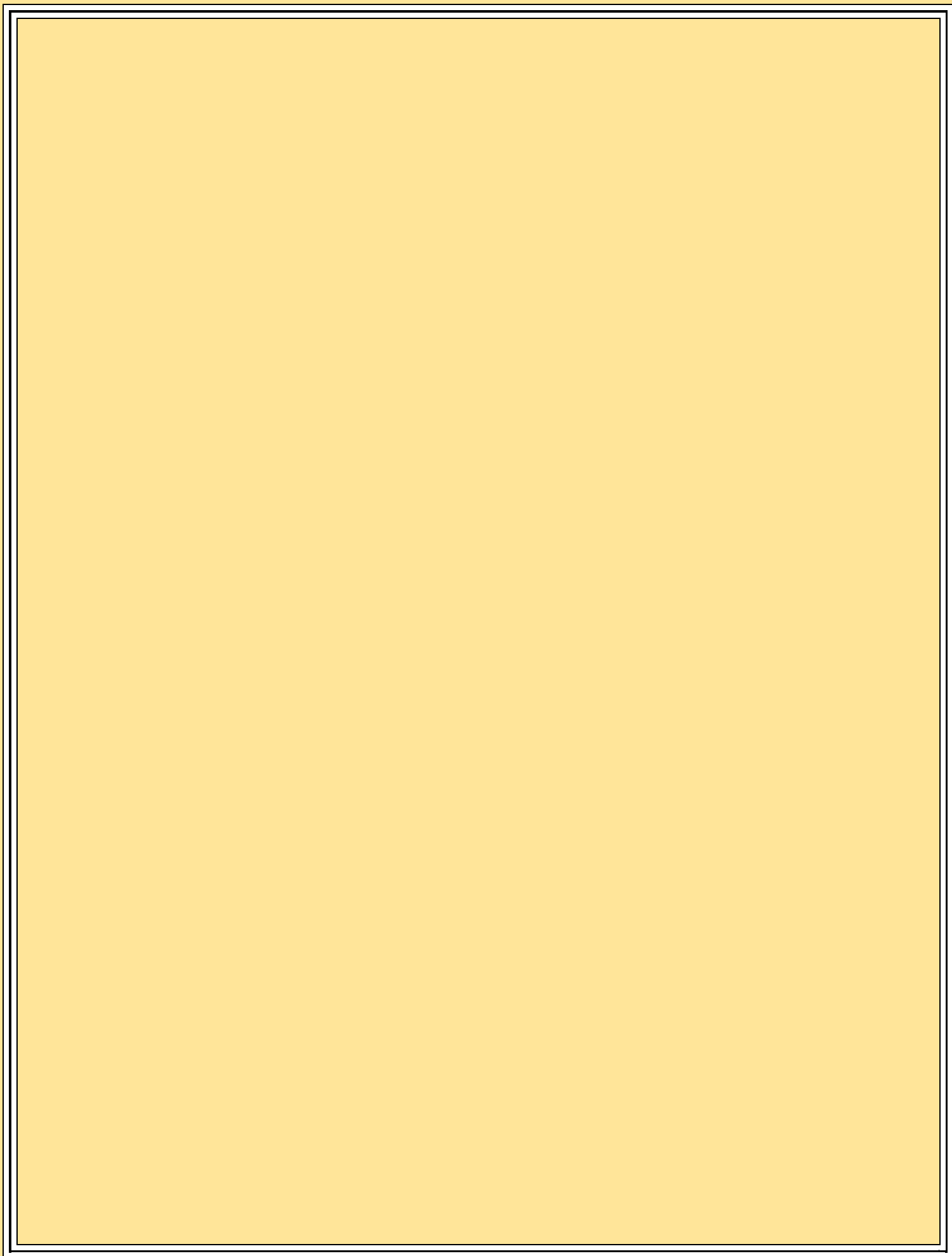
लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2018** तक इनकी **2000** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
जून **2019**